आर.एन.आई. नं. एम.ए.आर./2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2024–26
"चतुर्वेदी चन्द्रिका" फरवरी 2024

स्थापना – माघ/शुक्ल पूर्णिमा सम्वत् 1947 सन् 1890

प्रकाशन : 03 तारीख
पृष्ठ संख्या : 48
मूल्य : 20/–

चतुर्वेदी चन्द्रिका

वर्ष –25 | अंक–02 | माघ/फागुन मास | फरवरी 2024

बसंत पंचमी 2024

DICAA के सौजन्य से

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का मुखपत्र

श्री अश्वनी कुमार चतुर्वेदी

(पूर्व प्रोप्राइटर – M/s SUSHANTI FILLING STATION)

समय जिंदगी का कम होगा कहा पता था,
विदाई आपकी अनपेक्षित होगी वो कहा पता था,
हर जगह खुशबू फैलाकर, स्मृति सबके दिल में रख गए,
ईश्वर आपकी दिव्य आत्मा को शांति प्रदान करे यही प्रार्थना है।
द्वितीय पुण्यतिथि पर आपको सादर नमन

–: शोकाकुल :–

अर्चना चतुर्वेदी

(प्रोप्राइटर – M/s SUSHANTI FILLING STATION
Dwarka New Delhi)
मो. : 9919065101, आयुष चतुर्वेदी (पुत्र)

(र.क्र. 2024/2094)

(र.क्र. 2024/2113)

Nirmala Construction
COMPANY

निर्मला कंस्ट्रक्शन कंपनी
गवर्नमेंट रजिस्टर्ड् कांट्रैक्टर

Akshay Choubey
Proprieter

B.E. (Civil Engineering) – Priyadarshini College, Nagpur
M.Tech - Birla Institute of Technology, Mesra (Ranchi)

Bazariya Ward No.1, Jawalamai Chouraha, Damoh(M.P.) -470661

+91 8770955872
+91 8602266219

- **किसी भी प्रकार की बिल्डिंग, घर, मॉल, कॉम्प्लेक्स, कालोनी के कंस्ट्रक्शन के लिए सेवा का अवसर प्रदान करे। तथा, कंस्ट्रक्शन मशीनर, जेसीबी, फियोरी, पोकलेन, के लिए संपर्क करे!**
- **हमेशा स्नेह और सहयोग देने के लिए माननीय सतीश चतुर्वेदी और आभा चतुर्वेदी (नागपुर) को विशेष धन्यवाद !**

Private Construction Project

Government Construction Project

दमोह परिवार - स्व. कैलाश नाथ चौबे(बगियावाले) , पुत्र - विनोद, देवेंद्र, गजेंद्र, राजेंद्र,स्व. नीरज चौबे।
भाई - तनय, सार्थक, विभोर, सुयोग, यश चौबे।

(र.क्र. 2023/1425) 6/6

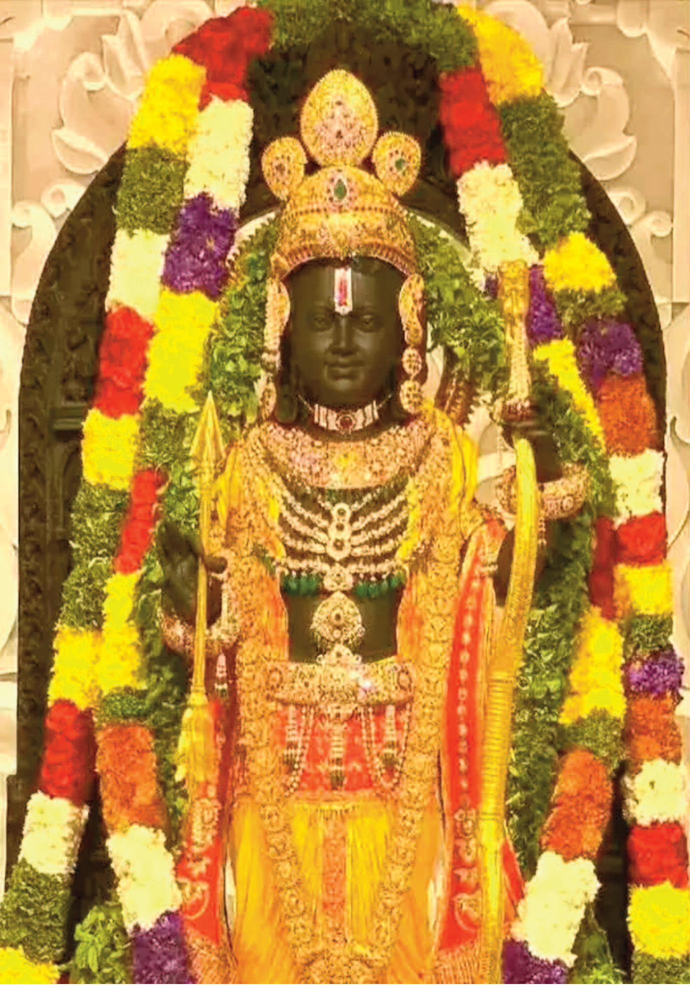

मेरे राम जी आ गए....

22 जनवरी 2024

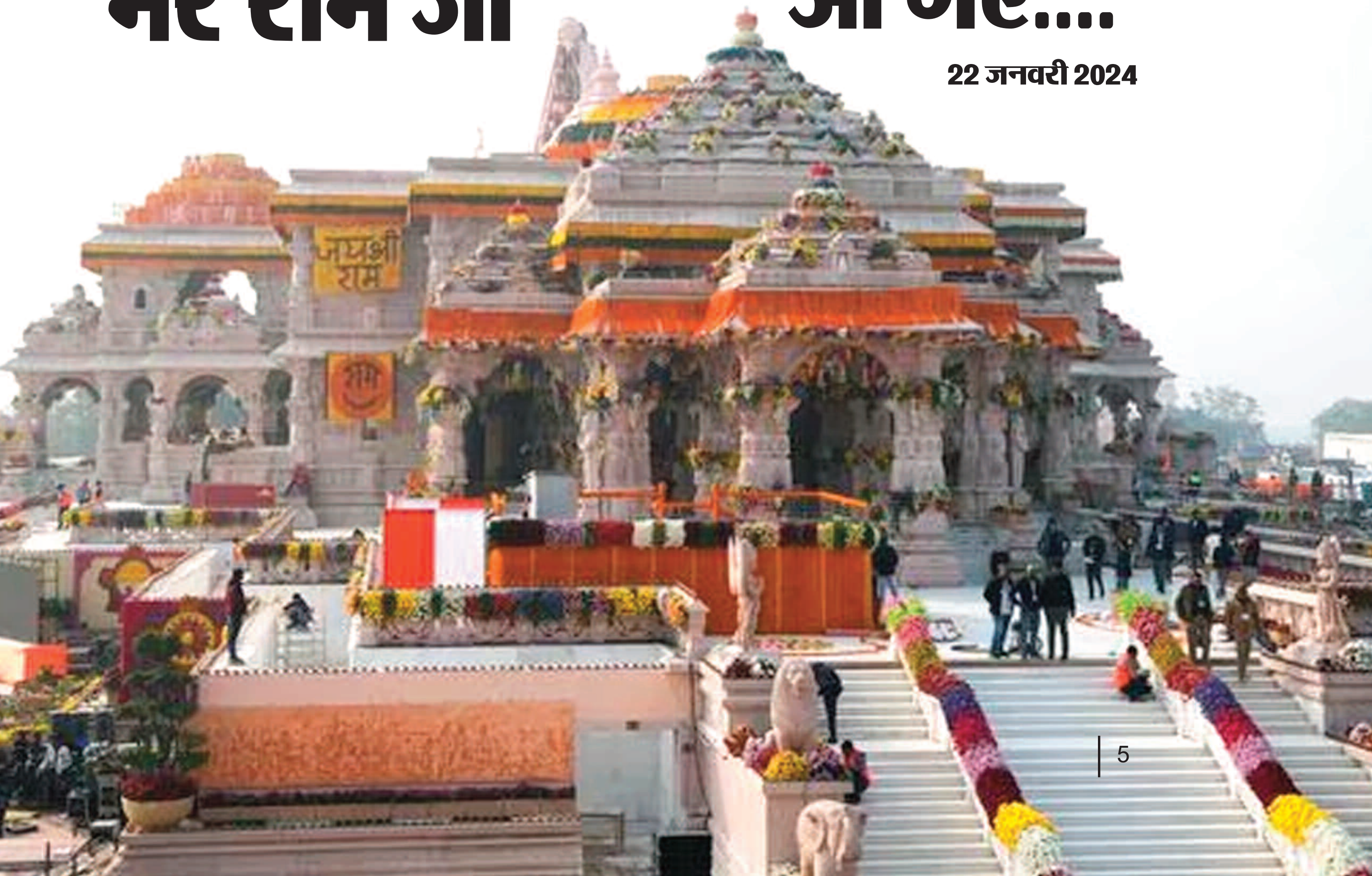

अंक 02
फरवरी 2024, वर्ष - 25

सभापति
डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
president@chaturvedimahasabha.in

सचिव
श्री मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी
मोबा. 098711-70559

कोषाध्यक्ष
श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी
मोबा. 09868875645

संपादक सलाहकार मंडल
डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा
पूर्व संपादक
श्री दिलीप सिकन्दरपुरिया, लखनऊ
श्रीमती चित्रा दिलीप चतुर्वेदी, भोपाल

संपादक
शशांक चतुर्वेदी
पत्र व्यवहार का पता:
'चतुर्वेदी चंद्रिका', ई-8/जी2/255
गुलमोहर कॉलोनी, भोपाल
(मध्यप्रदेश)
मोबा. 9826086879
ई- मेल :
sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com
वेबसाइट : www.chaturvedimahasabha.in

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा भोपाल अदालत में किया जायेगा।

चतुर्वेदी चन्द्रिका

अपनों से मन की बात	7
संपादकीय	8
श्री के पी मोहिले एवं श्री बैकुंठ्नाथ चतुर्वेदी	9
पुरानी स्मृतियों का तूफ़ान	14
दामोदर इंटर कॉलेज की पृष्ठभूमि एवं इतिहास	15
विद्यालय : विकास के आधार स्तम्भ	17
स्मृतियों का संतुलित संयोजन दमोदर कॉलेज होलीपुरा	18
गुरु बिन ज्ञान न उपजे	20
दामोदर इंटर कॉलेज, होलीपुरा कुछ अनकही, कुछ अनसुनी	23
दामोदर इंटर कॉलेज और होलीपुरा में बीता समय भुलाना है असंभव - कपूर साहब	24
दामोदर इंटर कालेज, होलीपुरा अतीत के झरोखे से	26
"दामोदर इंटरकॉलेज के 90 वर्ष पूर्ण"	28
होलीपुरा गाँव का गौरवशाली पहचान....	29
भदावर का शान्ति निकेतन-दामोदर इण्टर कालेज	31
दामोदर इंटर कॉलेज की स्थापना दिवस के अवसर पर	32
बसंत पंचमी पर्व (प्राकृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक महत्व)	34
महासभा, चुनाव और समाज पर उसका प्रभाव	41
चिकित्सा बीमा योजना	42
शाखा समाचार	43
समाज समाचार	44
बिछड़े स्वजन	44

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
: Account No. :
1006238340
: IFSC Code :
CBIN0283533
: Branch :
Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

SHREE MATHUR CHATURVED
10292296@cbin
BHIM UPI

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा आजीवन सदस्यता शुल्क
1000 + 501 = 1501/-
महासभा सत्र + पत्रिका वार्षिक सदस्यता शुल्क-
101+ 251 = 352/-

प्रकाशक : मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक शशांक चतुर्वेदी

सभी सदस्यों को पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

अपनों से मन की बात

● डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
Email : president@chaturvedimahasabha.in

श्रीराम मंदिर हमारी संस्कृति और सनातन आस्था का प्रतीक है। यह सनातन समाज के संकल्प, धैर्य और संघर्ष का ही परिणाम है कि आज प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में श्रीराम मंदिर निर्माण का सपना साकार हुआ है। राम हमारे देश के प्राण हैं,भगवान विष्णु आत्मा हैं। देश के समाज की लम्बी संविधानिक लड़ाई के उपरांत संविधान के अंतर्गत विजय है।

जिस तरह ईसाई धर्म में बेटिकन सिटी,मुस्लिम में मक्का पूज्य है। उसी प्रकार के सनातन धर्म में अयोध्या का स्थान हैं। यह उमंग और उत्सव का अवसर है, समाज उल्लास के साथ खुशियां मना रहा है। आज सारा देश राम आगमन पर पुनः दीपावली मना रहा है।

आप दिनाँक 22 जनवरी 2024 को सभी को अयोध्या में अपने जन्म स्थान पर रामलला विराजमान की प्राण प्रतिष्ठा की हार्दिक बधाई ।। जय श्री राम।।

मेरी झोपड़ी के द्वार खुल जाएंगे,
मेरे सारे बिगड़े कार्य संवर जाएंगे,
राम आएंगे। ।

जन कल्याण की भावना से रहित जीवन मृत्यु के समान है। स्वयं के विकास और कल्याण के साथ साथ जन कल्याण और सामाजिक विकास की भावना जिस दिन संगठन के प्रत्येक सदस्य के ह्रदय में जाग जायेगी। उसी दिन हम दूसरों के लिए प्रेणना स्त्रोत बन जाएंगे और समाज मे अपने आप को सम्मानजनक रूप से स्थापित करने मे सफल होंगे।

हम कितने योग्य है, हमारे भीतर क्या योग्यता है, इसके प्रदर्शन की आवश्यकता क्यों और कब होती है?एक विचारणीय बिंदु है। जब कभी भी हमारी योग्यता पर प्रश्नचिन्ह लगता है अथवा संदेह किया जाता है, तो निश्चित ही सम्पूर्ण समाज के सामने अपनी योग्यता को प्रदर्शित करना अनिवार्य हो जाता है, क्योंकि जीवन का एक सत्य यह भी कि मंच पर अभिनीत कलाकार दर्शकों द्वारा सराहा जाता है और पर्दे के पीछे के कलाकार की प्रतिभा कहीं अंधकार में विलुप्त हो जाती है। वर्तमान परिवेश में यदि हम योग्य है, तो हमारी योग्यता का प्रदर्शन निश्चित ही हमें सर्वस्व सम्मान दिलाने में सहायक होता है, अन्यथा हमारा मूल्य मात्र वे समझते है, जिन्हें हमारी योग्यता का ज्ञान होता है।एक कहावत है,जो दिखता है वही बिकता है। जीवन में सदैव अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन यदि हम प्रतिभावान है, वर्तमान में अनिवार्य है।

सुखी जीवन जीने का सिर्फ एक ही रास्ता है, वह है, अभाव की तरफ दृष्टि ना डालना। आज हमारी स्थिति यह है जो हमें प्राप्त है, उसका आनंद तो लेते नहीं, वरन जो प्राप्त नहीं है उसका चिन्तन करके जीवन को शोकमय कर लेते हैं। दुःख का मूल कारण हमारी आवश्कताएं नहीं हमारी इच्छाएं हैं। हमारी आवश्यकताएं तो कभी पूर्ण भी हो सकती हैं मगर इच्छाएं नहीं। इच्छाएं कभी पूरी नहीं हो सकतीं और ना ही किसी की हुईं आज तक। एक इच्छा पूरी होती है तभी दूसरी खड़ी हो जाती है। दुःख का मूल हमारी आशा ही हैं। हमें संसार में कोई दुखी नहीं कर सकता, हमारी अपेक्षाएं ही हमे रुलाती हैं। अति इच्छा रखने वाले और असंतोषी हमेशा दुखी ही रहते हैं। हमारे स्वयं के लिए असफल शब्द की सार्थकता और निरर्थकता हम पर ही निर्भर करती है। यदि हम स्वयं को असफल ऐसा स्वीकार कर लेते है, तो निश्चित ही यह हमारे असफल होने को सार्थक बनाने का प्रमाण प्रस्तुत करने का कारक है। इसके विपरीत यदि हमारे असीम प्रयास सफलता के लिए अनवरत जारी रहते है, तो निःसंदेह हमें एक दिन सफलता अवश्य ही प्राप्त होती है, जो इस असफल शब्द को निरर्थक बनाती है। जीवन में स्वयं को कभी भी किसी भी क्षेत्र में असफल न समझे, हमारे निरंतर प्रयासों से एक दिन सफलता अवश्य ही प्राप्त होती है। असफल वे ही होते है, जिनके प्रयासों में कमी होती है।

संपादकीय

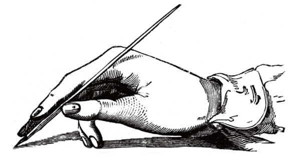

मंगल भवन, अमंगल हारी
द्रवहु सु दशरथ, अजिर बिहारी

आप सभी को दिनाँक 22 जनवरी 2024 हुए श्री राम मंदिर,अयोध्या के प्राण – प्रतिष्ठा समारोह की शुभकामनाएं व मंगल बधाई। जय राम जी की।।

प्रभु श्री राम जगत का कल्याण करें।

सब सुखी हों, निरोगी हों, प्रेम और सद्भाव व्याप्त हो, ऐसी प्रार्थना करते हैं ।

जय राम जी की
दुनिया चले न, श्री राम के बिना।
राम जी चले न, हनुमान के बिना।।
सभी देश वासियों के लिएभावुक, निःशब्द,भावनाओं से ओतप्रोत अविस्मरणीय पल।
सजा दो घर को मंदिर सा,
मेरे गर राम आये हैं।
लगे कुटिया में हलचल सी,
मेरे घर राम आये हैं।
त्याग,धैर्य, सौहार्द्र व समर्पण का अलौलिक अविस्मरणीय व अनोखा, संगम है भगवान राम का व्यक्तित्व।
मेरे मन में राम।
तन में राम।
रोम रोम में राम रे।
राम को भज ले,
राम को जप ले
छोड़ जगत के काम रे।

भदावर क्षेत्र में नालंदा विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त चतुर्वेदी समाज के द्वारा स्थापित शिक्षण संस्थान दामोदर इंटर कॉलेज,होलीपुरा के 90 वर्ष पूर्ण होने पर समाज के पूर्व छात्रों द्वारा अपने अनुभव चतुर्वेदी चनद्रिका पत्रिका के माध्यम से हमारे साथ साझा किया जो आप सभी के सामने प्रस्तुत हैं। 90 साल का समय अपने आप में एक कीर्तिमान के समान होता है। अतुल्यनीय अमिट, अविस्मरणीय सेवा भाव की परंपरा युवा एक लंबा अनुभव, ऐसे और भी सुयोग्य बनाता है।

सूचना

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक आगामी प्रातः ११ बजे से 28 जनवरी 2024 कार्यक्रम हॉल, विवेक विहार (AWHO) सेक्टर 82, नोएडा दिल्ली (एन.सी.आर.) में आहूत की जाएगी। समाज हित में योगदान देने हेतु वर्तमान कार्यकारिणी के सभी सदस्य आमंत्रित है।

विस्तृत जानकारी आपको शीघ्र भेजी जाएगी। अन्य किसी सहयोग हेतु आप मुझसे संपर्क कर सकते हैं।

सादर पालागन
मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी, मंत्री
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा, मो. 98711 70559

श्री के पी मोहिले एवं श्री बैकुंठ्नाथ चतुर्वेदी

श्री के पी मोहिले पहले प्राचार्य थे जिन्होंने कॉलेज के पाठ्यक्रम को मज़बूत आधार प्रदान किया। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि केवल शब्द ज्ञान ही नहीं बल्कि छात्रों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास आवश्यक है। कॉलेज का स्वर्णिम काल श्री के पी मोहिले के कालज प्राचार्य काल में ही रहा जो भी आगंतुक या निरीक्षक कॉलेज आते थे यहाँ की गतिविधियाँ देख कर प्रशंसा ही किया करते थे। उनमें से कुछ ने तो इसकी तुलना इंग्लैंड के ETON स्कूलों से की तो कुछ अन्य ने कहा कि यह कॉलेज जर्मनी के Realshules के स्तर का है।

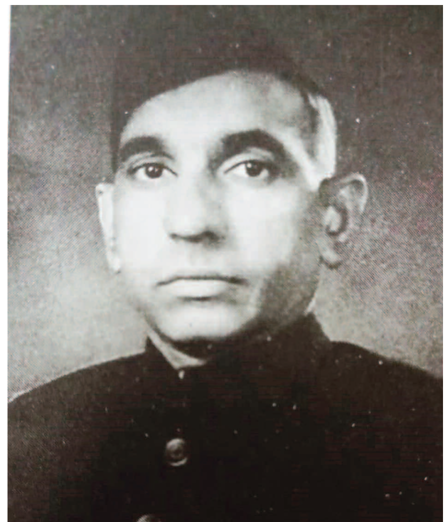

श्री केपी मोहिले

एक स्कूल निरीक्षक ने तो दामोदर इंटर कॉलेज को 'आगरा जिले का शांति निकेतन ' कहा। श्री के पी मोहिले वर्ष 1946 में इलाहबाद विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार नियुक्त हुए और होलीपुरा से इलाहबाद हबाद रहने लगे। श्री बैकुंठ्नाथ चतुर्वेदी जी ने कॉलेज की स्वस्थ परम्पराओं को जीवित रखा।

पाठ्यक्रम के अतरिक्त आपके कार्यकाल में अन्य गतिविधियों में और बढ़ोतरी देखने को आई। उनके कार्यकाल में हुए रजत जयंती समारोह आज तक यादगार माना जाता है। उनका प्रशासनिक कौशल कॉलेज की सभी गतिविधियों में झलकता था और साथ ही रजत जयंती समारोह में भी उनकी यह विशेषता कार्यक्रम को यादगार बनाने में सहायक हुई। 1961 में आप शिक्षा मंत्रालय में असिस्टेंट डायरेक्टर के पद पर चयनित होने के बाद दिल्ली चले गए। वे आज भी होलीपुरा कॉलेज में बिताये अपने समय को अपने जीवन का स्वर्णिम काल कहते हैं।

श्री बैकुंठनाथ जी

(र.क्र.2111)

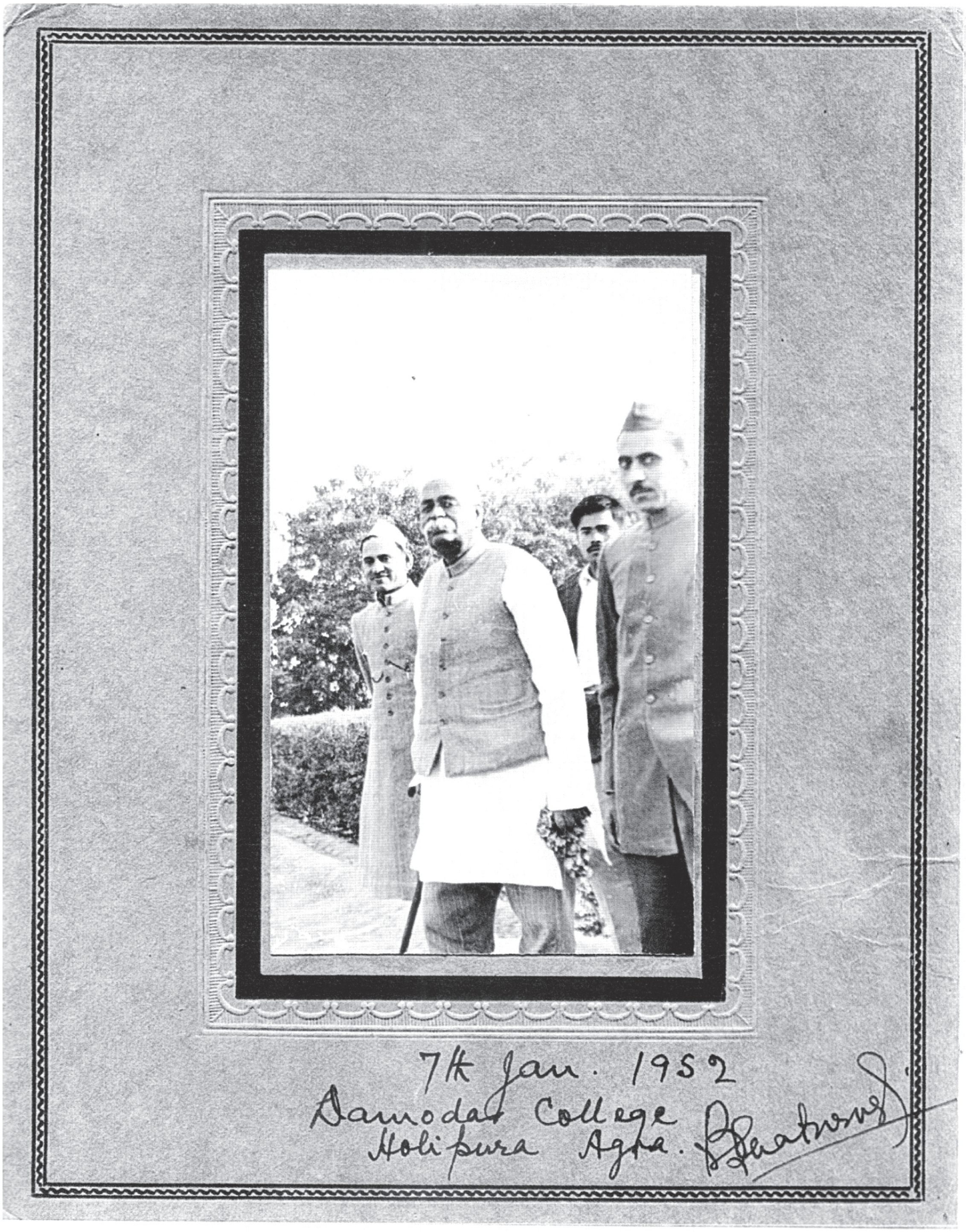

Sh. G.B. Pant Honble' Home Minister on a visit to college

(र.क्र.2111)

College Stage

Chief guest arriving with the College Management Committee

(र.क्र.2111)

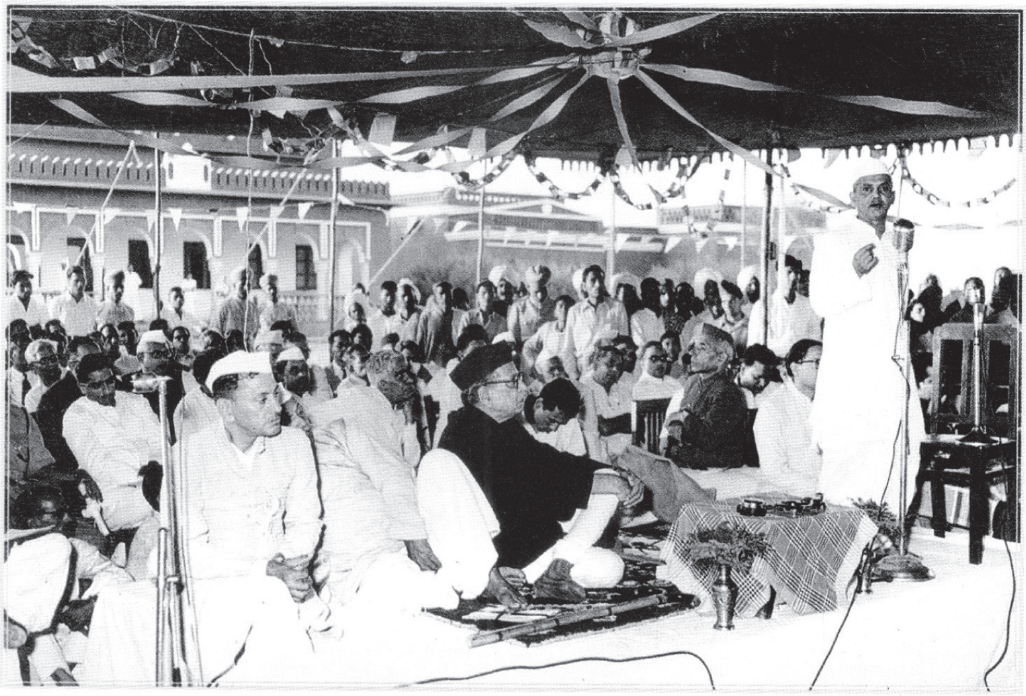

Sh. Lal Bahadur Shastri adressing the gathering

At the time of departure Shri Lal Bahadur Shastri

(र.क्र.2111)

शिक्षा का परम लक्ष्यअ ज्योुति की भाँति स्वायं प्रकाशित होना और दूसरों को प्रकाशित करना है। अतः छात्रों को अपने ग्रीष्मा वकाश में उपलब्ध ज्ञान को दूसरों के लिए वितीर्ण करना चाहिए। समाज सेवा चाहे वह बौद्धिक हो अथवा शारीरिक, सामाजिक चेतना में उदारता और नम्रता का आविर्भाव करती है। बौद्धिक सेवा के साथ साथ शारीरिक सेवा का एक अनिवार्य संगठन है - एक के बिना दूसरा अपूर्ण है। अतएव दोनों का परिचरण नितांत आवश्यहक है। ''

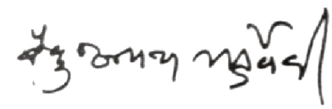

With Sh. Chandra Bhan Gupta (CM of Uttar Pradesh) in college

(र.क्र. 2111)

पुरानी स्मृतियों का तूफ़ान

- **डॉ. सतीश चतुर्वेदी**, भूतपूर्व केबिनेट मंत्री, महाराष्ट्र शासन

दामोदर इंटर कॉलेज होलीपुरा के ९० वर्ष पूर्ण होने पर समारोह में भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। इस कॉलेज का नाम सुनते ही पुरानी स्मृतियों का तूफ़ान जाग्रत हो जाता है। आगरा ज़िले से ६५ किलोमीटर दूर यमुना के बीहड़ में श्री होली सिंह बाबा ने ४६० वर्ष पूर्व होलीपूरा गाँव को बसाया था। १९३२ में स्वर्गीय दामोदर दास चतुर्वेदी जी की स्मृति में कॉलेज का निर्माण किया गया। मेरी समझ है कि पिछडे हुए दस्यु प्रभावित बीहडी इलाके में विद्या मंदिर बनाकर उन्होंने हज़ारों छात्रों का जीवन व भविष्य बनाया जो कि भदावर क्षेत्र की उन्नति का मील का पत्थर बना।

मैने दामोदर कॉलेज मे १९५५ से १९६३ तक विद्यार्थी के रूप में मेरे भविष्य की व शिक्षा की सुरुआत की। १० –११ वर्ष की उम्र से इस कॉलेज मे छात्र के रूप में मैं सपना देखता था व सोचा करता था की होलीपूरा के सपूत व समाज के गौरव स्व. दामोदर दास जी ke parivar ने कॉलेज का निर्माण कर जिस दूरदर्शिता व समाज परिवर्तन की सोच का परिचय दिया वै मेरे आदर्श पुरुष व हिरो है। और मुझे जीवन में यदि अवसर मिलेगा तो स्कूल का निर्माण करने का प्रयत्न करूंगा।

इसी महत्वाकांक्षा के साथ मुझे महाराष्ट्र में जब विधायक व मंत्री बनने का मौका मिला तो मेरे बचपने का स्वप्न साकार करने की प्रबल इच्छा जाग्रत हुई । होली बाबा व हाथी बाबा के आशीर्वाद से महाराष्ट्र मे लोकमान्य तिलक जनकल्याण शिक्षण संस्था का निर्माण किया गया। सभी साथीयों के सहयोग से २८ शैक्षणिक संस्थान बना कर स्वर्गीय दामोदर दास जी को सही श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

मेरे जीवन में जो भी उपलब्धि हुई है उसकी नींव मेरे पिता झाऊलाल जी और माता भगवती देवी के आशीर्वाद व संस्कारो की देन हैं। साथ ही साथ दामोदर कॉलेज के तत्कालीन प्राचार्य श्री वैकुंठनाथ चतुर्वेदी जी का अनुशासन व नेतृत्व ने मेरे व्यक्तिव को तैयार करने में सहयोग दिया। दामोदर कॉलेज के अनुभवी व अत्यंत योग्य शिक्षक श्री अमर नाथ जी टंडन, कपूर साहेब, कुंज बिहारीलाल शास्त्री, रमेश चंद्र चतुर्वेदी, नवल सिंहजी, जसवंत सिंहजी व बाबुलाल वर्मा कि यादें आज भी मस्तिष्क में ताजी है। उन्होने गाव के एक बालक को भावी जीवन के लिये बडे परिश्रम व आत्मीयता से तैयार किया। ꣻहर पत्थर की तकदीर बदल सकती हैं, शर्त यह है कि सलीखे से तराशा जाये। मेरे जीवन के इन आधार स्तंभो को जितना सराहूँ उतना कम हैं। मेरे ऊपर स्वर्गीय दामोदर दास जी का व दामोदर कॉलेज का ऋण हैं। मेरे भावी जीवन में मेरा हमेशा प्रयास रहेगा कि मेरा दामोदर कॉलेज ऊंचाईयों पर जाये और आगे प्रगति करे तथा मै उसका साक्षीदार व भागीदार बनूँ।

(र.क्र. 2111)

दामोदर इंटर कॉलेज की पृष्ठभूमि एवं इतिहास

- धनंजय चतुर्वेदी (होलीपुरा/इंदौर)

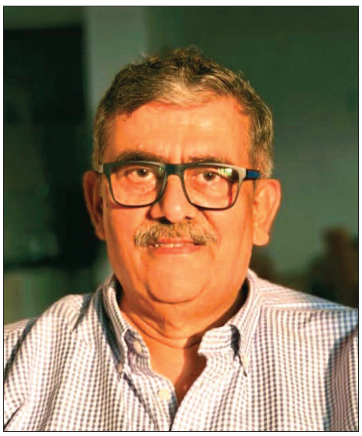

दामोदर इंटर कॉलेज की स्थापना वर्ष 1932 में दामोदर चौबे के भतीजों द्वारा दामोदर मेमोरियल हाई स्कूल के रूप में उनकी याद में की गई थी। श्री दामोदर चौबे पहली बार 1880 के दशक में बोअर युद्ध के दौरान कलकत्ता चले गए थे। जहां उन्होंने सरकारी प्रतिभूतियों में काम करना शुरू किया। बाद में उनके भतीजे श्री हुकुम चंद चौबे और अगले वर्ष श्री रघुवर दयाल चौबे और पुरुषोत्तम चौबे भी उनके साथ जुड़ गए। बोअर युद्ध के अंत तक सभी भतीजे कलकत्ता में उनके साथ शामिल हो गए थे।. उन्होंने अपना ब्रोकिंग व्यवसाय जारी रखा। बाद में उन्होंने दामोदर चौबे एंड कंपनी के नाम और शैली में अपने व्यवसाय को औपचारिक रूप दिया। श्री दामोदर चौबे की मृत्यु 1920 में हुई और हुकुम चंद जी की भी अल्पायु में ही मृत्यु हो गई। इसके परिणामस्वरूप रघुवर दयाल जी और पुरुषोत्तम चौबे ने कलकत्ता में व्यवसाय चलाने की जिम्मेदारियों को उठाया। दोनों भाइयों ने व्यवसाय को दुर्गम ऊंचाइयों पर पहुंचाया और दामोदर चौबे एंड कंपनी को कलकत्ता स्टॉक एक्सचेंज का एक मजबूत स्तंभ बना दिया। उन्होंने जूट और सरकारी प्रतिभूतियों की पहले की ब्रोकिंग से शेयर, सोना और अन्य धातुओं के लिए व्यवसायों में विविधता लाई।

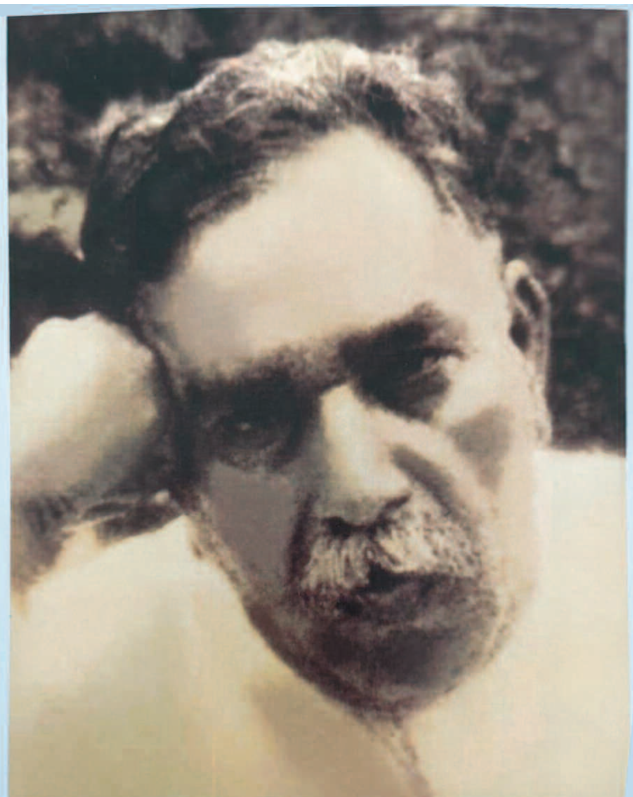

Late Raghuvar Dayal Chaturvedi

(र.क्र. 2111)

Late Shri Purushottam Das Choubey

जब महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के लिए धन जुटाने के लिए कलकत्ता आए, तो उन्होंने दामोदर चौबे एंड कंपनी को कलकत्ता से पहले दाता के रूप में चुना। पुरुषोत्तम चौबे और रघुवर दयाल चौबे महामना पंडित मदन मोहन मालवीय से प्रभावित थे।

उन्होंने परिवार के घर का दौरा किया और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के लिए योगदान का अनुरोध किया। पुरुषोत्तन दास जी ने तुरंत एक ब्लैंक चेक सौंप दिया और उनसे अनुरोध किया कि वह किसी भी राशि को भरें, जो उन्हें उचित लगे, जो उन्होंने बाद में किया। पुरुषोत्तम दास जी से सवाल किया गया कि उन्होंने ब्लैंक चेक क्यों जारी किया? उनका तुरंत जवाब था , एक ब्लैंक चेक से कम कुछ भी महान परोपकारी महामना मदन मोहन मालवीय का अपमान होता।

पुरुषोत्तम चौबे ने आगे कहा, मैं अपने परिवार के घर पर इस तरह के नोबेल आदमी की मेजबानी करने के लिए खुद को भाग्यशाली मानता हूं। इस घटना ने इस संस्था का विचार बोया। महामना पंडित मदन मोहन मालवीय के पदचिन्हों पर चलते हुए, जिन्हें रघुवर दयाल जी और पुरुषोत्तम चौबे पूज्य मानते थे, भदावर क्षेत्र के लिए होलीपुरा में स्वर्गीय श्री दामोदर चौबे की स्मृति में एक शैक्षणिक संस्थान बनाने का प्रस्ताव रखा, जिसमें शिक्षा और स्वास्थ्य की कोई सुविधा नहीं थी। अस्पताल के साथ यह शैक्षणिक संस्थान भदावर क्षेत्र को समर्पित किया गया था। रघुवर दयाल जी और पुरुषोत्तम चौबे जी के सपने को साकार करने के लिए उनका पूरा परिवार एकजुट हो गया। पूरे होलीपुरा गांव ने इस प्रयास का समर्थन किया। भूमि (घड़ी का बाग) परिवार के पास पहले से ही उपलब्ध थी क्योंकि उन्होंने इसे पहले अधिग्रहित किया था। संयोग से 1930 के दशक में इसी घड़ी का बाग का इस्तेमाल नागार उत्सव के लिए किया गया था।

उन्होंने परिवार के घर का दौरा किया और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के लिए योगदान का अनुरोध किया। पुरुषोत्तन दास जी ने तुरंत एक ब्लैंक चेक सौंप दिया और उनसे अनुरोध किया कि वह किसी भी राशि को भरें, जो उन्हें उचित लगे, जो उन्होंने बाद में किया। पुरुषोत्तम दास जी से सवाल किया गया कि उन्होंने ब्लैंक चेक क्यों जारी किया? उनका तुरंत जवाब था, एक ब्लैंक चेक से कम कुछ भी महान परोपकारी महामना मदन मोहन मालवीय का अपमान होता।

श्री राय बहादुर राधे लाल (दामोदर चौबे के दत्तक पुत्र) और श्री शंकर लाल चतुर्वेदी, जिन्हें वास्तुकला और निर्माण कार्य में महारत हासिल थी, ने नेतृत्व किया और कॉलेज के लेआउट को डिजाइन किया। उन्होंने मार्टिन एंड बर्न, कलकत्ता के परामर्श से वास्तुकला को अंतिम रूप दिया था।

संस्थाओं के निर्माण में राय साहब युगल किशोर चतुर्वेदी, गंगाधर चतुर्वेदी, प्रयाग दास जी और रूप किशोर जी का विधिवत सहयोग रहा। फिर भी, अस्पताल बुधसेन चतुर्वेदी की स्मृति में समर्पित था। उनके नाती श्याम लाल चतुर्वेदी ने इस अस्पताल के लिए यूरोप से आधुनिक मशीनें आयात करने का फैसला किया। जिसमें ऑपरेशन की सुविधा भी थी। गंगाधर पुस्तकालय में पुस्तकों का बहुत दुर्लभ संग्रह था। इस उद्देश्य के लिए एक ट्रस्ट (होलीपुरा चतुर्वेदी चैरिटेबल एंडोमेंट ट्रस्ट) का गठन किया गया था, जो वर्तमान में इन संस्थानों और इसकी विरासत का मालिक है और इसका प्रबंधन करता है।

(र.क्र. 2111)

विद्यालय : विकास के आधार स्तम्भ

रमेश चन्द्र चतुर्वेदी, होलीपुरा/जयपुर
(पूर्व छात्र व पूर्व अध्यापक दामोदर इंटर कॉलेज)

यह सोचकर मन में सिहरन होती है कि यदि हमारे क्षेत्र में दामोदर इंटर कॉलेज ना होता तो इस इलाके का क्या होता? चारों ओर फैले पिछड़ेपन में और बढ़ोतरी हो जाती। कुछ डाकुओं और चोरों की संख्या में इजाफा होता। इस क्षेत्र का यह सौभाग्य है कि इस संस्था ने हमें बचाया, उबारा। घर बैठे लड़कों ने आसानी से शिक्षा प्राप्त की और कर रहे हैं। इससे आगे पढने का प्रोत्साहन स्वाभाविक ही है। विद्यालय के विकास में मुख्य श्रेय उस परिवार का है जिसने इसकी नींव रखी । धन तो निश्चित रूप से महत्वपूर्ण है ही, लेकिन इससे भी अधिक रूचि तथा सतत देखभाल है।

श्रद्धेय शंवर लाल चतुर्वेदी किसी पद पर तो नहीं थे परन्तु मुख्य इमारत तथा अनेक कमरे उनकी देखरेख में बने। जब वे अपनी विशिष्ट पोषक में कॉलेज की सीमा में पहुँचते थे तो चन्दन सिंह चौकीदार चिल्लाकर मानों उनका स्वागत कर काम करने वालों को सचेत कर दिया करते थे। यह बड़ा अच्छा लगता था । होस्टल, मैस और प्रिंसिपल साहब का बंगला आदि पर विशेष काम होता था और साथ ही होस्टल में रहने वालों की सुख सुविधा सदैव उनके ध्यान में थी।

किसी तरह इन पढ़नेवालों को नित्य एक पाव दूध उपलब्ध होना चाहिए, ये शब्द उन्हीं के हैं जो मुझे आज तक याद हैं। क्या कोई पास का हितैषी भी ऐसा सोचता है ? स्वास्थ्य की दृष्टि से सभी विद्यार्थियों को इंटरवल में भुने चने मिलते थे। हम भाग्यशाली थे जो कक्षा तीन से बारहवीं तक हमने ये भुने चने खाए हैं।

श्रद्धेय शंभू नाथ चतुर्वेदी जी लम्बे समय तक विद्यालय में मेनेजर रहे। उनका हमेशा यह प्रयास रहा कि कॉलेज में अच्छे से अच्छे प्रधानाचार्य और अध्यापक नियुक्त किये जाएँ और उनको आवश्यक सुविधाएँ भी उपलब्ध हों । इन अध्यापकों के लिए कुछ क्वार्टर भी बनाए गए थे। इन विद्वानों की एक लम्बी सूची है जिन्हें आज भी उनके विद्यार्थी श्रद्धा पूर्वक याद करते हैं। श्रद्धेय मोहिले साहब, चाहर साहब, रामचंद्रन जी, बैकुंठनाथ जी, निहाल सिंह जी, अस्थाना साहब, कपूर साहब, आचार्य जी, टंडन साहब, जसवंत सिंह जी, पंडित जी, नवल सिंह आदि के आज भी अंकित हैं। महत्वपूर्ण है कि इनमें से कुछ छोटी कक्षाएं भी लेते थे। मैनेजर साहब तथा अध्यापकों में अच्छा तारतम्य रहता था। सबका सामूहिक प्रयत्न था और प्रयास रहा कि विद्यालय का नाम रोशन हो। इन लोगों के प्रयासों के कारण ही समय समय पर अनेक मंत्रियों आ आगमन विद्यालय में हुआ। एक बार स्पोर्टस एंड पास टाइम नाम की पत्रिका में कॉलेज की उपलब्धियों पर एक लेख भी छपा था। यह देश की खेल कूद सम्बंधित प्रतिष्ठित पत्रिका हुआ करती थी। विद्यालय मैं समय समय पर आने वाली हस्तियों के विचार तथा वक्तव्य महत्वपूर्ण हैं जो उन्होंने अनेक माध्यमों और अवसरों पर प्रेषित किये। किसी ने कॉलेज की तुलना विदेशों के पब्लिक स्कूलों से की तो किसी ने शांति निकेतन से । एक आगंतुक ने तो दामोदर इंटर कॉलेज को ब्रिटेन के विख्यात ETON के समकक्ष रखा।

इस विकास का केंद्र बिंदु हैं मोहिले साहब का कार्य काल। इसकी नींब में था अनुशासन। किसी भी प्रकार का भेदभाव अस्वीकार्य था। मैनेजर साहब के परिवार के विद्यार्थी अक्सर यह शिकायत करते थे कि उन्हें दोहरे दंड का भागीदार होना पड़ता था : स्कूल में भी और घर पर भी शिकायत होती थी, घर पर भी लानत-मलानत । जब कुछ लड़कों, जो निश्चित रूप से कसूरवार तो थे ही, को ऑफिस में बुलाया जाता तो ऑफिस की चिक की सामने धक्का-मुक्की होती कि आगे कौन जायेगा। यह था अनुशासन के भय का आलम।

विद्यार्थियों का दिमाग इधर उधर ना भटके इसके लिए पढाई के अतिरिक्त नाना प्रकार की गतिविधियाँ, जिन्हें 'एक्स्ट्रा करीकुलर भी कह सकते हैं", भी करवाई जाती थी। गेम्स, स्पोर्ट्स, स्काउटिंग, नाटक, डिबेट, अन्ताक्षरी, पेरामिड्स, कुश्ती आदि इसमें प्रमुख हैं। एक बार मौक-पार्लियामेंट का भी आयोजन किया गया, जिसे बहुत सराहा गया। विद्यालय में स्थापना दिवस के अवसर पर नाटक मंचन आयोजित किया जाता था। यह मनोरंजन का साधन होने के साथ ही साथ, विद्यालय की शोहरत भी इसके साथ जुडी हुई थी। वे कहा करते थे कि शाम तक विद्यार्थी इतना थक जाये कि इधर-उधर ध्यान ना भटके। (र.क्र. 2111)

स्मृतियों का संतुलित संयोजन दमोदर कॉलेज होलीपुरा

- सतीश चतुर्वेदी

परिचय

कमाल की स्मृति है सतीश चन्द्र जी की! दशकों पुरानी बातों एवं घटनाओं को ऐसे कलमबद्ध करते हैं जैसे कल की ही बात हो—तत्समय के व्यक्ति, घटनाएँ, परिवेश, संकल्प एवं भावनाओं को 88 वर्ष की आयु में ज्यों की त्यों लिपिबद्ध करना एक अजूबा ही है। वे दामोदर कॉलेज होलीपुरा के वरिष्ठतम, विशिष्ठ भूतपर्व छात्र है। कॉलेज के गौरव है हमें गर्व है उन पर।

मेरा जन्म महाशिवरात्रि के दिन सन 1936 में होलीपुरा में हुआ था। मेरे पिताजी स्वा. बेनीरामजी मेरे बाबा स्वा. राधामोहनजी के सबसे छोटे बेटे थे। उनके पिताजी नित्यानंदजी पाँच फीट लंबे थे और होलीपुरा में बहुत लोकप्रियथे। वे घोड़ों का व्यापार करते थे तथा इसके लिए वे विदेशों में भी जाते थे। वे किसी भी सरकारी अफसर से डरते नहीं थे। राधामोहनजी करीब 7 फीट के थे।

मेरी माँ स्व. कृष्णा स्व. गोविंद नारायणजी की पुत्री थीं। उन्हें उनके पिताजी बहुत प्यार करते थे। वे अम्माँजी के विवाह के समय सहारनपुर के एस.पी. थे। अँगरेजों का जमाना था, अतः उनके रहन-सहन का तरीका बिल्कुल अलग था। मेरी माँ बहुत ही दिलेर थीं। उन्होंने जिद करके सहारनपुर की जेल में एक कैदी की मौत की सजा को देखा था।

विवाह के बाद भी वे बहुत निडर रहीं। उनकी मृत्यु लखनऊ में सन 1964 में हो गई, जबकि पिताजी 1978 में स्वर्गवासी हो गए। पिताजी एक बहुत ईमानदार व लोकप्रिय अफसर थे। जब पिताजी सीतापुर में उच्च पद पर कार्यरत थे तो मैंने उनसे होलीपुरा जाने की इच्छा जाहिर की। उन्होंने व अम्माँजी ने कहा कि हमारे पास किस चीज की कमी है, जो हमें छोड़कर जाना चाहते हो ? मेरा जवाब था कि होलीपुरा की आबोहवा, खेतों में सरसों की लहलहाहट, बटेश्वर का मेला, गुफा पर स्वामीजी के दर्शन, लज्जाराम के पेड़ेव दामोदर कॉलेज में पढ़ने की इच्छा बहुत प्रबल है। मैं उनको दुःखी करके होलीपुरा आ गया। होलीपुरा कॉलेज में मेरा नामांकन सन 1945-46 में मेरे ताऊजी स्व. गनपतरायजी ने करा दिया।

सुबह उठकर स्व. दिल्ला चाचा की पत्नी के हाथ के पराँठे नाश्ते में करके कॉलेज जाने का मजा कुछ और ही था। कॉलेज में लज्जाराम के पुत्र रामकरन के घर में बनाए छुके आलू के साथ बने चने दोपहर के अवकाश में मिलते थे।

कालेज की शुरुआत सुबह की श्री के.पी. मोहिले, प्राधानाचार्य के साथ पूरे कॉलेज के लड़कों के साथ प्रार्थना-सभा में होती थी। बहुत की अच्छा नजारा होता था, जब सभी बच्चे सिर नीचे करके प्रार्थना करते थे।

दोपहर 2 बजे कॉलेज की छुट्टी हो जाती थी। शाम को हम कॉलेज जाकर हॉकी व फुटबॉल खेलते थे। कॉलेज की हॉकी व वॉलीबॉल टीम का पूरे आगरे में नाम था। शिकोहाबाद व फिरोजाबाद मैच खेलने जाते थे और ट्रॉफी जीतकर लाते थे। कॉलेज की टीम का संचालन मास्टर रमेशजी करते थे।

(र.क्र. 2111)

मोहिले साहब के जाने के बाद कुछ दिन श्री आर.सी. पंडिता व श्री रामचंद्रन कॉलेज के प्रिंसिपल नियुक्त हुए थे। इम्तिहान के मौके पर बहुत कड़ाई रहती थी। कोई भी बच्चा नकल नहीं कर सकता था। जब स्व. बैकुंठनाथजी कॉलेज के प्रिंसिपल बने तो पढ़ाई व खेलकूद का बहुत विकास हुआ। बाहर के टूर्नामेंट्स में वे स्वंय साथ जाते थे। सबको रात का भोजन अपने सामने करवाते थे। दामोदर कॉलेज के स्थापना दिवस पर प्रति वर्ष नाटक खेले जाते थे, जिसका सारा आयोजन स्व. कक्का खड़गरामजी कलकत्ते से आकर करते थे। अगर वे किसी में कमी पाते थे तो उसको थप्पड़ भी मार देते थे। नाटकों को देखने के लिए शाम को होलीपुरा के ज्यादातर लोग आते थे। उनमें शंकरदद्दा, रायबहादुर, जुगलकिशोर व गुफा के स्वामीजी होते थे। मेरी एक्टिंग पर सब लोग 'वाह-वाह' करते थे।

होलीपुरा कॉलेज के बाहर की जो टीम आती थी, उनमें श्री रोशन सिंहजी की वॉलीबॉल टीम प्रमुख थी। इस टीम का मुकाबला सुरेंद्रनाथ चतुर्वेदी की टीम करती थी, जो काँटे की टक्कर होती थी। दीवाली के तुरंत बाद बटेश्वर का मेला लगता था, जिसमें कॉलेज की तरफ से मैं और मेरे चचेरा भाई भूपेंद्र शामिल होते थे। कॉलेज की तरफ से हम लोग बॉय स्काउट्स होते थे और पूरे मेले में इंतजाम देखते थे। कॉलेज का टेंट लगता था। हमारा दिन का खाना हमारे ताऊजी गनपतरायजी लाते थे। होलीपुरा से बटेश्वर आने के लिए यमुना की तलहटी का रास्ता करीब 6-7 मील लंबा था, जिससे होकर होलीपुरा करीब डेढ़ घंटे में पहुँच जाते थे।

दामोदर कॉलेज की स्थाआपना में स्व. राधेलालजी वकील (मेरठ) नाम सम्मान के साथ लिया जाएगा। उन्होंने दामोदर कॉलेज के निर्माणके लिए अपनी जमीन देकर अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया था।

कॉलेज की प्रतिदिन के क्रियाकलाप में श्री टंडन व कुल श्रेष्ठजी का नाम लेना बहुत आवश्यक है। टंडनजी दिन भर कॉलेज के निरीक्षण के लिए चक्कर लगाते थे। वहीं श्री कुल श्रेष्ठजी कॉलेज के पुस्तकालय को देखते थे, साथ ही खेलकूद के क्रियाकलापों में भी उनका बहुत नाम था।

मास्टर जसवंत सिंहजी कॉलेज के बॉयज हॉस्टल के इनचार्ज थे व लड़कों के खाने-पीने का इंतजाम करते थे। वे हॉस्टल में ही रहते थे। उनके सगे भाई श्रीनवल सिंह जी सांस्कृतिक क्रियाकलापों के इनचार्ज थे। उनकी ही अध्यक्षता में बसंत पंचमी व जन्माष्टमी के उत्सव मनाए जाते थे।

बटेश्वर के मेले मे शिवजी के मंदिर में आने वाली भीड़को नियंत्रणमें करने की जिम्मेदारी भी हम स्काउट्स की थी। इसके अलावा मेले में जगह-जगह जो भीड़ इकट्ठी होती थी, उसको भी हम लोग नियंत्रित करते थे। होलीपुरा से किन्नरपुरा तक का रास्ता श्रमदान के जरिए हम लोगों ने ही ठीक किया था। दामोदर कॉलेज में शिक्षा पाकर ज्यादातर लोग उच्च पदों पर पहुँच गए थे। श्री जयेंद्रनाथ चतुर्वेदी आई.पी.एस., दिल्ली के पहले पुलिस कमिशनर बने और बाद में उत्तर प्रदेशके डी.जी.पी. व यू.पी. पब्लिक सर्विस कमीशन के चेयरमैन बने थे।

नागपुर के सतीशचंद्र चतुर्वेदी ने होलीपुरा कॉलेज से शिक्षा पाई थी। वे महाराष्ट्र की कैबिनेट में मंत्री थे। आज उनके नागपुर व मुंम्बई में कई इंजीनीरिंग व मेडिकल कॉलेज हैं। मेरे पिताजी ने भी शुरू में दामोदर कॉलेज से ही शिक्षा प्राप्त की थी और वे केन कमिशनर के पद से रिटायर हुए थे। लज्जाराम हलवाई, बचपन में उनका परममित्र था। उसके अलावा स्व. प्रयागदास जी (देईबाबू) का छोटा बेटा अश्विनी यू.पी. व भारत का नामी क्रिकेटर बन गया था। मेरे चचेरे भाई डॉ. लीलाधर हिंदू कॉलेज, मुरादाबाद में जंतुविज्ञान के हेड थे। हृदयनाथ चतुर्वेदी, बैंक ऑफ इंडिया में डिवीजनल प्रबंधक थे। शंभूनाथ चतुर्वेदी ने भी दामोदर कॉलेज से शिक्षा प्राप्त की थी। वे यू.पी. एम.एल.ए., आगरा के मेयर व लोकसभा के सदस्य चुने गए थे। कहने का मतलब है किदामोदर कॉलेज की जो हर वर्ग के लिए देन थी उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता।

अंत में महात्मा गांधी के निधन पर दामोदर कॉलेज 9 दिन के लिए बंद हुआ था और पूरे गाँव में रोते हुए प्रभातफेरी निकाली गई थी। आज सबकी कोशिश है कि दामोदार कॉलेज एक डिग्री कॉलेज बन जाए। दामोदर कॉलेज का यह सौभाग्य है कि यहाँ उत्तर प्रदेश के लोकप्रिय मुख्यमंत्री श्री गोविंद बल्लभ पंत, रेल मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री तथा अगले मुख्यमंत्री श्री चंद्रभान गुप्त निरीक्षण के लिए पधारे थे। यह सब श्री शंभुनाथजी व बैकुंठनाथजी के प्रयासों का फल था।

हम सब यही चाहते हैं कि दामोदर कॉलेज दिन रात तरक्की करे और भदावर तहसील के बच्चे यहाँ शिक्षा पाकर अपना एवं कॉलेज का नाम रोशन करें।

(र.क्र. 2111)

गुरु बिन ज्ञान न उपजे

- डॉ. अनिल चतुर्वेदी

परिचय

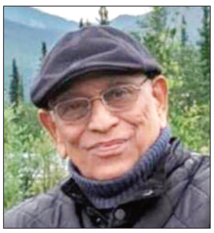

केंन्द्री य हिंदी संस्थीयन का 'डॉ. आत्माारााम सम्मोन' (2013, इंडियन मेडिकल एसोसिएशन का 'डॉ. डी.एन. दत्ताा सम्मामन' (2008, 'डॉ. टक्कभर सम्मॉान' (1996) तथा 'डॉ. भिडे पुरस्कातर' (2004, प्राप्तम। वर्ष 1996 में 'राष्ट्री य हिंदी सम्मा9न' से भी सम्मााानित किया गया। सन 2005 में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थाीन द्वारा 'विज्ञान भूषण सम्मासन', सन् 2006 में 'चिकित्सात और हम' पुस्त क हिंदी अकादमी, दिल्लीस सरकार द्वारा 'साहित्यिक कृति सम्माशन'।

बी.सी. राव राष्ट्री य सम्माणन', 'व्याोश्रेष्ठ् सम्मा न, आजीवन उपलब्धि', 'विज्ञान और प्रौद्योगिकी संचार राष्ट्रीीय पुरस्कार', 'आई.एम.ए. डॉ बी.आर. रामा सुब्रह्मण्यम आवार्ड-2015', 'डॉ. ए.के.एन. सिन्हान इंडियन मेडिकल एसोसिएशन दामोदर इंटर कॉलेज होलीपुरा, सरस्वॉती का वह मंदिर, जहाँ स्वस. श्री दामोदर दासजी की दूरदर्शिता, स्व. श्री राधेलालजी की तेजस्विता, राय साहब स्व. श्री जुगल किशोर चतुर्वेदी की भव्यता, स्व. श्री शंभूनाथजी की दिव्यता, श्री कालका प्रसाद मोहिले की प्राथमिकता एवं प्रामाणिकता स्व. श्री बैकुंठनाथ चतुर्वेदी की प्रतिबद्धता व पारदर्शिता प्रस्फुटित एव पल्लवित हुई। श्री अमरनाथ टंडन की सहजता, श्री प्रकाश शरण कपूर की अनुशासन प्रियता, श्री जसवंत सिंहजी की सजगता, नवल सिंहजी की निर्भीकता, शास्त्रीजी का पांडित्य, श्री गोपाल दत्त आचार्य की विद्वत्ता एवं श्री कुलश्रेष्ठजी की सहृदयता, कलापारंगत श्री पुरंदरे की कर्मण्यता, मास्टर रमेशचंद्र की सदाशयता से परिभाषित कर हमें प्रशिक्षित एवं परिमार्जित किया है। यही कॉलेज का अवदान है यही कॉलेज की पहचान है। इस सरस्वती मंदिर का जन्म सन् 1932 में बैठक में हुआ। स्व. श्री दामोदर दासजी के सुपुत्र श्री राधेलालजी एवं उनके परिवार के उत्कृष्ट शिक्षा, प्रेम एवं असीम उदारता के चलते कॉलेज का मुख्य भवन उसी वर्ष बना। अगले वर्ष 1933 में स्व. पं. रघुबर दयालजी की कृपा से, अनुकंपा से राजेंद्र छात्रावास निर्मित हुआ। सन् 1936 में शिक्षा विभाग ने इसे मिडिल स्कूल के रूप में मान्यता प्रदान की। सन् 1937 में इसे हाई स्कूल की मान्यता मिली। इसी वर्ष चौबे गंगा प्रसाद पुस्तकालय का भवन तैयार हुआ। सन् 1942 में विज्ञान-कक्ष का निर्माण हुआ। सन् 1945 में यह मंदिर इंटरमीडिएट कॉलेज बन गया। सन् 1947 में इंटर परीक्षा का परिणाम शत-प्रतिशत रहा। यह ऐसे संभव हुआ कि संस्थापक प्रधानाचार्य श्री मोहिले रात्रि में गाँव यह देखने निकल जाते थे कि किस घर में रोशनी है, अर्थात विद्यार्थी पढ़ रहा है। जहाँ अँधेरा होता था तो दूसरे दिन अभिभावक एवं विद्यार्थी-दोनों को अध्ययन के लिए बाध्य किया जाता था। इस सरस्वती के मंदिर के प्रति उनकी प्रतिबद्धता अटूट एवं अप्रतिम थी। इस मंदिर की आधारशिला सुदृढ़ एवं बलशाली करने का श्रेय श्री मोहिले को जाता है। सन् 1946 में वे अपनी प्रशासनिक दक्षता एवं शैक्षिक क्षमता के कारण इलाहाबाद विश्वविद्यालय में सहायक रजिस्ट्रार नियुक्त हुए। सन् 1951 में पिता श्री स्व. श्री बैकुंठनाथ चतुर्वेदी ने प्रधानाचार्य का पद सँभाला। यह सरस्वती का मंदिर अपने विकास व प्रगति के मार्ग पर निरंतर अग्रसर होने लगा। सन् 1953 में इंटर कक्षाओं के शिक्षामें भूगोल एवं कला को भी स्‍ थान मिला। सन् 1956 के जुलाई महीने में इंटरमीडिएट कक्षाओं में विज्ञान के शिक्षक की व्यवस्थास कर सन् 1957 में हाई स्कूल कक्षाओं में वाणिज्य के शिक्षा विषय का भी शुभारंभ किया गया।

यह सरस्वती का मंदिर 3000 वर्ग मील के क्षेत्र में वाह एवं फतेहाबाद तहसील का एकमात्र संस्था5 है। 140 गाँवों के बालक यहाँ अध्ययन के लिए आते थे। प्रकृतिके सुरम्य अंचल में बसा यह लघु शांति निकेतन विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, अध्यात्मिक, सामाजिक व्यक्तित्व के विकास की कहानी है। यहाँ शारीरिक विकास के लिए कॉलेज के एक मील के व्यास में रहने वाले छात्रों के लिए खेल कूद अनिवार्य था। विद्यार्थी अपनी रुचिके अनुसार हॉकी, फुटबॉल वॉलीबॉल खेलने के लिए बाध्य थे, यही कारण है किसन् 1957 में जिला वॉलीबॉल प्रतियोगिता में विजय-कलश प्राप्त किया। जिला फुटबॉल प्रतियोगिता में भी कॉलेज का स्थान दूसरा रहा। दूसरे जिले में हॉकी एवं वॉलीबॉल में इस दामोदर इंटर कॉलेज का स्थान सर्वोपरि था। फाइनल अधिकतर फिरोजाबाद या शिकोहाबाद में खेले जाते थे तथा कुल श्रेष्ठजी खेलकूद के मुखिया एवं मास्टर रमेशचंद्र के नेतृत्व में टीम भाग लेती थी। फाइनल मैच के खिलाड़ियों के प्रोत्साहन के लिए प्रधानाचार्य स्व. चतुर्वेदी स्वयं जाते तथा जीत मिलने पर नामी

(र.क्र. 2111)

हलवाई के यहाँ पूड़ी, साग, दूध, रबड़ी हर खिलाड़ी को खिलवाते थे। कॉलेज में बाहर से वॉलीबॉल की टीमें खेलने आती थीं तथा पुरस्कार वितरण भी गाँव के प्रतिष्ठित महानुभावों द्वारा दिए जाने की परंपरा भी थी, जिससे समाज का सदभाव, सहयोग निरंतर बना रहा।

दामोदर इंटर कॉलेज में सांस्कृतिक गतिविधियों का विशेष स्थान था। प्रतिवर्ष स्थापना दिवस के अवसर पर कॉलेज के अध्यापकों द्वारा आयोजित धार्मिक नाट्य प्रदर्शन सांस्कृतिक संपदा का आकर्षण रहता था। नाटक मौलिक रूप से प्रतिवर्ष कक्का खड़गराम जी के सान्निध्य में प्रतिपादित होता, जिसके रचयिता, निर्देशक वे स्वयं ही होते थे। लगभग 10 दिन पूर्व ही होलीपुरा में आकर शाम 6 बजे से रात्रि के 10 बजे तक स्वयं ही पात्रों का चयन-निर्वाचन करते थे। स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, तुलसी जयंती, कृष्णे जन्महष्टपमी, गीता जयंती आदि का उत्सव वसंत पंचमी का उमंग, उल्लास और उत्साह पूर्ण मनाया जाता था। वसंत पंचमी के दिन वसंतोत्सव सभी विद्यार्थी मनाने आते थे। कविता, गायन भी होता था, जिसका दायित्व श्री नवलं सिंह जी के हाथों में था, जो स्वयं वीर रस के ओजस्वी कवि थे।

कॉलेज का रजत जयंती समारोह : 10 नवंबर, 1958 को कॉलेज की रजत जयंती बड़े धूम धाम से मनाई गई। पूरे कॉलेज को दुलहन की तरह सजाया गया। प्रांगण में विशाल शामियाना लगाया गया, जिसमें 500 से अधिक आगंतुक मेहमान बैठ सके। बैठने की व्ययवस्था। थी। श्री राधेलालजी, श्री शंभूनाथजी व बाबू रामचंद्र गुप्त, लोकसभा सांसद, आगरा, श्री राधेलाल चतुर्वेदी, सांसद, एटा कमिशनर, आगरा सुधाकर शर्मा, उपनिदेशक शिक्षा विभाग उपस्थित थे। भारत सरकार के तत्कालीन वाणिज्य मंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री ने मुख्य अतिथि के रूप में कॉलेज का निरीक्षण किया। गंगा प्रसाद पुस्तकालय, जहाँ लगभग 2 हजार पुस्तकें एवं 20 बच्चों की पत्र-पत्रिकाएँ थीं। उन्होंने शंभूनाथ जी की ओर दृष्टपात कर कहा-अतिसुंदर पुस्तक ही विद्यार्थियों की मित्र है, सद्गुणों का निर्वाह करने में सहायक होगी। विद्यालय की 25 वर्षों के विकास एवं प्रगतिका लेखा-जोखा प्रधानाचार्य ने प्रस्तुत किया। वह कॉलेज प्रबंधन, अध्यापक तथा कॉलेज कर्मचारियों के सद्भाव, सदाशयता, दूरदर्शिता एवं सहयोग की अनूठी मिसाल थी। श्री लालबहादुर शास्त्री ने जंगल में मंगल बना दिया कहकर अपने संबोधन को प्रारंभ किया। उन्होंने कॉलेज की विगत 25 वर्षों के सफलता के लिए प्रबंधकों , शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की भूरि प्रशंसा की, साथ ही यह कॉलेज डिग्री कॉलेज में परिणत हो यह शुभकामनाएँ भी दी। कभी-कभी जीवन में कुछ ऐसे क्षण भी आते हैं जो सदैव के लिए स्मृति में अंकित हो जाते हैं। मैंने शास्त्री के सुझाव श्री रविंद्रनाथ टैगोर की कविता where the mind is without Fear, and the head is held high का पाठ किया, किंतु कल्पना कीजिए कि कितना रोमांचक एवं गौरव पूर्ण क्षण रहा होगा, मेरे जैसे 13 वर्ष के किशोर के लिए। कॉलेज में रजत जयंती के अवसर पर कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया। सभी लब्ध प्रतिष्ठित राष्ट्रीय कवियों को आमंत्रित किया (आनंद मिश्र ग्वालियर से देवराज, दिनेश, गोपाल प्रसाद व्यायस, दिल्लीा से बरसाने लाल चतुर्वेदी, मथुरा से सोम ठाकुर, श्री कुलदीप, राजेश दीक्षित, बलबीर सिंह रंग, एटा से प्रो. तपेश चतुर्वेदी, आगरा से पधारे कवि-सम्मोलन सुबह 4 बजे तक चला। कॉलेज का यह स्वर्णिम काल सामाजिक क्षेत्र में भी था। पाठ्यक्रम के बाहर भी बहुत कुछ था, जिसमें घुसने और घूमने-फिरने को हमारे पाँव बिना हमसे पूछे ही उठ रहे हैं। एन.सी.सी. के सैन्य शिक्षा तथा बालचर प्रशिक्षण द्वारा केवल उमंग, स्फूजर्ति को संचारित ही नहीं, वरन् समाज-सेवा के निर्वहन के लिए शिक्षा दी जाती थी। हम बालचर वन भ्रमण शिविर जीवन का आभास करते थे। बटेश्वर मेले को आकर एन.सी.सी. टीम कैडेट यातायात के भीड़ को नियंत्रित करने तथा यमुना के घाटों पर पैनी निगाहें रहते, ताकि कोई अप्रिय घटना न घटे। प्रति वर्ष बटेश्वर मेले में एन.सी.सी. टीम को विजय-कलश मिलता था। अग्नि संग्राम में भी बालचरों में अटल साहस का परिचय देकर गाँव में आग लगने पर गाँव की रक्षा की। विद्यार्थियों को भारतीय शैली में प्राथमिक चिकित्सा (First Aid) का भी प्रशिक्षण मिलता था। श्रमदान में भी विद्यार्थी भारी संख्या में निरंतर प्रयत्नशील रहते थे। होलीपुरा से किन्नरपुरा की 2 मील सड़क निर्माण कर समाज सेवा के आदर्शीकरण का निर्वहन किया। दिल्ली दर्शन दो बार किया। प्रथम विश्व औद्योगिक प्रदर्शनी को देखने का समयभी सन् 1957 में मुझे मिला। एक रोचक किस्सा याद है। रोहतगी धर्मशाला, धर्मपुरा किनारी बाजार में हम ठहरे थे। पराँठे वाली गली में जलपान, घी दूध का सेवन शाम को शर्मा भोजनालय वाले शर्माजी ने हाथ जोड़ दिया और जलपान-भोजन प्रदान करने में असमर्थता प्रकट की। कारण यह था किमहावीर, जो भोजन भट्ट के नाम से गाँव में विख्यात थे, 50 पूड़ी एक बार में ही हजम कर गये। बड़ी अनुनय-विनय के बाद पूरे ग्रुप को उस बात पर भोजन कराने के लिए तैयार हुए, जब उन्हें आश्वस्त किया गया कि महावीर आपके भोजनालयन हीं पधारेंगे। उन्हें उस रात दूध और रबड़ी से ही अपनी क्षुधा शांत करनी पड़ी। वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में भी कॉलेज ने ए.के. कॉलेज शिकोहाबाद में कई वर्ष निरंतर ट्रॉफी अर्जित की। यह महात्मा गांधी वाद-विवाद प्रतियोगित में फिरोजाबाद में सुधा रानी कपूर नवीं कक्षा की छात्र ने प्रथम स्थापन प्राप्त किया। इस

(र.क्र. 2111)

सरस्वती के मंदिर में अनेक गण्यमान्यिव भूतियों ने पधार कर, आशीर्वाद दिए। जिसमें भारत के गृहमंत्री पं. गोविंद बल्लभ पंत, शिक्षा मंत्री पं. कमलापति त्रिपाठी, उत्तर प्रदेशके मुख्यमंत्री श्री संपूर्णानंद, श्री चंद्रयान गुप्त, आगरा विश्व विद्यालय के भूत पूर्व कुलपति व केंद्रीय लोकसेवा संघ के तत्कालीन सचिव श्री सी.वी. महाजन ने इस पावन प्रांगण को गौरवान्वत किया है। होलीपुरा का वृत्तांत बिना रायसाहब जुगल किशोर चतुर्वेदी के अधूरा है। दोहरा शरीर, नाटा कद, सिर पर टोपी, आँखों में सुनहरे फ्रेम का चश्मा दाएँ हाथ में चाँदी की मूठ वाली छड़ी, शरीर पर अचकन व चूड़ीदार पाजामा, अचकन की एक जेब से दूसरी जेब तक घड़ी की सुनहरी और मोटी चेन किसी भी सामने वाले को नतमस्तक कर देती थी। ऐसा था उनका प्रभावशाली व्यक्तित्व। वे एक नजर में ही लोगों को पहचान लेते थे और संयमित व सीमित शब्दों में अपनी बात करते थे। वे शोभन थे। सुदर्शन थे। उनके गले में अद्भुत किस्म की मिठास थी। वे ओज और माधुर्य-दोनों भावों को सम्मा न आवश्यकतानुसार प्रस्तुत करने में परिपक्व थे। होलीपुरा में प्रचलित धम्मार के वे श्रेष्ठ गायक, संकलनकर्ता एवं रचियता थे। होली के एक माह पूर्व ही उनकी उपस्थिति से गाँव में संगीत, उमंग, उल्लास, उत्साह का वातावरण मुखरित हो उठता था। वे बड़ी तन्म यता से गाते थे। उनका अतिथि सत्कार भी विलक्षण था। वे स्वयं अतिथि को भाव एव प्रेम परोसकर मस्तकर देने में प्रवीण थे। रायसाहब के अनन्य भक्त कॉलेज के चंदन सिंह थे। वे कॉलेज में हर कक्षा के ताले प्रातः खोलते तथा कालीन सायं बंद करते, यदि किसी विद्यार्थी का कुछ सामान छूट जाता, तो पुस्तकालय में कमरा नं. व डेस्क का उल्लेख कर कुल श्रेष्ठजी को पूरा विवरण देते थे। वे होलीपुरा के खबरनवीस, यानी चलते-फिरते अखबार थे। वे प्रधानाचार्य की आँख व कान थे। वे गायकी तरह सीधे, बैल की तरह मेहनती एवं भैंस की तरह मूढ़ थे। वे हर घटना के चश्मदीद गवाह होते थे, जो तथ्यों को गहराई एवं बारीकी से प्रस्तुत करते थे। वे रायसाहब एव प्रधानाचार्य दोनों के आज्ञाकारी व विश्वास पात्र थे। वे हर छोटी-बड़ी घटना की संज्ञान लेते तथा कौन सी घटना कहाँ और किसको, कैसे बतानी है, इस कला में उन्हें महारत हासिल थी। कॉलेज परिसर में प्रधानाचार्यके निवास के समीप ही चिकित्सालय था। दो बेड भी बरामदे में थे। बड़ा हॉल, जिसे दो हिस्सों में बाँट दिया गया था। एक ओर प्रवेश करते ही दाईं ओर जाकर डॉ. साहब की कुरसी लगी थी तथा दाईं ओर लकड़ी के पार्टिशन से कंपाउंडर दवा देता था।

गाँव में बिजली नहीं थी, इसलिये पंखा ऊपर दीवार पर लटका था, जिसकी डोर एक कर्मचारी खींचकर उसे चलाता था। पहले डॉ. नरसिंहदास पाठक थे। वे उम्र में तो 60 वर्ष से अधिक के थे, किंतु भारी-भरकम होने के कारण मंद एवं मंथर गति से अस्पताल में प्रवेश करते थे। कुरसी पर विराजमान होकर मरीज की ओर गरदन हिलाते, यानी बोलो क्या तक लीफ है, फिर APC Mix Carnimate की एक शीशी हर मरीज को पकड़ा देते थे। वे बहुत कम बोलते थे। रिटायर होने के बाद वे भाईथान मोहल्ला आगरे में रहने लगे तथा 1957 के चुनाव में एमपी का चुनाव भी लड़े। उनका निर्दलीय चुनाव-चिन्हो हाथी था, जो उनके व्यक्तित्व को परिभाषित करता था। उनकी जमानत जब्त हो गई। उसके हार के बाद राम चंद्र तिवारी ने मोर्चा सँभाला।

उनके पिता प्रो. जगन्नायथ तिवारी आगरा कॉलेज आगरा के हिंदी विभागाध्यक्ष थे। वे कदके नाटे थे, जो हिटलर की तरह दिखते उनके चेहरे पर खौफ विराजमान रहता, वे नेकर बड़ा पहनते, साथ में आधी बाँह की बनियान भी। उनका व्यक्तित्व भयभीत करने वाला था। वे शायदही कभी मुसकराते थे। एक बार एक आदमी साँप के काटने की वजह से उनके घर पर आ गया। चंदन सिंह, जिनका कमरा उनके और प्रधानाचार्य के निवास के बीच था, उन्हें सूचना दी गई। डॉ. साहब आते ही गुर्राए, साँप के पास क्यों गए थे? चिकित्सालय खुलवाया गया। कसकर पट्टीबाँधी और सरोजिनी चिकित्सालय आगरा रेफर कर दिया। लेकिन डॉ. तिवारी की तत्परता तब देखी, जब श्री कैलाश चंद्रजी का पुत्र तालाब में डूब रहा था, तब डॉ. तिवारी तालाब में कूद गए और उस डूबने वाले को निकालकर उसके पेट से काफी पानी निकाला। कई इंजेक्शन दिए। किंतु वे उसे बचा न सके, पर उन्होंने लगतार 1 घंटे तक अथक प्रयास किया। मैं सन् 1954-55 से 1959-60 तक छठी कक्षा से दसवीं तक दामोदर कॉलेज का छात्र रहा। हमारे पिता श्री स्व. श्री बैकुंठनाथ चतुर्वेदी हमारे गुरु भी थे। जीवन को गति देने वाले, दिशा देने एवं दशा बदलने वाले। हमारे ही नहीं, वरन् समस्त छात्रों की महत्त्वाकांक्षाओं एवं संभावनाओं की एक प्रेरणा शक्ति। जब छात्र कभी भटक जाते, डगमगाते, लड़खड़ाते, तो वे उनके जीवन में ऊर्जा की स्याही भरते। ईमानदारी, जिम्मेदारी, दुनियादारी और समझदारी का पाठ इस सरस्वती के मंदिर में हर उपासक (छात्र) के पास है। नमन, मनन एवं लगन से परिपूर्ण भी हैं। मेरे साहित्य परम्परा और संस्कार की अकूत पूँजी आचार्य पिता श्री की ही देन है। वे हमारे अंतस में गहरे रच गए हैं सदा के लिए बस गए हैं। वे हमारे साथ अपनी यशकाया में हैं, हमारे आचरण में खिल खिलाते हैं हमारी आदतों में मुसकराते हैं।

कवि मित्र आलोक की से पंक्तियां कितनी सार्थक एवं सारगर्भित है—

धड़कते साँस लेते रुकते-चलते, मैंने देखा है,
कोई तो है, जिसे अपने में पलते, मैंने देखा हैं।
आपके खून से मेरी रगों मे ख्वापब रोशन हैं,
आपकी आदतों में खुद को ढलते मैने देखा है॥

(र.क्र. 2111)

दामोदर इंटर कॉलेज, होलीपुरा

कुछ अनकही, कुछ अनसुनी

- डॉ. निशीथ चतुर्वेदी

दामोदर इंटर कॉलेज के 90 वर्षों की सफल यात्रा में कुछ महत्त्वपूर्ण पड़ाव आये, जिनका जिक्र करना इस अवसर पर आवश्यक हो जाता हैः-

स्वनामधन्य श्री दामोदर चौबे की पुण्य इच्छा को यथाशीघ्र साकार रूप देने हेतु उनके स्मारक स्वरूप इस कॉलेज का जन्म सना 1932 में गाँवकी रिक्त पड़ी हुई जन-शून्य गढ़ी की एक भग्न बैठक में हुआ था। उसी वर्ष कॉलेज का मुख्य भवन बना। यमुना केकछार के इस वन्य-पशुओं से पूर्ण बीहड़ तथा दस्युआंतक-ग्रस्त क्षेत्र में दूर-दूर के गाँवों से बालकों का नित्य पैदल आना अत्यंत दुरूह था, इसलिए सना 1933 में स्व. पं. रघुवर दयाल चतुर्वेदी की कृपा से राजेंद्र छात्रावास निर्मित हुआ।

सन 1935 में दामोदर परिवार ने एक लाख छह हजार रुपयों की निधि से 'होलीपुरा चतुर्वेदी चैरिटेबलएनडोमेंट ट्रस्ट' की स्थापना की, जिससे विद्यालय को एक नया जीवन मिला। सन 1636 में शिक्षा विभाग ने इसे मिडिल स्कूल के रूप में मान्यता प्रदान की। सन 1938 में इसे हाईस्कूल की मान्यता मिली। इसी वर्ष 'चौबे गंगा प्रसाद पुस्तकालय' का भवन बनकर तैयार हुआ। सन 1942 में विज्ञान कक्ष का निर्माण हुआ, जिसका विकास कार्य सन 1955 में किया गया। सन 1945 में यह विद्यालय इंटरमीडिएट कॉलेज बन गया। हालाँकि, तब इसमें केवल साहित्यिक वर्ग था। विद्यालय के लिए यह विशेष गर्व की बात रही कि सन 1947 में जितने भी छात्र इंटरमीडिएट की परीक्षा में बैठे, सभी उत्तीर्ण हुए। सन 1953 में इंटरमीडिएट कक्षाओं के शिक्षण विषयों में भूगोल और कला को भी स्थान मिला। जुलाई 1956 में इंटरमीडिएट कक्षाओं में विज्ञान वर्ग के शिक्षण की व्यवस्था कर विद्यालय प्रगति के पथ पर बढ़ा। सन 1957 में हाईस्कूल कक्षाओं में वाणिज्य के शिक्षण की भी व्यवस्था कर दी गई और वर्ष 1955 में वाणिज्य के छात्रों का प्रथम दल हाईस्कूल परीक्षाओं में सम्मिलित हुआ। सन 1958 में कॉलेज की रजत जयंती मनाई गई। कॉलेज का प्रांगण बिजली की रोशनी से जगमग कर उठा तथा इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में तत्कालीन वाणिज्य मंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री पधारे। श्री कालिके प्रसाद मोहिन्ते कॉलेज के प्रथम प्रधानाचार्य थे। उनका कार्यकाल सन 1932 से 1946 तक रहा। अपने अथक परिश्रम, लगन तथा मन में कुछ करने की ठानकर चलने वाले श्री मोहिन्ते ने विद्यालय में ज्ञान एवं अनुशासन की ठोस नींव रखी। लगभग 3000 वर्ग मील के क्षेत्र में बना यह कॉलेज एकमात्र संस्था थी जो करीब 1400 विभिन्न गाँवों के छात्रों को विद्यार्जन करा रही थी। वर्ष 1958 की हाईस्कूल परीक्षा में 82 छात्र बैठे जिनमें से 6 छात्र प्रथम श्रेणी, 50 छात्र द्वितीय श्रेणी और 14 छात्र तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। कॉलेज में खेल-कूद के लिये तकरीबन 7 खेल के मैदान थे, जहाँ विभिन्न कक्षाओं के छात्र शाम को हॉकी, फुटबॉल, वॉलीबॉल, कबड्डी आदि खेल अनिवार्य रूप से खेलते थे। आज के बहु प्रचलित विद्यालयों में भी शायद इतने मैदान छात्रों के लिए उपलब्ध नहीं होंगे। कॉलेज में हर वर्ष धनतेरस के दिन एक ड्रामा होता था, जिसकी तैयारी, कक्का खड्ग राम जी की देखरेख में 3 महीने पूर्व शुरू हो जाती थी। लगभग 50 फीट लंबा, 40 फीट चौड़ा और 5 फीट ऊँचा स्टेज सजाया जाता था। एक प्रसंग में जब कर्ण वध का दृश्य चल रहा था, मैंने स्वयं अपनी आँखों से स्टेज पर रथ व पानी की धारा निकलते देखा है। सन 1942 में विद्यालय के छात्रों ने नागरी प्रचारणी सभा, आगरा के तत्त्वाधान में होने वाली अखिल भारतीय अंतः विद्यालय अंताक्षरी प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कारजीतकर विद्यालय का नाम रोशन किया। सन 1952 में बटेश्वर मेले में छात्रों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेकर लगभग 100 के पुरस्कार जीते थे। सन 1954 में जिलाबोर्ड ने बालचरों की सेवाओं से प्रसनन होकर 51 प्रदान किये और सन 1956-57 में बाह के विकास क्षेत्राधिकारी द्वारा आयोजित शिविर प्रतियोगिता में भी सर्वोत्तम शिविर का प्रथम पुरस्कार जीता।

विद्यालय के छात्रों ने ए.के. कॉलेज, शिकोहाबाद की वाद-विवाद प्रतियोगिता में लगातार 2 वर्ष तक ट्रॉफी प्राप्त की। कॉलेज के छात्र खेल-कूद प्रतियोगिताओं में भी लगातार विद्यालय की विजय पताका फहराते रहे और फिरोजाबाद के एस.आर.के. कॉलेज में आयोजित वॉलीबॉल व हॉकी प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त कर कॉलेज की शान को चरम पर ले गये। कॉलेज के गंगा प्रसाद पुस्तकालय में विभिन्न विषयों पर विद्वान लेखकों की लगभग 6 हजार पुस्तकें उपलब्ध थीं। इसके साथ-साथ लगभग 20 पत्र-पत्रिकाएँ भी मँगाई जाती थीं। होनहार छात्रों के लिए करीब 12 छात्रवृत्तियाँ विभिन्न परिवारजनों द्वारा अपने प्रियजनों के नाम से कॉलेज में शुरू कराई गईं। प्रति वर्ष कॉलेज निरीक्षण केदौरान निरीक्षण समूह ने कॉलेज के प्रशासन, शिक्षा, सफाई इत्यादि की भूरि-भूरि प्रशंसा की, जो इतिहास के पन्नों में कैद है। कॉलेज के भूतपूर्व छात्रों को इस बात का गर्व होना चाहिए कि इस विद्यालय की तुलना शांति निकेतन, तक्षशिला तथा नालंदा विश्वविद्यालय जैसे शिक्षा संस्थानों से की गई थी।

(सौजन्यः रजत जयंती पर प्रस्तुत विवरण के आधार पर)

(र.क्र. 2111)

दामोदर इंटर कॉलेज और होलीपुरा में बीता समय भुलाना है असंभव - कपूर साहब

- अभय सरन कपूर, लखनऊ

आगरा जनपद का एक छोटा परन्तु बड़ी-बड़ी हवेलियों वाला समृद्ध गाँव होलीपुरा और वहीँ का आदरणीय दामोदर दास चतुर्वेदी की स्मृति में स्थापित दामोदर कॉलेज अपने आप में एक समृद्ध और विलक्षण कॉलेज था। सैकड़ों एकड़ में फैला प्रांगण, बड़ी बड़ी इमारतें, अनेकों खेल के मैदान, अद्वितीय पुस्तकालय, हर ओर हरयाली, महुआ, खिन्नी और इमली के बड़े बड़े वृक्षों के बीच बना विद्यालय याद दिलाता था गुरुकुल और शांति निकेतन की। इसी विद्यालय के एक अध्यापक थे कपूर साहब जो एक आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी थे और पढ़ाने के अतरिक्त गेम्स, स्पोर्ट्स और अन्य एक्टिविटीज में भी दखल रखते थे। विद्यालय की एक मुख्य वार्षिक गतिविधि थी 'ड्रामा', जिसे देखने आस-पास के गावों से भी हज़ारों लोग आते थे । इस ड्रामे हेतु मज़बूत और सुरक्षित स्टेज तैयार करना भी कपूर साहब का ही दायित्व होता था। उनकी आवाज़ इतनी बुलंद थी कि कभी पता करना हो कि कपूर साहब कहाँ पर पढ़ा रहे हैं तो बस कान लगाइए और पता चल जायेगा । उनकी एक्टिविटीज का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि एक बार अपने सह-अध्यापक श्री रामविलास जी से कुछ चर्चा हो जाने पर दोनों ही आगरा शहर तक, जो लगभग 65 किलोमीटर दूर था, तक पैदल चल कर गए और वापिस आये। दामोदर इंटर कॉलेज के सभी पुरातन विद्यार्थी व समस्त होलीपुरा निवासी आज भी कपूर साहब को श्रद्धा से याद करते हैं। आजकल के युवा भी उनके नाम से तो परिचित हैं ही।

कपूर साहब अपनी पत्नी श्रीमती मुन्नी कपूर व तीन बच्चों के साथ 1939 में होलीपुरा पहुंचे व फिर होलीपुरा गाँव के लोग, वहां का वातावरण तथा साथ ही दामोदर कॉलेज, उन्हें इतना पसंद आया कि वहीँ के होकर रह गए तथा 1966 में सेवा निवृत्ति तक वहीँ रहे। वहां रहते हुए उनके तीन बच्चे और हुए । उनके सभी बच्चों ने दामोदर कॉलेज में ही शिक्षा प्राप्त की और वहीँ से उनके उज्जवल भविष्य की नीवं पड़ी।

सौभाग्य से कपूर साहब के नाम से विख्यात स्व श्री प्रकाश सरन कपूर मेरे पूज्यनीय पिता थे । मैं कपूर साहब के परिवार का संक्षिप्त विवरण मात्र इस आशय से नीचे दे रहा हूँ ताकि वर्तमान समाज को भी ज्ञात हो कि होलीपुरा गाँव के दामोदर कॉलेज का अपने विद्यार्थियों के जीवन को सफल बनाने व समाज के उत्थान में अद्वितीय योगदान रहा है।

ज्येष्ठ पुत्र संतोष ने होलीपुरा से हाई स्कूल करने के बाद एम.एस.सी. की व विभिन्न सरकारी कॉलेज में अध्यापक व प्रधानाध्यापक रहे व शिक्षा विभाग के ही डिप्टी डायरेक्टर पद से सेवा निवृत हुए। बिज्जन (विजय) ने डॉक्टरी पास की व एक सर्जन के रूप में भारतीय सेना में कार्य करते हुए ब्रिगेडियर के पद से सेवा निवृत हुए। तीसरे पुत्र अजय ने भी इंटर होलीपुरा से किया फिर अंग्रेजी व अर्थशास्त्र में एम.ए. करने के बाद अध्यापक बने और बाद में प्रधानाध्यापक के पद से सेवा निवृत हुए । पुत्री सुधा (गुड्डी) ने होलीपुरा के बाद बी.ए. व बी.टी. किया व उनका विवाह दिल्ली के जाने माने पत्रकार श्री गोपेश मेहरा से हुआ। छोटी पुत्री लता ने एम. एस. सी. किया व फिर उनका विवाह एक इंजीनियर श्री अशोक खन्ना से हुआ जो विभिन्न इंजीनियरिंग कॉलेजों में प्रिंसिपल रहने के बाद लखनऊ आई.आई.टी. के डायरेक्टर पद से रिटायर हुए।

मैं स्वयं, अभय (बब्बू), होलीपुरा में इंटर तक पढ़ा। तत्पश्चात इंजीनियरिंग में पोस्ट ग्रेजुएशन तक किया । उत्तर प्रदेश के विदत विभाग में सहायक अभियंता के पद से नौकरी प्रारंभ करके विभाग के उच्चतम पद से सेवा विवृत हुआ । सेवा निवृत्ति के बाद भी इंस्टीटूशन ऑफ़ इंजीनियरिंग लखनऊ का चेयरमैन रहा, महामना मालवीय मिशन लखनऊ का प्रेसिडेंट रहा व आज भी विभिन्न इंजीनियरिंग व सामाजिक संस्थानों से जुडा हुआ हूँ। मैं स्वयं अपने व अपने भाई-बहनों के जीवन में सफल रहने व उपलब्धियों का श्रेय अपने माता-पिता के बाद दामोदर इंटर कॉलेज को देता हूँ, जिसने हमें उचित शिक्षा, खेल-कूद व अन्य गतिविधियों के साथ-साथ अच्छे संस्कार देकर भविष्य के लिए तैयार किया।

भूली बिसरी यादें: २] मुझे होतीपुरा की याद बराबर आती रहती है। यहाँ तक कि कभी कभी सपने में आने वाले व्यक्ति कभी होलीपुरा के तो कभी बाद के और कभी वर्तमान के होते हैं, परन्तु व्यक्ति कोई भी हो स्थान होलीपुरा का ही होता है। मैं नित्य गोल्फ खेलता हूँ तो कभी-कभी सपने में होलीपुरा परिसर व खेतों में भी स्वयं को गोल्फ खेलते देखता हूँ जबकि यही एक खेल है जो

(र.क्र. 2111)

होलीपुरा में कभी नहीं रहा।

– कोई कैसे भूल सकता है वहाँ के अध्यापकों को, यथा मोहिले साहब, चहार साहब, टंडन साहब, बैकुंठनाथ जी अस्थाना साहब, चौरंगी वाले शास्त्री जी, गौरी शंकर जी, पुरंदरे साहब आदि को । याद आता है होलीपुरा का चतुर्वेदी समाज, राय साहब, दद्दा जी और स्वर्गीय श्री शम्भू नाथ चतुर्वेदी जी जैसा व्यक्तित्व ।

– याद आते हैं उस समय के मेरे भाई–बहनों के कुछ सहपाठी व मित्र यथा राम कुमार चतुर्वेदी, रमेश चन्द्र चतुर्वेदी, अश्वनी चतुर्वेदी, दिनेश पाण्डे, कैलाश नाथ गुप्ता (KNG), ऊषा व कृष्णा चतुर्वेदी आदि। साथ ही मेरेमित्र प्रमोद (टंडन साहब का पुत्र), कप्पी (पोस्टमास्टर साहब का पुत्र), निम्मी जीजी के बच्चे रमेश, लालू, सतीश, सुधीर आदि आदि और उनके साथ की गई मस्ती।

– छटवीं कक्षा की बात है कि अध्यापक के ना रहते समय मैं चुपचाप जेब में भरे पैमदी बेर खाकर गुठली बाहर फेंक रहा था । एक बार जैसे ही गुठली फेंकी वह अचानक गलियारे से गुज़र रहे प्रिंसिपल श्री बैकुंठनाथ जी के जाकर लगी। मैं घबराया सा धीरे से खड़ा हुआ व सोचा कि आज तो बच्चू गए काम से । परन्तु वाह रे व्यक्तित्व, वे समझ गए, मुस्कुराये और आगे बढ़ गए और इस तरह बिना डांटे ही इस तरह ना करने की मुझे सीख दे गए।

बैकुंठनाथ जी ने बाद में यह भी कहा कि यही एक लड़का है जिसे मैंने छटवीं कक्षा से पढ़ाना शुरू किया और बारहवीं तक इसने मेरे साथ दिया। अन्य छटवीं वाले तो एक–एक कर पीछे छूटते चले गए, कभी अनुत्तीर्ण होकर तो कभी पढाई छोड़कर।

– याद आते हैं घर के पास वाले नीम, बबूल व बरगद के पेड़। बबूल की ऊंची डाल पर हर सावन में पड़ने वाला झूला, बरगद पर गुल्लक–डंडा खेलना, खेतों में जाकर इमली और कच्चे आम तोड़ना, खेतों पर जाकर ही चने का साग तोड़कर खाना, बाजरे की बालें भी तोड़कर व भूनकर खाना।

याद आते हैं विद्यालय के मध्यांतर में मिलने वाले देवीचरण हलवाई का चना आलू, बेनीराम, धनवंती व कैलाश की दुकानें। कैसे भूली जा सकती हैं लाइक सिंह जी की प्रसिद्द छींक या कैलाश जी का धमाकेदार पाद।

– कैसे भूल सकता हूँ सातवीं कक्षा में छोटे लाल जी का बिना बात के जब तब मुझे धौल मारना और कहना कि तेरे बाप से तो मैं इतना डरता था और तू मुझसे क्यों नहीं डरता।

याद आते हैं उस समय के कर्मचारी राम सरन, राम सनेही, सरमन, चन्दन आदि। चन्दन का अपने स्टोर में लगने वाले ताले को हिला हिलाकर देखना व फिर कुछ कदम जाकर वापिस आकर दोबारा हिला हिलाकर चैक करना और फिर जाते समय हमने बोल दिया ताला खुला है, तो फिर लौट कर चैक करना।

– होली के एक माह पहले से ही गाँव में देर रत तक चलने वाला होली गायन, टेसू और झेंझी के गीत यथा 'टेसू मेरा यहीं अड़ा, खाने को मांगे दही बड़ा' ।

– याद आती हैं नवल सिंह भदौरिया जी की कवितायें जैसे 'तन डोले, मेरा मन डोले' गीत पर बनाई पैरोडी 'पड़ा बोले पड़िया बोले, और बछड़ा न्यार न खाए अथवा मंजिल घटती गई, चल बढ़ती गई, मेरे ये पग कभी न अब तक थक पाए आदि।

उपरोक्त कवितायें, टेसू के गीत, या कुछ अन्य जैसे ' तत्तई घर मंजीरा बाजे, या इमली की जड़ में से निकली पतंग आदि को मैंने अपने जीवन में मौका पड़ते ही हर मंच पर गाया है। इसी प्रकार श्रद्धेय रविन्द्र नाथ टैगोर की प्रसिद्द कविता where the mind is without fear.... को मैंने देश–विदेश में हर मंच पर गर्व से पढ़ा है। 1958 में आदरणीय लाल बहादुर शास्त्री जी के होलीपुरा आगमन के अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम होना था। इसमें स्टेज पर इस कविता को पढने हेतु श्री बैकुंठनाथ जी द्वारा मेरे चयन किया गया व कई दिन तक एक्शन के साथ मुझे प्रैक्टिस करवाई गई। फिर मैंने शास्त्री जी के समक्ष इसे सुनाया था।

'कहाँ गया वह जीवंत भरा–पूरा छात्रावास और उसका मैस' । महाराज का तवे से उतारकर रोटी फेंकना जो पंक्ति में बैठे छात्रों की प्लेट में ही गिरती थी, देखना भी बड़ा मनोरम लगता था।

लिखने को बहुत कुछ है पर बस !

यहाँ मैं यह स्पष्ट करना चाहूँगा कि विद्यालय व होलीपुरा के सम्बन्ध में उपरोक्त अचानक आये विचार प्रवाह के अनुसार हैं न कि सुविचारित चिंतन द्वारा लिखा गया लेख । यह सब शायद उन्हीं को अच्छा लगे जो तत्कालीन समय में उसी परिवेश में थे। अन्य को नीरस लगे तो क्षमा प्रार्थी हूँ।

दामोदर कॉलेज होलीपुरा को मेरा नमन व धन्यवाद तथा साथ ही श्री दामोदर दास जी के वंशजों को भी शत–शत नमन जिन्होंने शिक्षा के विषय में सोचा और एक दूरस्थ गाँव में सुंदर विद्यालय की स्थापना की। हमारे समय में यह जिले का अद्वितीय विद्यालय था और आस–पास के गांवों व तहसील में भी तब तक कोई इंटर कॉलेज नहीं था। आशा थी कि यह उतरोत्तर आगे बढ़ेगा परन्तु ऐसा ना हो सका। जबकि एनी जगह जैसे तहसील बाह में ही स्नातक तक पढ़ाई होने लगी। कुछ वर्ष पूर्व मैंने प्रमोद टंडन, मुकेश चतुर्वेदी व कुछ अन्य ने मिलकर एक पुरातन समिति बनाई थी, रजिस्टर भी करवाई, बैठकें कीं व होलीपुरा भी गए। उद्देश्य था कि विद्यालय को हर संभव सहायता पहुंचाई जाए, परन्तु किन्हीं कारणोंवश यह भी आगे ना बढ़ सकी। मुझे अभी भी विश्वास है कि वर्तमान प्राध्यापक, मैनेजमेंट एवं चतुर्वेदी समाज, आवश्यकतानुसार पुरातन छात्रों के सहयोग से, अपनी इस विरासत को नई ऊंचाइयों तक लेजा सकेंगे। और अंत में यहीं लखनऊ में बैठे हुए और होलीपुरा गाँव की मिटटी की महक का आनंद लेते हुए अपनी कलम को विश्राम देता हूँ।

(र.क्र. 2111)

दामोदर इंटर कालेज, होलीपुरा

अतीत के झरोखे से

- डॉ. निशीथ चतुर्वेदी

वर्ष 1950-1960 के दशक में इस कॉलेज ने नये कीर्तिमान स्थापित कर आगरा जिले में अपना स्थान बना लिया था। इस बीच कई गणमान्य व्यक्ति कॉलेज में पधारे। उन लोगों की प्रतिक्रियाएँ कुछ इस तरह थीं-

The students volunteers of your college, who remained on duty in the Bateshwar Mela, were of great help to the forces of law and order in assisting them in the management of the Mela. I am taking this opportunity of expressing my deep sense of gratitude to you for giving us the help and support on this occasion.

(Comments from Senior S.P. Police, Agra 1959)

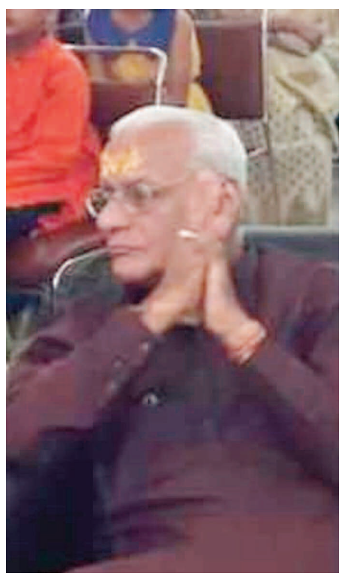

"The institution can well be placed as one of the best institutions of the District and is on its way to further progress under the patronage and guidance of the present management. The Institute is fortunate in having secured the services of Shri B.N. Chaturvedi, a young man full of energy and ideas and who is devoted to the college whole-heartedly. The progress of the institution is also due to the corporate life that the teachers of the institution lead just like members of one family. The sense of discipline prevailing both among students and teachers were really praiseworthy."

(Inspector of Schools Report – 1958)

The special feature of the college is its perfect discipline shown by the students in the classrooms, on parade ground, in college meetings, hostel kitchen and in the verandah corridors. The discipline of the college was commendable. We have no hesitation in remarking that the college is one of the best institutions of province and it will not be an exaggerations to say that it is in miniature a "Shanti Niketan" at Holipura.

(Inspector of Schools Report – 1954)

"It is the only High School that I have seen in a village."

– Shri S.K. Ghosh (Ex Director Education – UP)

"That a school of this category has grown up in the interior of countryside about 40 miles away from town, is a matter for congratulations to everyone concerned."

– Shri S.N. Kitchlu (Ex Inspector of Schools, Agra)

"The school is a veritable educational oasis in this remote area."

– Shri H.C. Salwan

(र.क्र. 2111)

(Ex Collector, Agra)

"I am not at all exaggerating when I record here that the school at Holipura will compare quite well with the best of the English preparatory schools and the German Realschules."

– Shri M.S. Sunderam (Ex Asstt. Education Commissioner, GoI)

"To me the school and the hostel at Holipura seemed to be living model of the realisation of the dream of every patriotic Indian."

– Shri K.D. Paliwal (Ex Finance Minister, UP)

"I am grateful to the manager and the Headmaster for their courtesy and kindness in showing me around and greatly appreciate their efforts to make this school a model for others to copy."

– Shri S.N. Chaturvedi

(Ex Education Expansion Officer, UP)

"I am impressed with the general training of the boys."

– Sir Francis Mudie (Ex Home Miister to the G.o.I.)

"I was much pleased with the general cleanliness, smart and healthy appearances of the students."

– Shri L.P. Mishra (Ex Member Railway Board)

"It was rather a pleasant surprise to all of us to see such a well-established institution in such interior and remote corner of the Agra District."

– Panel of Inspector, 1952

"इस विद्यालय को देखकर मुझे तक्षशिला तथा नालंदा विश्वविद्यालय का स्मरण हो आता है। वे भी इसी प्रकार के शांत तथा सुंदर वातावरण से उत्पन्न हुए थे तथा अपने सतत प्रयत्न द्वारा देश ही नहीं वरन् अंतरदेशीय विद्यार्थियोंको अपनी ओर खीचने में समर्थ हुए थे एवं भारतवर्ष का नाम सर्वत्र जगमगाया था।"

– **श्री सी.वी. महाजन**

उपकुलपति, आगरा विश्वविद्यालय

संकलनकर्त्ता डॉ. निशीथ चतुर्वेदी

साभारः कॉलेज पत्रिकाओं से

(र.क्र. 2111)

“दामोदर इंटरकॉलेज के 90 वर्ष पूर्ण”

- **हेमंत चतुर्वेदी**, बैंगलोर

सर्वप्रथम मैं आभार व्यक्त करना चाहूँगा डॉ. निशीथ का व हमारी चतुर्वेदी महासभा द्वारा प्रकाशित 'चतुर्वेदी चंद्रिका' की प्रकाशन समिति का, जिन्होंने जनवरी 2024 की पत्रिका को “दामोदर इंटर कॉलेज, होलीपुरा” के 90 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भूतपूर्व छात्रोंके लेखों पर आधारित एक विशेषांक के रूप में निकालने का निर्णय लिया।

प्रत्येक शिक्षण संस्थान 'विद्या का मंदिर' है, जहाँ से ज्ञान अर्जन करके हम अपने जीवन में सफलता के पथ पर अग्रसर होते हैं। हमारा भदावर क्षेत्र बहुत ही पिछड़ा क्षेत्र हुआ था, जब 90 वर्ष पूर्व इस कॉलेज की स्थापना करने हेतु हमारे विद्वान संस्थापकों ने विचार किया। ऐसे ज्ञानी बंधुओं को मेरा सादर नमन। इस 90 वर्ष के लंबे सफर में कितने ऐसे छात्र रहे होंगे, जिन्होंने यहाँ से ज्ञान प्राप्त कर अपना व अपने परिवार का जीवन-यापन कर अपने को सौभाग्यशाली समझा होगा। अनेकों छात्र सरकारी व निजी संस्थानों में ऊँचे-ऊँचे पदों पर स्थापित हुए होंगे और अपनी क्षमता के प्रदर्शन से स्वयं को व संस्थाको प्रगति के पथ पर अग्रसर करने में सहायक बने होंगे। इस संस्था का संचालन एकसेबढ़कर एक विद्वान प्रबंधक (प्रिंसिपल) द्वारा किया गया।जैसा कि डॉ. निशीथ ने बताया कि श्री के.पी. गोखले जी भी इसके संस्थापक प्रबंधक थे। उन सभीके अथक प्रयास व प्रगतिशील विचारों से ही यह कॉलेज ख्याति प्राप्त कर सका। पिछड़ा क्षेत्र होने के कारण छात्रों व उनके अभिभावकों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए तैयार करने में भी बड़ी कोशिश करनी पड़ी होगी।

मुझे भी इस शिक्षा संस्थान में ज्ञान प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उस समय माननीय श्री बैकुंठनाथ जी मुख्य प्रबंधक थे। उनके कुशल प्रबंधन में इस कॉलेज की ख्यातिचारों ओर फैली। विद्वान प्राध्यापकों को देखकर नए छात्रों ने प्रवेश लेना शुरू किया और कॉलेज तीव्र गति से तरक्की की ओर अग्रसर होता गया। एक विशाल हॉल तथा नए साइंस भवन का निर्माण भी हुआ।

हाई स्कूल व इंटर की परीक्षा का केंद्र बाहमें पड़ने के कारण छात्रों को वहाँ जाना पड़ता था। इस समस्या का समाधान करने के लिए प्रिंसिपल साहब ने प्रयास कियाऔर परीक्षा का सेंटर होलीपुरा में ही पड़ना शुरू हो गया। जब बाह के छात्रों को होलीपुरा आना पड़ा तो उन्होंने अव्यवस्था फैलाने की चेष्टा करना शुरू कर दिया। किंतु अपने कुशल प्रबंधन को दर्शाते हुए प्राचार्य महोदय ने इस बाधा का भी निवारण करने में सफलता प्राप्त कर ली, जिसमें हमारे तत्कालीन अध्यापक श्री रमेश चंद्र जी का भी पूर्ण सहयोग मिला।

आदरणीय बैकुंठनाथ जी के प्रबंधन काल में हमारे तत्कालीन केंद्रीय मंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री का कॉलेज में आयोजित एक प्रदर्शनी के दौरान आगमन हुआ था। केंद्रीय मंत्री श्री शास्त्री ने गाँव में बने इस कॉलेज के रख-रखाव व प्रबंधन को देखकर काफी प्रसन्नता प्रकट की व आयोजन की भूरि-भूरि प्रशंसा की और उसका पूरा श्रेय कुशल प्रबंधन को दिया।

श्री बैकुंठनाथ जी बड़े ही अनुशासन-प्रिय थे। कॉलेज में अनुशासन बनाए रखने के लिए वेसदैव बिना किसी भेद-भाव के तत्पर रहे। काम चाहे किसी भी स्तर का हो, उनकी चेष्टा रही कि अनुशासन सबके लिए सर्वोपरि हो। एक बार एक छात्र, जो कि एक माननीय संस्थापक का पुत्र था, के शरारतपूर्ण व्यवहार करने पर सुबह कॉलेज की पढ़ाई शुरू होने के पहले प्रार्थना के समय, जब सभी अध्यापक व छात्र एकत्रित होते हैं, उसे दंडित किया गया। इस कृत्य से अनुशासन का संदेश देने व अनुशासन की महत्ता का अहसास कराने की मंशा जाहिर होती है। उनके कार्यकाल में एन.सी.सी. व स्काउट की ट्रेनिंग का भी प्रबंध हुआ। एक बार हमारी स्काउट टीम बटेश्वर के मेले में कार्तिक पूर्णिमा के दिन आयोजित समारोह में भीड़ को नियंत्रित करने भी गई थी। मेला प्रशासन ने इसके लिए बड़ी कृतज्ञता प्रकट की थी।

इसके अतिरिक्त कई सांस्कृतिक आयोजन जैसे महाभारत के युद्ध का मंचन, कैंप फायर का आयोजन इत्यादि भी शुरू किये गये। अंताक्षरी प्रतियोगिता में हमारे कॉलेज की टीम को जिला स्तर तक जाने का अवसर भी प्राप्त हुआ।

और ज्यादा क्या लिखूँ? अपने सूक्ष्म ज्ञान व धुँधली होती हुई याद्दाश्त के आधार पर कॉलेज की भूली-बिसरी यादों को सँजोने की चेष्टा कीहै। मैं कोई लेखक तो हूँ नहीं, इसलिए मेरे लेखन में बहुत-सी त्रुटियाँ होंगी। अतः अपने योग्य पाठकों से इनको नजर अंदाज करने का अनुरोध करने के साथ क्षमा-याचना भी करता हूँ।

(र.क्र. 2111)

होलीपुरा गाँव का गौरवशाली पहचान

समाज के लिए बहुमूल्य धरोहर--दामोदर इंटर कॉलेज

- मुनीन्द्र नाथ चतुर्वेदी, भूतपूर्व छात्र (1956-64)

दामोदर इंटर कॉलेज, होलीपुरा ग्राम के सुरम्य वातावरण में आगरा से इटावा तक की 110 किलोमीटर भदावर क्षेत्र में प्रथम इंटरमीडिएट कॉलेज बना देश की आज़ादी के साथ साथ। क्षेत्र के समग्र विकास के लिए इस कॉलेज का बहुमूल्य योगदान है। इस कॉलेज के अद्वितीय कार्यकलापों के लिए विद्वानों ने इसे 'मिनी शांति-निकेतन' की उपाधि से सम्मानित किया है। उत्तर प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री श्री गोविन्द वल्लभ पन्त वर्ष 1952 में दामोदर इंटर कॉलेज पधारे। उनके अलावा श्री कमलापति त्रिपाठी, सम्पूर्णानन्द वर्मा, चन्द्रभानु गुप्ता आदि ने इस कॉलेज को व्यक्तिगत रूप से पधार कर अपना आशीर्वाद दिया। पूर्व प्रधान मंत्री एवं तत्कालीन उद्योग मंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री भी दामोदर कॉलेज के रजत जयंती स्थापना दिवस के कार्यक्रम में 1958 में पधारे थे। इस कॉलेज के स्थापना दिवस के कार्यक्रम में, जो सदैव धनतेरस वाले दिन होता रहा है, एक अद्वितीय ड्रामा के कार्यक्रम के साथ समापन होता था। इस ड्रामा कार्यक्रम के आयोजन के लिए भारत के बिक्री और आयकर के सबसे प्रतिष्ठित वकील कक्का खड़गराम जी विशेष रूप से कलकत्ता से इसे निर्देशन, पटकथा लेखन तथा पात्रों के चयन तक में मुख्य निर्णायक होते थे। पूरा भदावर क्षेत्र इस ड्रामा के लिए विशेष रूप से प्रतीक्षारत रहता था। जिन्होंने भी यह ड्रामा देखा है वे बता सकते हैं कि कैसे स्टेज पर चलता हुआ रथ, कर्ण के तीर से निकलती हुई जल धारा, भीष्म के शर-शैय्या पर से संवाद आदि – क्या क्या लिखूं।

आज जब दामोदर अन्तर कॉलेज की ऐतिहासिक यात्रा के 90 वर्ष पूर्ण करने पर लिखने बैठा तो इस दामोदर मेमोरियल स्कूल की 1933 में स्थापना से स्वयं को काफी हर्ष के साथ जुड़ा पाता हूँ। दामोदर मेमोरियल स्कूल के प्रथम प्रधानाध्यापक श्री के. पी. मोहिले के श्री चरणों में नमन करना परम कर्तव्य है जिसकी वजह से मेरे पिताश्री स्व त्रिपुरारी लाल जी इस स्कूल में अध्ययन करके गाँव के प्रथम व्यक्ति हुए जिन्होंने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से प्री-यूनिवर्सिटी कोर्स (PUC- हाई स्कूल के समकक्ष) द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण किया। श्री मोहिले साहब ने आठवीं पास करने के बाद, आगे शिक्षा का साधन न होने पर स्वयं से प्रेरणा देकर गाँव के पांच बालकों का PUC का फॉर्म प्राइवेट छात्र के रूप में भरवाया। छात्रों में मेरे पिताजी स्व त्रिपुरारी लाल जी, श्री बालकृष्ण जी (मंडी वाले), श्री भोजराज जी (बीच का मोहल्ला) और शिबू लाला थे। मात्र तीन लोग परीक्षा देने गए थे। हमारे परिवार या खानदान से कोई भी किसी बोर्ड या बाहरी परीक्षा देने भी नहीं गया था। पिताजी श्री के. पी. मोहिले जी के इलाहाबाद विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार रहने तक, ग्राम से कलकत्ता आते- जाते ब्रेक-जर्नी करके चरण स्पर्श करके आशीर्वाद लेने जाते रहे। मैं स्वयं आदरणीय मोहिले जी के पुत्र अजय मोहिले से, जो जे.के. एल्युमीनियम की दुर्गापुर फैक्ट्री में काफी उच्च पद पर थे अपने लिए दामोदर कॉलेज से बारहवीं उत्तीर्ण करके नौकरी के लिए मिला था।

अब जब कॉलेज के बारे में लिखने लगा तो सोचा कि अपनी जानकारी में जो भी सफल तथा कॉलेज की ख्याती में योगदान देने वाले छात्र रहे हैं उनका भी स्मरण कर लूं। इनमें सर्वप्रथम स्व भरत भाई साहब (सुपुत्र स्व जस्टिस बृजकिशोर चतुर्वेदी (bar-at-law), न्यायाधीश मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय जबलपुर) द्वारा बताया गया कि उनके साथ कक्षा छटवीं में, श्री मृगेंद्र नाथ जी, चेयरमैन एम.पी. रेवेन्यु बोर्ड (मुख्य सचिव के समकक्ष), श्री फणीन्द्रनाथ जी डायरेक्टर जनरल पुलिस, मध्य प्रदेश के पद से सेवा निवृत हुए। आदरणीय श्री जयेंद्र नाथ जी (जिन्हें भोले बाबू के नाम से जाना जाता है) डायरेक्टर जनरल, उत्तर प्रदेश पुलिस तथा चेयरमैन यूपी पीएससी के पद से सेवा निवृत हुए। आप दामोदर कॉलेज से प्रथम आई पी एस बने एवं दिल्ली के पहले पुलिस कमिश्नर भी रहे, भोले बाबू ने दामोदर स्कूल से दसवीं कक्षा पास की थी।

कुछ और यशस्वी लोगों की बात करें तो डॉ सतीश चन्द्र चतुर्वेदी जी, सबसे कम उम्र में, मात्र 33 वर्ष की आयु में महाराष्ट्र सरकार में उपमंत्री बने और बाद में महाराष्ट्र सरकार में कई विभागों के कैबिनेट मंत्री रहे। आप नागपुर की एक महत्वपूर्ण विधान सभा क्षेत्र से पांच बार विजयी हुए। श्री सतीश चन्द्र चतुर्वेदी जी, इस

(र.क्र. 2111)

विद्यालय से निकले पहले डी–लिट हैं। आप अपने स्वयं स्थापित किये 25 विद्यालयों–तकनीकी और फार्मेसी की स्थापना का श्रेय बाबू दामोदर दास जी से मिली प्रेरणा को देते हैं। डॉ सतीश चन्द्र चतुर्वेदी पिछले 24 वर्षों से श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के संरक्षक हैं। आप को कॉलेज तथा होलीपुरा ग्राम से विशेष लगाव है।

आदरणीय बैकुंठनाथ जी, हिन् को सभी ग्राम वासी मोहिले साहब के बाद इस कॉलेज की प्रतिष्ठा के लिए श्रेय देते हैं, उनके दोनों पुत्रों ने चिकित्सा के क्षेत्र में खूब नाम कमाया है। डॉ. अनिल जी, ऑस्ट्रलिया के पास बसे एक देश नारू में राष्ट्रपति के स्वास्थ्य सलाहकार रहे। आप को तमाम राष्ट्रीय तथा राज्य स्तरीय संस्थानों द्वारा अभी तक 12 बार सम्मानित किया जा चुका है। आपने स्वास्थ्य के क्षेत्र में अपने अनुबवों को कई पुस्तकों में समाने का भरसक प्रयास किया है।

श्री बैकुंठनाथ जी के द्वितीय पुत्र निशीथ दामोदर कॉलेज में मेरे कक्षा छठी और सातवीं के सहपाठी रहे। डॉ निशीथ जी देहली के एक मात्र शासकीय वी.आई. पी. हॉस्पिटल डॉ राम मनोहर लोहिया हॉस्पिटल के साढ़े छह वर्ष के लम्बे समय तक मेडिकल सुपरिन्टेन्डेन्ट के पद पर रहे और साथ ही डॉ. राम मनोहर लोहिया पी जी आई हॉस्पिटल के फाउंडर डायरेक्टर तीन वर्ष रहे। आप ने समाज सेवा के कई कीर्तिमान स्थापित किये हैं।

श्री प्रभास पांडे जी मेजर जनरल के पद से सेवा निवृत हुए तथा इसी परिवार से श्री कृष्णा कान्त जी ब्रिगेडियर के पद से सेवा निवृत हुए । इसी कॉलेज से अध्ययन कर के निकले अश्वनी भाई साहब ने बैंकिंग के क्षेत्र में तो नाम किया ही, साथ ही आप आगरा क्षेत्र के अब तक के एकमात्र क्रिकेट खिलाडी हैं जो भारतीय क्रिकेट टीम का हिस्सा बने। इसी विद्यालय से पढ़कर निकले श्री अशोक चतुर्वेदी (भाई साहब के नाम से विख्यात) भारत के सबसे प्रमुख कंपनी ल्युमक्स लिमिटेड के डायरेक्टर बने।

मेरे दोनों चाचाजी श्री द्वारिका नाथ जी तथा श्री हरिहर नाथ जी, (जो दामोदर कॉलेज के छात्र रहे) ने अपने अपने क्षेत्र यानि शिक्षा और इन्शुरेन्स में खूब नाम कमाया। श्री द्वारिका नाथ जी भारत के सर्वोत्तम स्टैंडिंग वाले कान्वेंट स्कूल, La Martinier School, कलकत्ता में हिंदी के मुख्य अध्यापक रहे। आपके छात्रों में विजय माल्या, खेतान, बिरला, एशियाई चैंपियन महिला तैराक, भारत के टेनिस कप्तान और अन्य प्रसिद्द खिलाड़ी रहे। श्री द्वारिका नाथ जी ने बताया था कि La Martinier School में जो कुछ देखा है वह सभी कुछ दामोदर इंटर कॉलेज में पहले से ही लागू किया गया था। छात्र के सर्वांगीण विकास के लिए सर्वोच्च अनुशासन, समय की पाबन्दी, सामूहिक भोजन – प्रीती भोज, वाद–विवाद प्रतियोगिता, श्रमदान, खेल प्रतियोगिताएं, स्काउटिंग, विभिन्न विषयों पर ज्ञान वर्धक भाषण, वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन और अन्य बहुत कुछ जो किसी भी व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है। श्री हरिहर नाथ जी ने अपने कैरियर की शुरुआत इंश्युरांस कंपनी के एजेंट के रूप में शुरू की और बाद में ओरिएण्टल फायर एंड जनरल इंश्युरांस कंपनी में में रीजनल मैनेजर के पद से सेवा निवृत हुए।

इस स्कूल में एकमात्र ऐसे छात्र थे दद्दा केदारनाथ जी, जिन्होंने स्वर्णिम काल के दोनों विशेष व्यक्तित्व श्री के.पी. मोहिले जी तथा श्री बैकुंठनाथ नाथ जी के प्रधानाचार्य पद पर रहते हुए – हाई स्कूल तथा 12 वीं यानी इंटरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण की। आप सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया में रीजनल मैनेजर के पद से सेवा निवृत हुए। आप श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के सभापति भी रहे।

श्री त्रिभुवन नाथ जी, सुपुत्र श्री केदार नाथ जी, ने चार्टर्ड अकाउंटेंट (CA) की परीक्षा पास करके श्री विद्याभास्कर जी स्थापित चतुर्वेदी एंड कंपनी का कार्यभार दिल्ली में संभाला। आप इलाहबाद बैंक, पंजाब नेशनल बैंक तथा स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया के डायरेक्टर रहे तथा आज आप सी ए के क्षेत्र में जाना –माना नाम हैं। श्री विद्याभास्कर जी भी इस दामोदर इंटर कॉलेज में अध्ययन करके सीए बने और चतुर्वेदी & कंपनी की स्थापना की। आज जो भी बड़े उद्योग हैं, एक समय पर सभी के सलाहकार मंडल में आप एक प्रख्यात व्यक्तित्व होने के साथ साथ इन कंपनियों के सीए थे। आपको पश्चिम बंगाल सरकार ने भी सम्मानित किया।

इस कॉलेज के एक और विद्यार्थी थे डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी, जो चतुर्वेदी समाज की 100 वर्ष पुरानी प्रमुख संस्था के सभापति, भारत के सर्वश्रेष्ठ अस्पताल ऑल इंडिया इंस्टिट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेज (AIIMS) के प्रोफेसर के पद से सेवा निवृत हुए हैं।

इस स्कूल के छात्र रहे तमाम अन्य लोगों को इतने छोटे से लेख में लिखना संभव नहीं है। चतुर्वेदियों के अलावा एक और नाम है जिसकी चर्चा यहाँ करना आवश्यक है। वो नाम है श्री विजय सिंह चौहान जिन्हें तेहरान एशियाई खेलों में सबसे कठिन डेकाथलान प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीतने पर 'Iron man of Asia' के सम्मान से अलंकृत किया गया। श्री विजय सिंह भदौरिया ने में मध्य प्रदेश में कई स्कूलों की स्थापना कर के श्रृंखला बनाई। अपने आपको दामोदर इंटर कॉलेज का तथा इसके अध्यापकों का अत्यंत ऋणी हूँ जिनकी वजह से मुझे सदैव नया सीखने की लगन तथा प्रेरणा मिली। दामोदर इंटर कॉलेज से शिक्षित विद्यार्थियों ने विभिन्न क्षेत्रों में ख्याती अर्जित की है।

मेरे तथा परिवार के ऊपर, बाबू दामोदर दास जी द्वारा, देश की गुलामी के समय स्कूल स्थापित करने का बड़ा उपकार है। अतः ऐसे देवतुल्य दूरदर्शी आत्मा को सादर नमन।

पुनः सभी आदरणीयों को नमन

(र.क्र. 2111)

भदावर का शान्ति निकेतन-दामोदर इण्टर कालेज

- अशोक चतुर्वेदी, होलीपुरा/फरीदाबाद

क्षेत्र में फैली गरीबी और बेरोज़गारी के उन्मूलन के लिए शिक्षा और शिक्षण संस्थान ही एकमात्र उपाय है, बिना शिक्षा के जीवन अर्थहीन और दिशाहीन हो जाता है₹ निश्चित रूप से यही विचार एक शताब्दी पूर्व परम श्रद्धेय स्व० श्री दामोदर दास जी और स्व० राधेलाल जी वकील साहब के मस्तिष्क में रहे होंगे। उसी भावना से इस विद्यालय की आधारशिला रखी गई और सन १९३२ में पाठ्यक्रम का आरंभ हुआ फलस्वरूप इस पूरे क्षेत्र की काया पलट गई। इस अद्वितीय संस्थान के संस्थापकों को साधुवाद देना तो महज एक औपचारिकता होगी,हम सभी क्षेत्रवासी और उनकी आने बाली पीढ़ियां उन महान पवित्र आत्माओं ऋणी रहेंगे जिनके उच्च विचारों के कार्यान्वयन से पूरे क्षेत्र का शैक्षिक और मानसिक विकास हुआ है। यह कल्पना भी नहीं की जा सकती है कि यदि यह विद्यालय नहीं होता तो यहां के अधिकतर निवासियों का भविष्य क्या होता। आदरणीय के०पी० मोहिले जी, आदरणीय बैकुंठ नाथ जी जैसे अन्य प्राचार्य और सभी आचार्य श्रद्धा के पात्र हैं जो स्थापना से लेकर आजतक संस्था से जुड़े हैं और जिन्होंने क्षात्रों को उनके जीवन के हर क्षेत्र में सर्वोत्तम तरीके से मार्ग दर्शन किया है मैंने भी कक्षा ६ से लेकर कक्षा १२ तक यहां शिक्षा प्राप्त की है। संपर्क में आए गुरुजनों के व्यक्तित्व ने मुझे जीवन जीने की प्रेरणा दी है उनमें श्री कैलाश नाथ गुरु जी,पं० कुंजविहारी लाल शास्त्री जी, जसवंत सिंह जी, नवल सिंह जी,कपूर साहब, राम नारायण भारतेन्दु जी,विज्ञान संकाय के तिवारी जी,सिंघल साहब, दिनेश चतुर्वेदी जी, प्रेमचन्द शर्मा जी, हरिओम गुप्ता जी जैसे अन्य सभी गुरुजनों को मैं अंतर्मन से प्रणाम करता हूं। कालेज में कई अच्छे संस्मरण अभी भी याद आते हैं। उन दिनों पंद्रह अगस्त, छब्बीस जनवरी के अलावा सभी उत्सव जैसे गीता जयंती, जन्माष्टमी,शिक्षक दिवस,बसंत पंचमी आदि भी बड़े उल्लास के साथ मनाये जाते थे। श्री नवल सिंह जी पर इनके आयोजन का दायित्व रहता था। वे सभी क्षात्रों को इस में भाग लेने के लिए उत्साहित भी करते थे, एक ऐसे ही समारोह में मेरे सहपाठी ने उत्साह में भाषण के लिए अपना नाम लिखवा दिया। भाषण लिख लिया गया, अच्छी तरह से रट्टा भी लगाया गया और यह सलाह भी दी गई कि कहीं बीच में भूल न जाएं सो लिखा भाषण भी साथ रखना। मेरे मित्र ने भाषण शुरू कियाः आदरणीय प्रधानाचार्य जी, गुरुजनों को प्रणाम! और इसी के साथ उनकी आवाज भी मंद होती गई और उन्होंने पूरा भाषण मन में पढ़कर अंत में पूरा जोर लगाकर धन्यवाद कहा। पूरे हॉल में तालियां बजीं और ठहाके लगे।

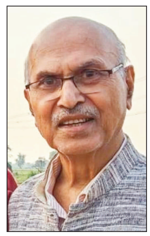

एक और दृश्य नहीं भूला जा रहा है,जब पैनल इंस्पेक्शन चल रहा था। पैनल इंस्पेक्शन के समय कालेज में सफाई और अनुशासन का स्तर किसी भी सैनिक छावनी से कम नहीं होता था। गुरुजन भी आश्वस्त कर लेते थे कि उस दिन क्या पढ़ाया जाएगा, उसका रिहर्सल भी करवा देते थे।श्री नवल सिंह जी मास्साब उस दिन हमारे क्लास में ₹सुमित्रानंदन पंत और छायावाद₹ पढ़ा रहे थे, पैनल से एक सदस्य क्लास में आए , क्लास की पिछली सीट पर बैठ गये तो उत्साह और बढ गया। इंस्पेक्टर साहब प्रभावित थे, मास्साब ने पंत जी का उद्धरणः₹ छोड़ द्रुमों की मृदु छाया,तोड़ प्रकृति से भी माया₹ जब तक पढ़ पाया , इंस्पेक्टर साहब क्लास से उठकर चल दिए पर मास्साब भी कहां चूकने बाले थे,वे भी तेजी से लपके और क्लास के दरवाजे पर पहुंच गए, देखा कि इंस्पेक्टर साहब बरामदे में ही जा रहे हैं तो उन्होंने बड़ी ऊंची आवाज में

बाले! तेरे बाल–जाल में कैसे उलझा दूँ लोचन? उद्घोष कर विजयी मुद्रा में अपनी जगह पर बापस आगये और हम सभी क्षात्रों को गर्व का एहसास कराया। कालेज में स्पोर्ट्स डे भी मनाया जाता था,उस दिन नाश्ते में उबले चने और आलू नहीं बल्कि छिलीभुनी मूंगफली और इलाइची दाने मिलते थे। जूनियर क्लासेज के छात्रों में बांटने का दायित्व श्री जसवंत सिंह जी और कपूर साहब का होता था। उस पंक्ति के छात्र अपने को ठगा महसूस करते थे जिसमें कपूर साहब बांट रहे होते क्योंकि एक तो उनके हाथ छोटे थे और वे मितव्ययी भी थे जबकि जसवंत सिंह जी उदार मन से मुठ्ठी भर कर देते थे। संस्मरण तो बहुत है, पर पुनः मुख्य विंदु पर आते हैं जिन कारणों से अपने विद्यालय को यह गौरव प्राप्त हुआ। विद्यालय की छवि प्रधानाध्यापक के कुशल नेतृत्व, अध्यापकों द्वारा प्रभावी शिक्षण प्रदान करना, कक्षा में व्यवस्था और कैंपस में अनुशासन बनाए रखना कर्मचारी वर्ग में सहयोग की भावना एवं छात्र–छात्राओं की पाठ्यक्रम तथा पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में विशिष्ट उपलब्धियों आदि पर समुचित ध्यान रखने से बनती है और इस छवि को बनाने में सभी प्रधानाचार्यो और आचार्य गणों ने अपना सम्पूर्ण सहयोग दिया है। श्री बैकुंठ नाथ जी का कार्यकाल सर्वश्रेष्ठ स्वर्णिम काल कहा जाता है।श्री मोहिले साहब के समय में मैं संभवतः प्राईमरी स्कूल में रहा हूंगा पर जैसा मैंने सुना है,श्री मोहिले साहब ने अपने कार्यकाल में संपूर्ण समर्पण के साथ विद्यालय को गति प्रदान की थी।

आगरा से लेकर कानपुर तक किसी विद्यालय में इतने सुंदर भवन,खेल के मैदान , छात्रावास और विज्ञान प्रयोगशालाऐं नहीं होंगी जितने दामोदर इंटर कालेज में है । जिस विद्यालय का अवलोकन प्रदेश के कई मुख्यमंत्री, केंद्र के मंत्री कर चुके हों,जिस संस्थान का नाम पूरे प्रदेश सम्मान के साथ लिया जाता हो उसे शिक्षा के उच्च स्तरीय पठन– पाठन की मान्यता नहीं मिल सके यह निश्चित ही चिंता का विषय और विचारणीय समस्या है। इस उदासीनता पर गंभीरता से ध्यान देने की जरूरत है।

प्रभु से प्रार्थना है कि मेरे प्रिय कोलेज को शिक्षा और अनुशासन के क्षेत्र में सर्वोच्च शिखर पर पहुंचाए और विश्वास है कि वह दिन भी बहुत दूर नहीं है । अपने विद्यालय के उज्जवल भविष्य की निश्चितता के साथ मेरी हार्दिक शुभकामनाएं!

(र.क्र. 2111)

दामोदर इंटर कॉलेज की स्थापना दिवस के अवसर पर

- डॉ. बीना चतुर्वेदी

सर्वप्रथम दीर्घदृष्टा महापुरुष के श्री चरणों में मैं वंदन करती हूँ। नब्बे वर्ष पूर्व दामोदर दास चतुर्वेदी ने जिस बीज को बोया था, आज वह ज्ञान का विराट वृक्ष बनकर पल्लवित हो रहा है। दासता के उस कालखंड में गाँव के भावी सपनों को हृदयस्थ करते हुए ही उन्होंने इस शिक्षण-संस्थान की स्थापना की होगी। ऐसे उदार-चरित महानुभाव के देखे हुए सपने को साकार करने में कितने ही शिक्षाविदों ने अपने ज्ञान और पुरुषार्थ को लगा दिया होगा। उन अनगिनत महापुरुषों के पुरुषार्थ के परिणामस्वरूप अभी तक असंख्य बालक-बालिकाएँ इस विशाल वट-वृक्ष की छाया में ज्ञानार्जन कर रहे हैं। मैं मानती हूँ कि यह कॉलेज असंख्य लोगों की तपस्या का परिणाम तथा हमारे गाँव की विरासत और पहचान है। बहुत संभव है कि दामोदर दास चतुर्वेदी जी का यह मानना रहा हो कि पढ़ाई के साथ-साथ बच्चे शारीरिक रूप से भी हृष्ट-पुष्ट हों, अतः छात्रों के खेलने-कूदने के लिये कॉलेज में बड़े-बड़े मैदान बनाये गये थे, जिनमें फुटबॉल, वॉलीबॉल, बास्केटबॉल, बैडमिंटन, हॉकी, क्रिकेट, कबड्डी, तीरंदाजी, लंबी कूद, ऊँची कूद आदि न मालूम कितने खेलों का अभ्यास कराया जाता था। प्रातः स्मरणीय को इस संसार से विदा हुए एक लंबा अरसा बीत गया, मगर उनके द्वारा बनाया गया यह कॉलेज आज भी अपना सिर उठाए खड़ा है। इस शिक्षण-संस्थान के माध्यम से लाखों लड़के-लड़कियों की जिंदगी सँवर गई। हम सबके मन-मानस में वे अब भी जीवित हैं, और रहेंगे।

इस शिक्षण-संस्थान की नब्बे वर्ष की यात्रा में यहाँ से पढ़कर निकले लोगों ने विभिन्न क्षेत्रों में अपना योगदान दिया है, और दे रहे हैं। कोई डॉक्टर बना, कोई इंजीनियर, कोई प्रोफेसर और कोई शिक्षक कुछ सिविल सेवा में गये तो कुछ सेना और पुलिस में बड़े-बड़े ओहदों तक पहुँचे। मगर वह लोग जब अपना परिचय देते होंगे तब उसकी शुरुआत दामोदर इंटर कॉलेज के नाम से होती होगी।

सन 1958 में जब कॉलेज में बैकुंठनाथ चतुर्वेदी जी प्राचार्य थे, तब इस कॉलेज का रजत जयंती समारोह बहुत धूम-धाम से मनाया गया था। कई दिनों तक चलनेवाले इस समारोह को आकर्षक बनाने के लिए बाहर से बुलाये गये कलाकारों ने उत्कृष्ट सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में स्वर्गीय लालबहादुर शास्त्री जी आये थे। उसी वर्ष मैंने इस कॉलेज की छठी कक्षा में प्रवेश लिया था तथा छिटपुट कार्यक्रमों में भाग भी लिया था। उस समारोह की भूली-बिसरी यादें अभी तक मेरे मन-मस्तिष्क में कुलबुलाती

(र.क्र. 2111)

DAMODAR INTER COLLEGE
तमसो मा ज्योतिर्गमय
HOLIPURA, AGRA

रहती हैं।

मैं पाँच वर्ष तक इस कॉलेज में अध्ययनरत रही। दसवीं कक्षा के उपरांत मेरी संपूर्ण शिक्षा विभिन्न विश्वविद्यालयों से स्वपाठी छात्रा के रूप में हुई। मेरी जिंदगी को सँवारने में इस शिक्षण संस्थान ने नींव की ईंट का कार्य किया।

आज साठ वर्षोपरांत भी जब मैं कॉलेज की मधुर स्मृतियों की पोटली खोलकर बैठती हूँ तो ऐसा अनुभव करती हूँ, मानो ये कल की ही बातें हों। कॉलेज से जुड़ी अनगिनत बातें हैं, जो मन-मस्तिष्क में प्रफुल्लता का संचार करती हैं। हम लोग अपने इस कॉलेज के लिये कहते थे कि यह शांति निकेतन का छोटा रूप है। ऐसा सोचना और कहना अतिशयोक्ति भी नहीं थी।

तात्कालिक समय में जब हमारा कॉलेज अपना सिर उठाये बुलंदियों को छू रहा था और बाहर से आने वाले लोग इस कॉलेज को देखते थे, तब अनायास ही उन लोगों के द्वारा एक ही प्रश्न उठाया जाता था, "क्या यह कॉलेज इंटर तक ही है ? इसे देखकर तो ऐसा अनुभव होता है मानो विश्वविद्यालय की इमारत हो।" हाँ, सब ठीक ही कहते थे, हमारा कॉलेज ऐसा ही तो था।

न मालूम ऐसी कौन-सी परिस्थितियाँ पैदा हुईं जिनके परिणामस्वरूप इसकी हालत दिन-प्रतिदिन गिरती ही चली गई। होलीपुरा जाऊँ और कॉलेज का चक्कर न लगाऊँ, ऐसा तो हो ही नहीं सकता था। एक बार जब मैं वहाँ गई थी, तो कॉलेज की दयनीय स्थिति को देखकर मन विचलित हो गया था। उसके बाद कॉलेज की ओर जाने की इच्छा नहीं हुई।

गत नवंबर में अखिल भारतीय माथुर चतुर्वेदी महासभा की कार्यकारिणी की बैठक होलीपुरा में हुई, तब मैं गाँव गई थी। हालाँकि कार्यकारिणी की बैठक से मेरा कोई लेना-देना नहीं था। बस, सब लोगों से मिलने की उत्कंठा थी। कॉलेज की स्थिति को जानने की उत्सुकतावश कई लोगों से बातचीत की तो मालूम हुआ कि अब कॉलेज की स्थिति में लगातार सुधार हो रहा है। प्राचार्य महोदय की प्रशंसा सुनने के बाद उनसे मिलने और कॉलेज को देखने की उत्कंठा बलवती होने लगी। मैंने प्राचार्य महोदय के पास संदेश भेजकर उनसे मिलने का समय माँगा। मैं कॉलेज के शिक्षकों और छात्रों से भी मिलना चाहती थी। अतः उन्होंने अगले दिन प्रातःकाल प्रार्थना-स्थल पर पहुँचने का समय मुझे दिया।

प्राचार्य महोदय, शिक्षक-शिक्षिकाओं एवं छात्र-छात्राओं से मुलाकात करके मन को काफी संतोष हुआ। मैंने स्वरचित लगभग एक दर्जन पुस्तकें कॉलेज पुस्तकालय के लिए उन्हें भेंट कीं। बच्चों को संबोधित करते हुए मेरा मन-मानस प्रफुल्लित हो रहा था। बच्चों ने भी बहुत शांतिपूर्वक मुझे सुना। हालाँकि प्राचार्य महोदय से बातचीत करने के लिए मुझे कुछ मिनटों का ही समय मिला, मगर उनसे मिलने के बाद ऐसा अनुभव हुआ कि कॉलेज के प्रति उनका बहुत लगाव है और बहुत कुछ करने की उनकी लालसा है। वहाँ के माहौल को देखकर समझ में आया कि वह अपनी शक्ति और अधिकारों के प्रति पूर्णरूपेण सजग हैं और उसके अनुसार कार्य कर रहे हैं। उनकी कर्मठता और लगन को देखकर अनुभव हुआ कि ऐसे प्राचार्य के होने से कॉलेज को जीवनदान मिल गया है। हालाँकि, अब भी एक प्रश्न बार-बार मन में उठ रहा है कि क्या हमारा कॉलेज पुनः अपने पुराने स्वरूप में आ सकेगा। शायद हाँ, आवश्यकता है तो बस कोशिश करने की और सबसे सहयोग मिलने की। कोशिश करने पर क्या नहीं हो सकता। भाई गौतमजी के द्वारा स्थापना दिवस समारोह संपन्न किया जा रहा है, जो एक शुभ संकेत है। मुझे उम्मीद है कि अब हमारा कॉलेज निरंतर उन्नति के पथ पर अग्रसर होता रहेगा।

तात्कालिक समय में कॉलेज में प्रति वर्ष दामोदर जयंती का कार्यक्रम बहुत श्रद्धा के साथ मनाया जाता था। उस समय नवल सिंह भदौरिया हिंदी शिक्षक थे। उन्होंने जयंती के शुभ अवसर पर अपनी भावनाओं को लय की कड़ियों में पिरोकर एक गीत लिखा था। उस गीत की शब्दाभिव्यक्ति एवं भावाभिव्यक्ति अत्यन्त प्रशंसनीय है। मैं नवल सिंह भदौरिया जी की लेखनी को नमन करती हूँ। इस गीत के माध्यम से छात्र-छात्राओं के द्वारा महामना के चित्र पर श्रद्धा-सुमन अर्पित कराये गये थे। श्रद्धा-सुमन अर्पित करने वालों में से एक मैं भी थी। वह सुमधुर गीत आज भी मुझे कंठस्थ है। उसे पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर रही हूँ-

जयति जय धनपति विभो,
जय हो तुम्हारी सर्वदा।
तव नाम सार्थक दाम-ओदर,
है उदर में धन महा।
औदार्य से परिपूर्ण मानव,
है सदा विभ वेश का।
हित साधना में नित प्रजा के,
द्रव्य जिसका व्यय हुआ।
आदर्श सबके नित रहो,
हे पूज्य स्वामी दीन के।
शिक्षित किया तुमने सभी को,
पाठशाला खोल के।
हे पुण्य आत्मा आज तुमको,
सिर हमारा झुक रहा।
पद-कमल पावन पूजने को,
लुब्ध मन है हो रहा।
है और कुछ साधन नहीं,
हे देव, तेरे पूजने का।
बस कर रहे अर्पित सुमन ही,
ग्राह्य हो हे देवता।
जयति जय धनपति विभो...

(र.क्र. 2111)

बसंत पंचमी पर्व
(प्राकृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक महत्व)

- इं. शिखर चतुर्वेदी, इटावा

'सर्दी को तुम दे दो विदाई बसंत की अब ऋतु है आई,
फूलों से खूशबू लेकर महकती हवा है आई,
बागो में बहार है आई भवरो की गुनगुन है आई,
उड़ रही है पतंग हवा में जैसे तितली यौवन में आई, देखो अब बसंत है आई।

बसंत ऋतु के आगमन के साथ ही प्राकृति का कण-कण खिल उठता है। हम इंसान ही क्या धरती के प्रत्येक प्राणी चाहे वह पशु-पक्षी हो या छोटे जीव सभी उमंग से भरने लगते है 'यह शायद इस ऋतु का प्रभाव ही है। यो तो सभी ऋतुओं अपना अलग-अलग महत्व होता है। सभी ऋतुएँ हमे कुछ ना कुछ देकर जाती है। परन्तु इस ऋतु का तो कहना ही क्या है। इसे हम आम शब्दो मे बया नही कर सकते है। ना जाने इस ऋतु पर कितने गीत, कविताए, लेख लिखे जा चुके है। परन्तु यह कम ही लगते है इस ऋतु की प्रशंसा में। यो तो माघ हीना ही उत्साह देने वाला ही होता है, पर बसंत पंचमी का पर्व भारतीय जन-जीवन को अनेक प्रकार से प्रभावित करता है। हमारे देश में प्राचीनकाल से ही इस ऋतु को ज्ञान और कला की देवी माँ सरस्वती का जन्मदिवस भी माना जाता है। जो शिक्षाविद भारत और भारतीयता से प्रेम करते है वे इस दिन माँ शारदे की पूजा करते है तथा और अधिक ज्ञानवान होने की प्रार्थना करते है। वैसे इसको (ऋतुराज) भी कहा जाता है यानि ऋतुओं का राजा। भारत की प्रसिद्धि का कारण उसकी प्राकृतिक शोभा है। लोग अपने को धन्य मानते है जो वहाँ पर रहते है। यहाँ की प्राकृतिक सुन्दरता और ऋतुओं का आवागमन इस देश को और विशष बनाता है। ये ऋतुएँ एक एक करके आती है और भारत

माता को श्रृंगार करती है और चली जाती है।

बसन्त ऋतु का प्राकृतिक महत्व तो है ही वरन धार्मिक महत्व भी बहुत है। यह पर्व हमें अतीत की अनेक प्रेरक घटनाओं का स्मरण कराता है। त्रेता युग में जब रावण द्वारा सीता जी का हरण किया तब श्रीराम उनकी खोज में दक्षिण की ओर बढे। इसमें जिन स्थानों की ओर वे गये, उसमे दण्डकारण्य भी था। यही शवरी नामक एक भीलनी भी रहती थी। श्रीराम उसकी कुटिया में गये तो वह अपनी सुध-बुध खा बैठी और वह चख-चखकर अपने जूठे मीठे बेर श्रीराम को खिलाने लगी। प्रेम में पगे जूठे बेरो को श्रीराम ने बहुत प्रेम से ग्रहण किया। दंडकारष्य का वह क्षेत्र इन दिनो गुजरात के डांग जिले में है, जहाँ शबरी माँ का आश्रम था। बसंत पंचमी के दिन ही यहाँ श्रीरामचन्द्र जी आए थे। आज भी उस क्षेत्र के वनवासी एक शिला की पूजा करते है क्योंकि उनकी श्रद्धा है कि श्रीराम यही पर बैठे थे। यही पर शबरी माता का एक मंदिर भी है। यहाँ 10 से 12 फरवरी तक शबरी कुंभ का आयोजन होता है।

बसंत पंचमी का प्राकृतिक तथा धार्मिक महत्व के साथ ऐतिहासिक महत्व भी बहुत है। इस ऋतु मे हमारे मन मे उल्लास और उमंगे तो रहती ही है, परन्तु यह ऋतु हमें उन वीरों का भी स्मरण कराती है जो अपने देश के लिए शहीद हो गए। गुरू रामसिंह कुका जो स्वदेशी नारी उद्धार, अंतजातीयो विवाह, सामूहिक विवाह पर बहुत जोर देते थे। उन्होने सर्वप्रथम अंग्रजी शासन का बहिष्कार कर स्वतंत्र ड़ाक और प्रशासन व्यवस्था चलायी थी। उस समय मकर संक्रांति पर भैली गाँव में मेला लगता था। 1872 में मेले में आत समय उनके एक शिष्य को मुस्लिमो ने घेर लिया। उन्होने उसे पीटा और गौवध कर उसके मुँह मे गौमांस तूस दिया। यह सुनकर गुरू रामसिंह के शिष्य भड़क गये। उन्होने उस गाँव पर हमला बोल दिया, पर दूसरी ओर से अंग्रेजी सेना आ गई। अतः युद्ध का पासा पलट गया। इस संघर्ष में अनेक कूका वीर शहीद हुए और 68 पकड़ लिए गए। इनमें से 50 को 17 जनवरी 1872 को मलेरकोटला में तोप के सामने खड़ाकर उड़ा दिया गया। बचे लोगो को अगले दिन 18 जनवरी को फाँसी दी गयी। दो दिन बाद गुरू रामसिंह को भी पकड़ लिया गया और उनको माड़ले जेल में भेज दिया गया। 14 साल तक वहाँ कठोर अत्याचार सहकर 1885 में उन्होने अपना शरीर त्याग दिया।

बसंत पंचमी हिन्दी साहित्य की अमर विभूति महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी का जन्मदिन 28.02.1899 है। निराला जी के मन में गरीबो के लिए अपार प्रेम और पीड़ा थी। जो उनके काव्य कृतियों में स्पष्ट रूप से दिखती है। वे अपने पैसे और वस्त्र खुले मन से निर्धनों को दे ड़ालते थे। इस कारण लोग उनको 'महाप्राण' भी कहते थे। 'निराला' जी को बसंत बेहद प्रिय था इसलिए वह अपना जन्मदिन बसंतऋतु को मनाते थे। उनकी कुछ पक्तियों का उल्लेख करना चाहता हूँ।

सखी वसंत आया भरा हर्ष वन के मन नवोत्कर्ष छाया, किसलय वसना नव वय लतिका, मिली मधुर प्रिय-उर तरू-पतिका, मधुप बृन्द बन्दी पिक-स्वर नभ सरसाया।

हमारे देश में (निराला) के अतिरिक्त बहुत से कवि भी हुए है। जिन्होने बसंत ऋतु का वर्णन बहुत सुन्दरता से किया मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा सचित कुछ पक्तियाँ है-

₹जिन्ह घर कता ऋतु भली, आव बसंत जो नित्त, सुख भरि, आवाहि देव हरे, दुःख न जाने कित्त।₹

इस ऋतु पर कलाकारो का कहना ही क्या है, जो महत्व सैनिकों के लिए अपने शस्त्रा का है, जो विद्वानों के लिए पुस्तको का है जो व्यापारियो के लिए वहीखातो का है। वही खास महत्व कलाकारो के लिए बसंत पंचमी का फिर वो या कदक, नाटककार हो नर्तक, सब दिन का शुभारम्भ अपने उपकरणो की पूजा और माँ सरस्वती की वंदना से ही करते है। यह पर्व हमारे भारत देश में ही नही वरन् पड़ोसी देशो में भी अलग अलग ढंग से मनाया जाता है- जैसे पाकिस्तान मे बसंत पंचमी पर पतंगे उड़ाई जाती है जो वहा के वीर बालक हकीकत लाहौर का निवासी था। जो धर्म के लिए बसंत पंचमी के दिन शहीद हो गया था। अतः पतंगबाजी का अधिकतर जोर लाहौर में ही रहता है। अन्य देशो में भी पर्व बहुत उल्लास और खुशी के साथ मनाया जाता है। इस ऋतु पर सबको बधाई भी देना चाहूँगा कि इस बसंत ऋतु सबके लिए बहुत सी खुशियाँ लेकर आए। अन्त में महाकवि ₹ सुमित्रानन्द पन्त जी की पक्तियो के साथ अपनी बात समाप्त करना चाहूँगा कि-

फिर बसंत की आत्मा आई,
मीटे प्रतीक्षा के दुर्वह क्षण।
अभिवादन करता भूखा मन,
दीप्त दिशाओं के वातायन।
प्रीतिसांस - सा मलय समीरण,
चंचल नील नवल भू यौवन।
फिर बसंत की आत्मा आई,
सब युग सब ऋतु थी आयोजन।
तुम आओगी वे थी साधन,
तुम्हे भूल कटते ही कब क्षण ?
फिर बसंत की आत्मा आई,
देव हुआ फिर नवल युगागम
स्वर्ग धरा का सफल समांगम ।

बसंत पंचमी और सरस्वती पूजा

- भरत चतुर्वेदी 'अचल', होलीपुरा/रिसड़ा

बहुत दिनों के बाद खिड़कियां खोली हैं,
ओ बासंती पवन हमारे घर आना।।

कवि कुंवर बेचैन की उपरोक्त पंक्तियों में शीत ऋतु के बाद बसनत ऋतु का स्वागत किया गया है।माघ मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी को बसनत पंचमी के रूप में जाना जाता है। आज के दिन देश भर में वसनतोत्सव विभिन्न रुपों में मनाया जाता है।शीत ऋतु का समापन होने से बसनत ऋतु का आगमन हो जाता है।चहुं ओर उमंग और उल्लास का वातावरण व्याप्त हो जाता है बसनत ऋतु में प्राकृतिक सौन्दर्य भी मन मोहक हो उठता है। जहां खेत – खलिहानों में फसलें लहलहा उठती हैं,बाग बगीचों में फूल खिलने लगते हैं वहीं वृक्षों पर नये –नये पत्ते आने लगते हैं क्योंकि बसनत का आगमन हो चुका है।

हमारी हिन्दू संस्कृति की यह विशेषता है कि जीवन में उमंग व उत्साह का संचार करने के लिए वर्ष भर तीज– त्यौहारों समावेश किया गया है, इनमें कुछ पर्व ऋतु परिवर्तन के स्वागतार्थ निर्धारित किए गए हैं।बसनत पंचमी का पर्व भी शीत ऋतु के समापन और बसनत ऋतु के आगमन का पर्व है। इसीलिए हम बसनत पंचमी के दिन–

आगत का स्वागत करते , गत का करते अभिनन्दन।

बसनत पंचमी के दिन से ही अपने समाज में होली गायन की

धमक आरम्भ हो जाती है । हमारे मथुरान्त के गांवों होली गायन की बैठकों के साथ कलकत्ता के बल्देव जी के मन्दिर में आज से होली गायन की बैठक आरम्भ होने की वर्षों पुरानी परम्परा रही है। जहां आज भी बान्धव एकत्र होते हैं तथा इन बैठकों में विशेष रूप से बसनत के पद गाते हैं। यथा–

आयौ बसनत कहौ, उन हरि सौ बौरे अंब बन फूली सरसों ।
फूले कमल उमगे दोउ जुबना ,अजहु न भेंट भई उन हरि सौं।
औरन सौं वे हंसत खेलत हैं ,हम तरसें वाके दरसन बरसौं।
ऐसो मन होय छुड़ाइ लाऊं सजनी, मोहन प्यारे कों कुब्जा के कर सौं।
राह चलत दुर्लभ भयो सजनी,अजहुं न भेंट भई उन हरि सौं।

बसनत ऋतु का आगमन हो चुका है सखी अपने मन की पीड़ा व्यक्त करते हुए इच्छा भी बता रही है। वहीं गाये जाने वाले दूसरे पद में सखी कह रही है कि–

आजु बसंत बना बनि आयौ,
कोऊ सखी ओढ़े चीर बसंती,
काऊ ने सालू रंगायौ।
कोऊ सखी डारि गरे बिच सेली,
रूप अनूप बनायौ,
भेष जोगिनी कौ दिखाऔ।
चंद्रावलि पै चीर बसंती,
ललिता ने सालू रंगायौ।
राधे डारि गरे बिच सेली,
रूप अनूप बनायौ,
भेष जोगिनी कौ दिखाऔ।।

ऐसे अनेक पदों के गायन द्वारा बसनत ऋतु के आगमन का स्वागत किया जाता है। एक अन्य पद दृष्टव्य है जिसमें होली की धूम का अभी से उत्साह दिखाई देता है तभी तो आज से होली गायन की बैठकों का मास पर्यन्त आरम्भ हो जाता है। होलीपुरा के ठाकुर देवालय में , मैनपुरी के मन्दिर बिहारी जी में और वृन्दावन में श्री टटिया स्थान में आज होली गायन की बैठक होती हैं।

सखी मोहि फागुन मास सुहावै,
हरि आवैं सब ग्वालिन लावें,
प्रेम रास बगरावें ।
इन्द्र अप्सरा नाचें गांवैं ,
भेद कौं आंच लगावें,
सब चलियो ब्रजराज दुलारे ,
जाय के फाग मचावें।।

होली गायकी अपने समाज की महत्वपूर्ण विधा है जिसके रंग में पूरा समाज आज से ही सराबोर हो उठता है।

बसनत पंचमी का दिन जहां होली गायन के आरम्भ होने के लिए समाज में जाना जाता है ,वहीं देशभर में आज के दिन मां सरस्वती के प्राकट्य दिवस के रूप में प्रसिद्ध है।आज ही के दिन विद्या की देवी भगवती सरस्वती ब्रह्मा जी के मुख से प्रकट हुईं। कलकत्ता में आज भी सर्वत्र मां सरस्वती की छोटी बड़ी मिट्टी की प्रतिमा स्थापित कर पूजन की धूम देखी जा सकती है ।हर घर में, स्कूल,कालेज एवं पुस्तकालय आदि स्थानों पर मां सरस्वती का पूजन समारोह सुबह से ही आरंभ हो जाता है। बंगाल का मूर्ति निर्माण उद्योग विश्व प्रसिद्ध है। आज के दिन बासनती परिधान धारण कर क्या छोटा क्या बड़ा सभी –

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता या
वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेत पद्मासना।या
ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा पूजिता सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा।।

मन्त्रोचार के साथ पुष्पांजलि अर्पित कर दिनचर्या आरम्भ करते हैं। आज ही के दिन महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की जयंती समारोह मनाया जाता है जगह जगह काव्य गोष्ठियां आयोजित की जाती हैं। चूंकि आज मां सरस्वती का प्राकट्य दिवस है आज ही विद्यारंभ पूजन भी किया जाता है। बासनती पकवान बनते हैं तथा पीले वस्त्र धारण करते हैं।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि बसनत पंचमी का पर्व मूलतः मां सरस्वती का प्राकट्योत्सव है वहीं होली गायन की बैठकों के आरम्भ का पावन दिन है बसनत पंचमी।डा० प्रेमशंकर त्रिपाठी की पुस्तक 'विचार तरंग' में निम्न पद में बसनत पंचमी और होली के त्योहार का बड़ा ही रोचक और सजीव चित्रण किया गया है।यथा–

अजब त्यौहार खुशी बहु आई
माघ शुक्ल पंचम तिथि आवे, सुंदर सगुन सजाई।
ईंधन पहिला धरें जहां पर , वहीं होलिका माई।।
सब जन थोड़ा–थोड़ा करके,होरी देयं बढ़ाई ।
फागुन पूनो रात शुभ घड़ी ,पंडित देयं जलाई।।
ढोल मंजीरा, झींका ,ढफली ,लइ लइ तान लगाई।।
चैत्र मास प्रतिपदा धुलेंडी ,रंग अबीर उड़ाई ।
हिल– मिल रंग परस्पर खेलैं, ईर्ष्या द्वेष भुलाई ।उड़द गुलाल फाग सब गावै, द्वार द्वार पर जाई।
बाबा रंगे जात देवर सम, प्रमुदित मन भौजाई।।

इस वर्ष बसनत पंचमी 14 फरवरी '2024 बुधवार को तथा होली 25 मार्च'2024 सोमवार को है।

शंकराचार्यों से अपेक्षा

- विष्णुस्वरूप पाण्डेय, कानपुर

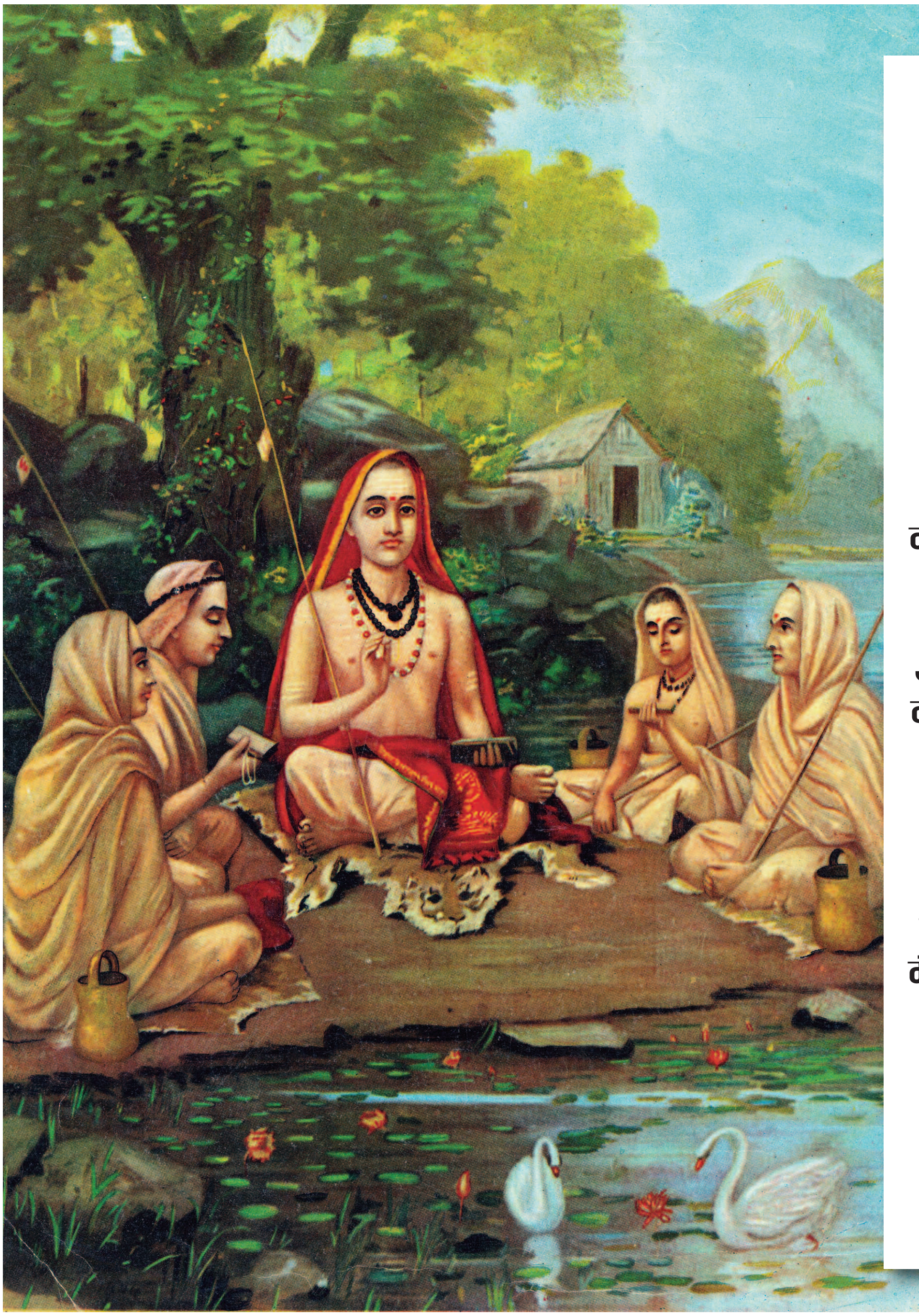

पिछले वर्षों शनि शिंगणापुर एवं शबरीमाला में महिलाओं के प्रवेश को ले कर बड़ी चर्चा रही और अंततः न्यायालय के निर्णय के उपरान्त ही इन मंदिरों में स्त्रियों का प्रवेश सुनिश्चित हो सका। इस बात ने मुझे बहुत क्षुब्ध किया कि आखिर क्यों न्यायालय धर्म के कार्यों में अतिक्रमण कर रहा है। न्याय एवं धर्म दो अलग-अलग संस्थायें हैं तथा धर्म न्याय के द्वारा निर्देशित हो, ऐसा मेरा मन-मस्तिष्क स्वीकार नहीं कर पा रहा है। मैं धर्म के पटल पर न्यायालय के दखल को सर्वथा अनुचित मानता हूँ। मैं यह बात तो मान सकता हूँ कि धर्म का एक कार्य न्याय करना है, परन्तु मैं यह नहीं स्वीकार कर पा रहा हूँ कि न्याय का भी एक कार्य धर्म करना है।

क्या धर्मोचित है तथा क्या न्यायोचित है, यह निश्चित ही चर्चा योग्य प्रश्न है। विषय की गहरायी में उतरने पर यह ज्ञात होता है कि न्याय की व्यवस्था को इसलिये सामने आना पड़ा क्योंकि धर्म की व्यवस्था काल- संगत निर्णय देने में असफल रही। यदि समाज परम्पराओं को काल-संगत बनाते हुये उनका समयोचित समायोजन नहीं करेगा तो धर्म की व्यवस्था स्वतः धराशायी हो जायेगी। तब स्वाभाविक रूप से कोई और व्यवस्था उसका स्थान ले लेगी। ऐसे में दोष न्यायालय का तो कदापि नहीं है। फिर कौन हैं वे जो दोषी हैं और जिनकी ओर हम इंगित भी नहीं कर पा रहे हैं? निश्चय ही जिन पर धर्म की व्यवस्था चलाने का गुरुतर भार है, यह उनका ही उत्तरदायित्व है। इस बात पर एकमत होने के अतिरिक्त कोई और विकल्प नहीं है कि वे सभी धर्माचार्य जिन्हें हिन्दुओं की सनातन परंपरा का दिशा-निर्देशन करना चाहिये, सामूहिक रूप से एक समकालीन व्यवस्था देने में पूर्णतः विफल रहे। एक युग में आदि शंकराचार्य ने उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक यात्रा करते हुए हिन्दू परम्पराओं को पुनर्निर्देशित एवं पुनर्स्थापित किया तथा उन्हें समकालीन स्वीकार्यता दिलायी। आज हमारे शंकराचार्य कहाँ हैं? वे क्यूँ इस विषय पर समयोचित दिशा देने में असफल रहे? क्या उन्होंने ऐसे निर्णयात्मक प्रयत्न किये जिससे पुजारियों और उन स्त्रियों के मध्य संवाद स्थापित हो पाता और दोनों पक्ष उनके निर्णय को स्वीकार करते ? क्या इस प्रसंग में उन्होंने अपनी अप्रासंगिकता स्वीकार करली? शाश्त्रार्थ के धनी आदि शंकराचार्य की परंपरा में ऐसी अक्षमता का कोई स्थान नहीं हो सकता।

आज के हमारे शंकराचार्य युवा पीढ़ी को तर्कपूर्ण विचारों से प्रभावित कर धर्मोन्मुख करने में पूरी तरह विफल रहे। आदि शंकराचार्य ने तत्कालीन सामाजिक परिदृश्य के अनुसार नव-व्यवस्था दे कर समाज में फैली बुराइयों पर चोट करते हुये समाज को सुव्यवस्थित किया एवं धर्म को पुनर्परिभाषित किया। उन्होंने मौन धारण कर अपनी आँखें नहीं फेर लीं, वरन शाश्त्रार्थ का मार्ग चुन कर अपने प्रतिद्वन्दियों को परास्त कर अपने पक्ष में किया। वे इसलिये सफल हुये क्योंकि उनकी बातें तर्क-संगत थीं और बुराइयों पर प्रहार करने वाली थीं। उनकी वाणी में ओज था एवं विचारों में धार थी तभी लोग उनसे सहमत हुये।

आज के अधिकांश धर्माचार्य एवं शंकराचार्य कुप्रथाओं पर मौन है। इसमें कोई संदेह नहीं कि इसी उपेक्षा ने न्यायालय को धर्म सम्बंधित विषयों में हस्तक्षेप करने का अवसर प्रदान किया। की न्यायालय ही क्यों, आज राजनैतिक दल विभिन्न हिन्दू समुदायों में 'सोशल इंजीनियरिंग' के नाम पर न जाने कैसे-कैसे विखंडन के कृत्य कर रहे हैं? क्या यह माना जाये कि हिन्दुओं के सर्वोच्च धर्माचार्य की इन विषयों पर पूर्ण सहमति है? क्या यह माना जाये कि वे उस अंतिम पांत में खड़े हिन्दू से अपने को जोड़ नहीं पा रहे? या हम यह मान लें कि आज के धर्माचार्य शासनसत्ता की सर्वोच्चता को स्वीकार कर चुके हैं।

क्या आज हिन्दू अपने हिन्दू होने पर गर्व करे इसके लिये उसे किसी सामाजिक संस्था के नारे का मुंह देखना पड़ेगा या हमारे शंकराचार्य की रीति-नीति उसे उसके हिन्दू होने पर गर्व का अनुभव करायेगी? यह किसकी विफलता है? हिन्दू समाज से

आज के हमारे शंकराचार्य युवा पीढ़ी को तर्कपूर्ण विचारों से प्रभावित कर धर्मोन्मुख करने में पूरी तरह विफल रहे। आदि शंकराचार्य ने तत्कालीन सामाजिक परिदृश्य के अनुसार नव-व्यवस्था दे कर समाज में फैली बुराइयों पर चोट करते हुये समाज को सुव्यवस्थित किया एवं धर्म को पुनर्परिभाषित किया। उन्होंने मौन धारण कर अपनी आँखें नहीं फेर लीं, वरन शाश्त्रार्थ का मार्ग चुन कर अपने प्रतिद्वन्दियों को परास्त कर अपने पक्ष में किया।

अस्पृश्यता तथा छुआछूत जैसी बुराइयों को दूर करने के लिये शंकराचार्य ने क्या प्रयास किये? दहेज़ की कुप्रथा के विरुद्ध शंकराचार्य के क्या आदेश हैं? हिन्दू समाज में एक शैक्षिक क्रांति का जन्म हो इसके लिये शंकराचार्य का क्या दिशा-निर्देश है? हिन्दू समाज की एकजुटता हेतु आप या आपके प्रतिनिधि क्या प्रयास कर रहे हैं? क्या हमारे शंकराचार्य यह मानते हैं कि अब हिन्दू राजनैतिक नेताओं के कारण संगठित होंगे, न कि धर्म की विश्वसनीयता के कारण? यदि ऐसा है तो यह विचारणीय है।

हमारे धर्माचार्य एवं हमारे शंकराचार्य हमारे प्रेरणा स्तम्भ क्यों नहीं बन पा रहे? वे ऐसा कुछ क्यों नहीं दे पा रहे कि समाज, विशेषतः युवा पीढ़ी उनसे प्रेरणा प्राप्त कर सके। यदि वे राजनेताओं, लेखकों, उद्योगपतियों, अभिनेताओं, खिलाडियों आदि को अपना प्रेरणास्रोत मान सकते हैं तो आपको क्यों नहीं? ऐसा भी नहीं है कि उन्हें धर्म एवं अध्यात्म का रंचमात्र भी बोध नहीं हो। अनेक पश्चिमी दर्शनशास्त्रियों के साथ-साथ वे विवेकानंद, ओशो तथा सद्गुरु आदि को भी पढ़ते हैं और उनकी बातों से एकात्म स्थापित करने में सक्षम हैं। ऐसा क्यों है कि उसे आपसे कुछ प्राप्त नहीं हो पा रहा है? व्यक्ति निर्मल बाबा जैसों के पास चला जाता है पर आपके पास नहीं आता। यह कैसी विडम्बना है और इसके लिये कौन जिम्मेदार है? आज का विश्व अर्थ-प्रधान हो गया है।

तो क्या आपने भी अपने आपको पराजित मान लिया है कि अब धर्म को व्यापर बन जाने दिया जाये? क्या आपके दण्डीस्वामी घूम घूम कर प्रचार करने में असमर्थ हो गये है या वे भी सुविधाभोगी हो गए हैं? आपका दायित्व है कि आप धर्म का व्यापार न होने दें परन्तु आप साधू-सनयासियों पर भी नीति की कोई लगाम नहीं लगा सके । फिर किस विश्वसनीयता के आधार साईं बाबा के विरुद्ध आपकी बात को प्रमाणिक मान लिया जाये? इस मोर्चे पर भी आप असफल ही रहे।

सूचना क्रांति और तकनीक के इस युग में आप एक नयी काल-संगत भाषा में धर्म को परिभाषित नहीं कर पा रहे हैं। आप कोई भी नयी बात नहीं कर पा रहे हैं। धर्म का मर्म अगर लोग नहीं समझ पा रहे हैं तो इसमें दोष लोगों का है अथवा आपका? धर्मज्ञ और मर्मज्ञ कौन है? लोग धार्मिक हैं और धर्म से जुड़े हुये हैं परन्तु आप उन्हें समाधान नहीं दे पा रहे हैं? एक नवयुगीन धार्मिक क्रांति की आवश्यकता दृष्टिगोचर है पर संम्भवतः आप इस सम्बन्ध में उपेक्षाभाव को ही उचित मानते हैं।

आप तय नहीं कर पा रहे हैं कि अगला शंकराचार्य कौन होगा? आपका मुकदमा न्यायालय में है कि असली शंकराचार्य कौन है? यह कितने खेद का विषय है! क्या न्यायालय यह तय करेगा कि बुद्धत्व का अवतरण किस व्यक्ति में हुआ है? क्या न्यायालय निर्धारित करेगा कि किसकी चेतना जागृत है? क्या न्यायालय यह बतायेगा कि किसने परमात्मा को प्राप्त कर लिया है? क्या धर्माचार्य स्वयं को इतना हीन समझते हैं कि उनमें न्यायधीशों को पंच-परमेश्वर की अवधारणा बताने का साहस नहीं रहा और अब वे उनके निर्देश एवं आदेश से संचालित होंगे? यह उल्टी गंगा कौन बहा रहा है?

शंकराचार्य को क्रान्तिकारी कदम उठाने होंगे। उन्हें आगे बढ़ कर चारों पीठों की एक एकीकृत प्रणाली बनाते हुये एक नये धार्मिक विचार को रखना चाहिये और सभी धर्माचार्यों को उसके झंडे के नीचे ला कर एक समकालीन व्यवस्था बनानी चाहिये जो आधुनिक समाज में धर्म की नूतन व्याख्या प्रस्तुत कर उसे शक्ति प्रदान कर सके। आदि शंकराचार्य ने चार पीठों की स्थापना कर धर्म में एक क्रांति का शिलान्यास किया था। धर्म का विखंडन नहीं उसका संगठन आवश्यक है। यह कार्य शंकराचार्यों को स्वयं करना चाहिये। उन्हें सेठों की आवभगत से ऊपर उठ कर समाज के अंतिम हिन्दू से अपने को जोड़ना चाहिये। आज एक हिन्दू यदि गर्व से यह कहना चाहता है कि वह हिन्दू है तो उसे गर्व का यह अवसर कौन देगा - धर्माचार्य या कोई सामाजिक संगठन? एक हिन्दू अपने हिन्दू होने पर तभी गर्व कर सकता है जब उसका धार्मिक नेतृत्व उसे कालसंगत, तर्कसंगत एवं न्यायसंगत विधि से एक अखण्ड एवं आधुनिक धर्मव्यस्था से जोड़ पाने में सक्षम हो।

क्या शंकराचार्य को अब अपने पद में वह गरिमा नही दिखायी पड़ती जहाँ एक सिंहासनारूढ़ राजा उठ कर आये और उनके तेज से अभिदीप्त हो कर उनके चरणों में अपना सिर नवा दे? यदि ऐसा है तो यह तभी संभव है जब शंकराचार्य स्वयं को राजा मानने लगें हों और अपने निकट वे ज्ञानियों के स्थान पर अपने दरबारियों को बिठाने लगें हों। मैं समझता हूँ कि आदि शंकराचार्य सर्वसुलभ थे। परन्तु क्या हमारे वर्तमान धर्माचार्य भी ऐसे हैं? मेरा उत्तर नकारात्मक है। जब ये कहा जाये कि महाराज विश्राम कर रहे हैं या यह उनके आराम का समय है अथवा यह कि वे सबसे नहीं मिलते, तब वह कैसे जनसाधारण को अपनी उपलब्धता सुनिश्चित करेंगे? इंद्रियों के बंधन के पार खड़े धर्माचार्य को विश्राम क्यों चाहिये? आदि शंकराचार्य के जीवन को देखें तो वह विश्राम से परे था जहाँ एक सतत यात्रा थी एवं समाज की कुरीतियों के विरुद्ध एक सतत संघर्ष था।

एक आम हिन्दू आपसे जुड़ना चाहता है परन्तु आप उसे अपने से जोड़ नहीं पा रहे हैं। यह कमी किसकी है? यह आपके द्वारा उत्पन्न किये गये अवसर हैं जहाँ न्यायालय, सामाजिक संगठन, राजनीतिक दल तथा व्यवस्था के अन्य घटक धर्म के कार्यों में हस्तक्षेप करने हेतु या तो विवश हुये या उन्हें यह एक सुनहरे अवसर के रूप में दिखा। आपसे प्रार्थना है कि आप अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन इसप्रकार करें कि न्यायालय आदि संस्थायें अपने काम ठीक से करने की आपसे प्रेरणा प्राप्त करें। उनके पास वैसे ही बहुत काम है और ऐसे में आपकी दयित्वविमुखता उनके कार्यों का बोझ ही बढ़ा रही है। धर्म अनुभूति का विषय है। हिन्दू समाज बड़ी उत्सुकता से आपकी ओर देख रहा है। आप उसका मार्गदर्शन कर उसे समयानुकूल धर्म की अनुभूति कराइये ताकि अधिसंख्य जनता धर्मानुकूल आचरण कर सके। कोई व्यवस्था यदि गलत है तो उसके स्थान पर नयी व्यवस्था लाना आपका दायित्व है। पाँच शताब्दी पुरानी व्यवस्था यदि आज व्यवहार के प्रतिकूल है तो उसमें उचित परिवर्तित कीजिये। जो अड़ गया वो सड़ गया। परंपरा के नाम पर रूढ़िवादिता को बढ़ावा नहीं मिलना चाहिए । आदि शंकराचार्य ने रूढ़ियों की बेड़ियों से समाज को मुक्त कर नवीन व्याख्यायें एवं व्यवस्थाएँ दी थीं। आपसे भी यही अपेक्षित है। सनातन परंपरा के धनी इस धर्म ने हर काल में नयी परम्पराओं एवं व्यवस्थाओं को मर्यादित कर धर्म की समकालीनता और उसके वैविध्य को बनाये रखा तथा साथ ही उसमे निरन्तर नव-चेतना का संचार किया। जनता धार्मिक है अतः आप उसे धर्म का बोध कराइये। समाज पहले से अधिक जागरूक है इसलिये आप उसे अमंगल के भय से मुक्त कर समकालीन भावों से युक्त मंगल की राह दिखाएँ।

बस इतना ही विनम्र अनुरोध है।

'धर्म समाज का पथ-प्रदर्शक है, समाज धर्म का नहीं।'

महासभा, चुनाव और समाज पर उसका प्रभाव

- सौरभ चतुर्वेदी, फरौली/लखनऊ

सभी बांधवों को सादर पालागन।

महासभा हमारे चतुर्वेदी समाज की पहचान है, पूर्वजों की धरोहर है इसे हमें सहेजना होगा। कुछ लोग केवल विरोध के लिए बने हैं वे विरोध करेंगे।विरोध के लिए कुछ बिंदु भी निर्धारित किए गए हैं जैसे वोटर्स की संख्या, कार्यप्रणाली, क्षेत्र वाद। मैं कहना चाहता हूं कि इस चुनाव का सबसे अच्छा परिणाम यह रहा कि बांधवों के मन में महासभा के प्रति आकर्षण और बढ़ गया है जबकि पहले किसी से महासभा के बारे में कुछ आग्रह करो, सदस्य बनने का निवेदन करें तो उदासीनता परिलक्षित होती थी ।यह एक सुखद अहसास है, साथ ही जिन लोगों ने सदस्य संख्या की कमी का आरोप लगाया उनसे ही प्रश्न स्वयं बन जाता कि आप ने क्या किया महासभा को आगे बढ़ाने में, क्या योगदान रहा बस एक प्रतिद्वंद्वी संस्था बना कर समाज को विभाजित करने का कुत्सित प्रयास।समाज में महासभा की नकारात्मक छवि बनाने का प्रयास, जबकि महासभा आज भी लगभग चालीस परिवार को अन्नपूर्णा योजना के अन्तर्गत सहायता करती है , उच्च शिक्षा के लिए यदि आवश्यकता पड़ती है तो फीस आदि में सहयोग, इसके अलावा भी अन्य कार्य हैं बहुत छोटे छोटे जिनका वर्णन नहीं ,क्यों? अगर हम महासभा की कमियां गिनाने बैठें हैं तो उसकी उपलब्धियों का वर्णन क्यों नहीं,केवल कुप्रचार इससे समाज को क्या संदेश देना, फिर वही बात आप थे तब क्यों नहीं प्रयास किये क्यों नहीं आवाज उठाई,क्या इस लिए कि उस समय सब ठीक–ठाक था जैसे ही आप ने छोड़ा सब गड़बड़ हो गया। साथ ही एक बात और कहना चाहता हूं कि अधिकांश चतुर्वेदी बांधवों की पहचान गांव से थी पर आज स्थितियां यह बन गई कि गांव चतुर्वेदियों से खाली हो गए, लोगों ने अपने खेत जमीने सब बेच कर शहरों में स्थापित होने का प्रयास किया जिसमें हमारी पहचान का संकट सामने आया क्योंकि जब हम खेत खलिहान घर चौखट सब बेच कर शहर में आशियाना बनाते हैं तो उस शहर की भीड़ का इक हिस्सा बन कर रह जाते अपने गांव में जो पहचान थी उसे बेच कर। पर इस महासभा ने हमें विगत सौ साल से चतुर्वेदी बनाये रखा है हमारी पहचान को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए हम सबको इस महासभा का आभारी होना चाहिए।हम अपने नाम के आगे गर्व से चतुर्वेदी लिख रहें हैं उसमें भी इस महासभा ने बहुत अहम भूमिका निभाई है शहरों में जो हम संगठित होकर कर सहयोग कर रहे हैं उसमें भी महासभा परोक्ष रूप से समाज हित में बल प्रदान कर रही है और मेरी समझ से महासभा का यह कार्य सबसे ऊपर है जिसकी बदौलत आज हमारी पहचान भी कायम है।

चुनाव का गिरता हुआ स्तर

- संजय मिश्रा, कानपुर

बंधुओ सादर पालागन

सर्वप्रथम अपने समाज मे चुनाव होने ही नही चाहिए,आपसी सहमति से किसी योग्य सदस्य को सभापति का पदभार देना चाहिए पर किसी भी संस्था के संविधान में चुनाव होना उसकी प्रणाली का एक हिस्सा है इसीलिए चुनाव की प्रतिक्रिया करना जरूरी भी है।

चुनाव का अर्थ ही होता है सर्वश्रेष्ठ में से किसी एक को चुनना... आज बात करते है उस संस्था की जिसको हम लोगो के पूर्वजो ने बनाया है उस पर चंद पद महत्वाकांक्षी आये दिन आरोप लगाते रहते हैं अपने स्वार्थ के लिए आज बात करते हैं महासभा चुनाव की...वर्तमान महासभा चुनाव भी एक षड्यंत्र से अधिक नही लगा....क्योंकि इसमें समाज सेवा की भावना कम और स्वार्थ की भावना ज्यादा हो गयी है किसी भी तरह से समाज की सर्वश्रेष्ठ संस्था में घुसकर अपना स्वार्थ (अपना नाम) चमकना मात्र है समाज सेवा से ऐसो का कोई सरोकार नही है इस संस्था के जन्म के साथ ही अप्रत्यक्ष रूप से हमारे पूर्वजों द्वारा स्थापित सर्वमान्य संस्था महासभा के ऊपर आधारहीन, तुच्छ आरोपों की झड़ी लगातार जारी है..

आये दिन तुच्छ निराधार आरोप लगाकर केवल महासभा की शानदार छवि को बिगाड़ने का कार्य करते रहते हैं और उन्हें शायद यह नही मालूम है की अपना समाज कितना जागरूक है समाज उनकी करतूतों को अच्छे से पहचानता है उनके मंसूबों का भाँप गया है की उन लोगो का एक उद्देश्य केवल महासभा पर आरोप लगना ही मात्र बचा है उनके मुँह से कभी भी समाज की सर्वोच्च संस्था की तारीफ नही सुनी होगी,जिसको आम जनमानस महसूस भी कर रहा है। बंधुओ अभी भी समय है हम सचेत रहे .और षड्यंत्र को पहचाने...षड्यंत्र करने वालो को पहचाने....कही ऐसा न हो हम पालागन को ही भूल जाए।

चिकित्सा बीमा योजना

- करूणेश चतुर्वेदी, ग्वालियर

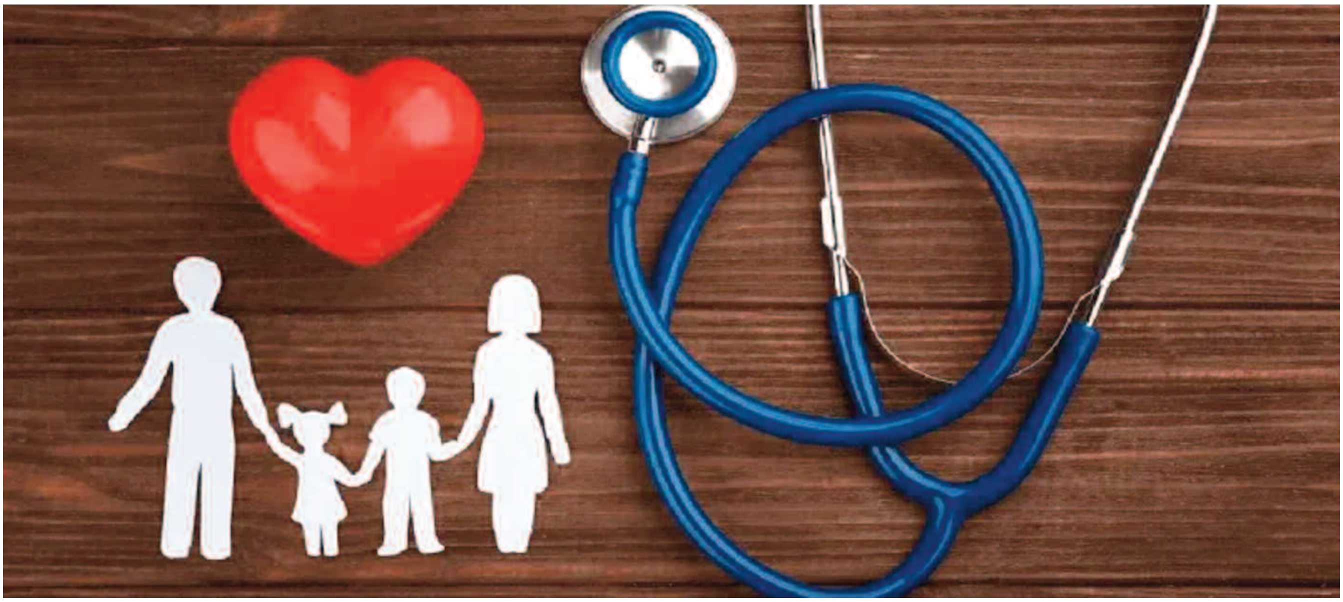

महासभा कार्यसमिति की बैठक में कई बार सामाजिक बांधवों के चिकित्सा में होने वाली बेहिसाब खर्चों से बचने के लिए ग्रुप मेडिक्लेम' काल की पॉलिसी के विषय में व्यापक चर्चा चहा रही है। भाई पक्षितजी, लखनऊ मे भी इस पर काफी जानकारी एकत्रित कर करौली बैठक में सभी कार्यकारिणति N सदस्यों को इसके बारे में विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया। आज के दौर में सभी मध्यम वर्गीय परिवार के पारिवारिक बजट की कमर चिकित्सा और शिक्षा के असीमित खर्चों में लोड के सूवी है।

चिकितला सम्बंधी खिचों से आर्थिक स्थिति को असंतुलित कर देता है। इससे बचने के लिए हम अपनी चिकित्सा बीमा करवा में तो आने वाले वित्तीय संकट के असंतुलन से बचा जा सकता है। इसी सामाजिक समस्या के समाधान हेतु महासभा अपनी कार्यसमिति में इस पर मंथन करती या रही है। उसको कार्यरूप की परिणीति करने में आप सभी क बांधवों का सहयोग अपेक्षित है, जिससे हम अपने इस लक्ष्य को हासिल कर सकें। बीमा सम्बन्धी जानकारी पर कुछ प्रकाश डाल रहा हूँ, आशा है इससे बांधव अवगत हो अपना अमूल्य सुझाव एवं सहयोग साझा कर इस महायज्ञ को पूर्ण करने में सहायक होगे।

ग्रुप मेडिकल पॉलिसी

10 कम से कम 100. व्यक्तियों का समूह। 2) इस पोलिसी में मातृत्व (भेरमिरी) चिकित्सा सुविधा भी कवर जाता है। 3) बीमा राशि–बीमा कम्पनी हो, आपसी बातचीत से निर्धारित की जा सकती है (नियोजन) 5) दैसिसी में मिलने वाली सुविधा (कवरेज) यह भी बीमा कम्पनी से आपसी– सहमति से निर्वाचित की जा सकती है। (निगोश्मेबल) 5) बीमा पूर्व की बीमारी (श्री एक्सिटिंग डिसीज) कवरेज– यह भी बीमा कम्पनी से आपसी सहमति से निर्धारित की जा सकती है। 6) अधिकार (लोडिंग)/ दूर (डिस्काउंट). यह चिकित्सा दावों के ओकितन पर निर्भर है। 1) इस योजना में सभी आयुवर्ग के लोगों को सम्मानित किया जा सकता है? इसके अतिरिक्त युवा भारत चिकित्सा बीमा ? सम्बन्धी योजना भी है, इस योजना में कीमा राष्ट्रिय अपेक्षाकृत कम है, मगर इसमें 18 वर्ष से 45 वर्ष के आयु वर्ग वाले ही सम्मलित हो सकते हैं। इस योजना में तीन श्रेणी हैं। 1. बेसिक, 2. गोल्ड एवं 3. प्लेटेनियम है, जिसमें प्रीमियम बीमा राशि अनुसार श्रेणी एवं सुविधा प्राप्त की जा सकती है। उपरोक्त सभी लक्ष्यों पर गौर करने के उपरांत सहमति बने कि योजना को स्वीकार किया जा सके एवं अपने कार्य को अंजाम पर पहुंचाया जाए।

शाखा समाचार

भोपाल

भोपाल में चतुर्वेदी समाज की पिकनिक का आयोजन 24 दिसंबर 2023 को भोजपुर मार्ग पर स्थित विकास चतुर्वेदी के फार्म हाउस पर उत्साह पूर्वक किया गया। हल्की हल्की गुलाबी ठंड, नदी का किनारा, खुला मैदान, पेड़ों की छाँव और गुनगुनी धूप के साथ इस कार्यक्रम का लुत्फ़ और बढ़ा दिया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में चतुर्वेदी समाज के बान्धवों, महिलाओं एवं बच्चों ने इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

सिद्धार्थ जी और हरीश जी (सचिव) द्वारा अंताक्षरी से शुरुआत को आगे बढ़ाते हुए नरेश जी और अजय चौबे जी द्वारा रस्सा खींच पुरुष बनाम महिलाओं के बीच कराया गया। जिसमें महिला टीम पुरुष टीम पर हावी रहते हुए विजयी रही और फिर म्यूजिकल चेयर के पुरुष एवं महिला के दो राउंड सम्पन्न हुए। खेल में भी सभी ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया।

चाय की चुस्कियाँ और मंगोड़े एवं भजिये का दौर भी चलता रहा। स्वादिष्ट दाल बाफले,कड़ी व चूरमा के लड्डू एवं अन्य व्यंजनों ने भोजन के स्वाद को और बढ़ा दिया। भोजन उपरान्त तम्बोला का दौर अयोजित किया गया जिसे नीलम पाठक जी, सुश्री रितिका और सुश्री उर्वी ने उत्साहपूर्वक कराया। जिसमें सभी वर्ग के लोगों ने हिस्सा लिया। इसके बाद महासभा की प्रथम महिला प्रत्याशी श्रीमती उषा चतुर्वेदी का गर्मजोशी से स्वागत शाखा सभा की कार्यकारिणी की महिला पदाधिकारियों व समाज के बांधवों द्वारा किया गया। श्रीमती नीलम गोपाल चतुर्वेदी के जन्मदिन के अवसर पर सभी ने उनको बधाई दी। इसी के बाद वहां उपस्थित महिलाओं श्रीमती पद्मा रेखा श्रीमती रश्मि बिल्लो, श्रीमती शारदा, श्रीमती अंजना एवं श्रीमती उषा चतुर्वेदी ने समाज के पारंपरिक व लोकगीतों का गायन किया।

इस अवसर पर भोपाल शाखा सभा की वृहद कार्यकारिणी सदस्यों के अलावा भोपाल की महिला पार्षद श्रीमती कुसुमजी तथा अन्य गणमान्य अतिथियों भरत जी –उषा जी, वयोवृद्ध प्रताप जी, चंद्रिका के सम्पादक शशांक जी, सेवानिवृत्त जज अनिल जी, मुकुंद कृष्ण जी (गाँधीधाम), एवं भोपाल चतुर्वेदी समाज के राजेशजी–सीमाजी, चंद्रकांन्त जी–सीमा जी, नीरजजी–नीलमजी, आलोक–शुभ्रा दीपक जी–क्षमा जी, राजेश–निकिता, सुभाष–रश्मि जी, मनोज जी–वंदना जी, एयर कोमोडोर आशुतोष जी, श्री के. कुमार जी आदि सभी सम्मानित अतिथियों द्वारा कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अंत में सुमंत जी (अध्यक्ष) के द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया। साथ ही सभी विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत भी किया गया।

– **सुमंत चतुर्वेदी,** अध्यक्ष

***

आगरा

सामुहिक यज्ञोपवीत संस्कार

विदित है कि माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मणों में सोलह संस्कारों का महत्वपूर्ण स्थान है, कहा जाता है संस्काररहिता ये तु तेषां, जन्म निर्थकम, अर्थात जो द्विज संस्कारों से विरक्त रहता है, उसका जन्म निर्थक है। इन्ही सोलह संस्कारों में से एक है, उपनयन अर्थात जनेऊ संस्कार। प्राचीन श्री माथुर चतुर्वेदी सभा, आगरा३ ने अपने संस्कारों को पुनः सक्रिय करने हेतु एवं नई पीढी को इस से जागरूक करने हेतु सामुहिक यज्ञोपवीत संस्कार आयोजित करने का निश्चय किया है। जिसकी संभावित तिथि विद्वान श्री अखिलेश गुरु जी, मथुरा के अनुसार 18 फरवरी, 2024 तय की गयी है।

अतः इस आयोजन में प्रतिभाग करने हेतु या अन्य जानकारी हेतु निम्न पर संपर्क करें।

श्री हरेश चतुर्वेदी – 9412344368

श्री चंचल चतुर्वेदी – 9720555563

– **चंचल चतुर्वेदी,** महामंत्री

समाज समाचार

■ श्री समर्थ चतुर्वेदी सुपुत्र स्व.जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी (कछपुरा/भोपाल) को उनके भोजपुरी फिल्म में श्रेष्ठ अभिनय के लिए सरस सलिल अवार्ड से सम्मानित किया गया है। भाई समर्थ को यह पुरस्कार लगातार तीसरे वर्ष प्राप्त हुआ है। आपकी उपलब्धि के लिए हार्दिक बधाइयां और शुभकामनाएं।

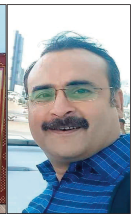

***

■ 12वा अचीवर्स व लीडर्स अवॉर्ड समारोह 2024 के अंतर्गत एक भव्य समारोह में डॉक्टर निखिल चतुर्वेदी को उनकी बाल चिकित्सक के रूप में दी जा रही सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। सहृदय डॉ. निखिल चतुर्वेदी को सक्षमता अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। आज के इस व्यवसायीकरण के दौर में डॉ. निखिल चतुर्वेदी के क्लीनिक पर फीस इच्छानुसार होती है। आगरा शहर में डॉ. निखिल चतुर्वेदी को बच्चों का भगवान कहा जाता है।

***

■ राम लला की प्राण प्रतिष्ठा के पुण्य पर्व के अवसर पर मुरलीधर बप्पू परिवार (कठावाले – होलीपुरा – मुनीन्द्र नाथ (नोयडा), सौ. मोनिका – तुषार (लन्दन), दिव्यांशु – सौ. ईशा (नोएडा), निशांत – सौ. अर्चना (लन्दन) तथा (अंशुमान) की ओर से 35,000/ – अन्नपूर्णा सहायता हेतु। (र.क्र. 2112)

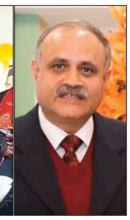

■ चि. पुलकित सुपुत्र श्रीमती मनीषा एवं शशांक चतुर्वेदी सुपौत्र स्व. श्रीमती माया देवी एवं प्रह्लाद चन्द्र चतुर्वेदी (चंद्रपुर/प्रतापगढ़) का शुभ विवाह सौ. अदिति सुपुत्री राजेश्वरी एवं श्री संतोष चतुर्वेदी सुपौत्री स्व. शकुंतला जी एवं शिवकुमार चतुर्वेदी (करौली/जयपुर) के साथ दिनाँक 28–11–2023 को जयपुर में सानंद संपन्न हुआ। इस अवसर पर श्री शशांक जी ने महासभा सहायतार्थ 1100/– एवं पत्रिका सहायतार्थ 500 प्रदान किये। (र.क्र.2076)

बिछड़े स्वजन

* श्रीमती सिद्धो देवी (मैंनपुरी/गाज़ियाबाद) पत्नी स्व. अवधेश चंद्र चतुर्वेदी का स्वर्गवास दिनाँक 18 जनवरी 2024 को साहिबाबाद में हो गया।

***

* श्री शिशिर चतुर्वेदी,करुणेश जी पुत्र स्व. मुरलीधर चतुर्वेदी (मैनपुरी) का स्वर्गवास दिनाँक 17 जनवरी 2024 को हो गया।

***

* श्रीमती प्रथमा पाण्डेय पत्नी श्री अशोक पाण्डेय (पुरा कन्हैरा) का स्वर्गवास दिनांक 16/01/24 को आगरा में हो गया।

* गोलू पुत्र प्रभात चतुर्वेदी (होलीपुरा) का लगभग 25 वर्ष की अल्पायु में आकस्मिक स्वर्गवास गुड़गांव में हो गया।

***

* श्री नितिन पाठक (आगरा) की पत्नी अनीता का स्वर्गवास दिनाँक 23 जनवरी 2024 को गाजियाबाद में हो गया।

महासभा एवं चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

गौरवमयी माँ को शत् - शत् प्रणाम

श्रीमती लक्ष्मी चतुर्वेदी का व्यक्तित्व अदम्य साहस और पराक्रम से ओजस्वी था। आपने कठिन परिस्थितियों का हल कर अपने जीवन को सुखद, सृमद्ध व ऐश्वर्यवान बनाया। आपने परिवार में तथा समाज में अपना उत्तम स्थान बनाया।

आप स्व. श्री फतेहबहादुर शर्मा की सुपुत्री थी तथा आपका विवाह अभियन्ता स्व. शिव प्रकाश चतुर्वेदी से हुआ था। आप इण्डियन ऑयल कम्पनी की डीलर शिप चलाती था। विस्तृत कार्यभार संभालती थी। आप असाधारण प्रतिभाओं की धनी थी। रसोई बनाना, सिलाई, बूनायी व विशेषकर कढ़ाई में आति निपुण थी। सदैव अपने काढ़े हुये वस्त्र धारण करती थी। आपकी शक्ति, शॉति व सौंदर्य मंत्र मुग्ध करता था।

दिनांक 21 नवम्बर 2023 को आपने सभी नियमित कार्य किये और संध्या 4 बजे सारे परिवार के सामने जैसे स्वेच्छा से ऑखे मूंद कर समाधी ले लीं। इस प्रकार एक युग का अन्त हो गया।

(र.क्र. 2024/2106)

**हम सभी आपके श्री चरणों को प्रणाम अर्पित करते है
व आपकी विरासत को सदैव सहेज कर रखेंगे।**

**श्रीमती ममता (जिठानी)
श्रीमती ममता (देवरानी)
श्री योगेन्द्र नाथ चतुर्वेदी (ननदोई)
श्रीमती रति, श्रीमती कामिनी (बहनें)
पीयूष – मानवी, दिलीप (भईयाजी)
नीरज – प्रीती, सी.ए. राजीव – अन्जू, विनय (पी.टी.आई.) – अलका,
धीरज – मानसी, मधुर – अल्पा (भतीजें – बहुयें)
श्रीमती विनीता, बीना – विमल, दीपा – नवीन, रंजना, अनीता – हेमंत,
सविता – भारतेन्दु, कविता – संजय, तनूजा – पीयूष, मधुरिमा – हृदेश,
एकता – संजय (भतीजी – दामाद)
शालिनी (भानजी)
सौरभ – अनीता (भानजा – बहू)
रूपय –आयूष कान्त चतुर्वेदी (पुत्री – दामाद)
श्रीमती शुभ्रा (गुड़गांव) पुत्री तुल्य, प्रत्यूष कांत चतुर्वेदी (धेवता)**

प्रतिष्ठान

कान्त ऑटो
कान्त एण्ड कम्पनी
शिवम् ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज
आर. पी. गोयल एण्ड कम्पनी
अनमोल एण्टरप्राईजेस
फ्रैण्डस् फ्यूल पॉइन्ट
आगरा एवं फिरोजाबाद
मो. 9837054650,9837038623

(र.क्र. 2024/2106)

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

अध्यक्ष
डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
फ्लेट नं. 4/2,एम.एस. फ्लेट्स,
शाहजहां रोड, नई दिल्ली–110011
मो. 9873395001

कोषाध्यक्ष
महेश चन्द्र चतुर्वेदी
आर–76बी, दिलशाद गार्डन,
नई दिल्ली – 110095
मो. 09868875645

महासचिव
मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी
ई–103, विवेक विहार, AWHO
सेक्टर 82, नोयड़ा (उ.प्र.) 201304
मो. 9871170559

संरक्षक
डॉ. सतीश चतुर्वेदी, मुंबई
पूर्व केबिनेट मंत्री, महा.
श्री भरत चतुर्वेदी
भोपाल (पूर्व सभापति)
श्री राजेन्द्र आर. चतुर्वेदी
मुंबई (पूर्व सभापति)
ले.जन. विष्णुकांत चतुर्वेदी
नोयड़ा (उ.प्र.)
श्री कमलेश चंद पाण्डे
रि. ई.पी.एफ. आयुक्त, नोएड़ा
श्री मदन चतुर्वेदी
रि. जज, कोलकाता
श्री वी.के. चतुर्वेदी, नोएड़ा
रि.केबिनेट सचिव, भारत सरकार
श्री विकास चतुर्वेदी
कानपुर

उपाध्यक्ष
श्री कैलाश चंद्र चतुर्वेदी
कासगंज
श्री मनोज चतुर्वेदी
बैंगलुरू
श्री विनोद चतुर्वेदी
मुम्बई

संयुक्त सचिव
श्री भरत चतुर्वेदी
रिषड़ा (प.बं.)
श्री ज्ञानेन्द्र चतुर्वेदी
गाजियाबाद
श्री आशुतोष चतुर्वेदी
कानपुर
श्री अंशुमान चतुर्वेदी
जयपुर

Election for the post of President, Shri Mathur Chaturvedi Mahasabha 2024

Election Result Sheet

Ballot counting for the election for the post of the President of Shri Mathur Chaturvedi was held at Shri Mathur Chaturvedi Mahasabha, Office 405-406, Chiranjeev Tower, Nehru Place, New Delhi on 28th January, 2024.

A. Position of Votes :

1. Total number of votes received (valid and invalid votes):
2. Total number of valid votes : 1579
3. Total number of invalid votes : 12
4. Total number of returned votes : 742
5. Late receipt votes: 15

B. Position of votes received in favours of each candidates

Name of candidate	Number of Votes
Usha Chaturvedi	1143
Sumant Chaturvedi	436

कार्यालय : 405–406, चिरंजीव टॉवर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली – 110019

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

अध्यक्ष
डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
फ्लेट नं. 4/2,एम.एस. फ्लेट्स,
शाहजहां रोड, नई दिल्ली–110011
मो. 9873395001

कोषाध्यक्ष
महेश चन्द्र चतुर्वेदी
आर–76बी, दिलशाद गार्डन,
नई दिल्ली – 110095
मो. 09868875645

महासचिव
मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी
ई–103, विवेक विहार, AWHO
सेक्टर 82, नोयड़ा (उ.प्र.) 201304
मो. 9871170559

संरक्षक
डॉ. सतीश चतुर्वेदी, मुंबई
पूर्व केबिनेट मंत्री, महा.
श्री भरत चतुर्वेदी
भोपाल (पूर्व सभापति)
श्री राजेन्द्र आर. चतुर्वेदी
मुंबई (पूर्व सभापति)
ले.जन. विष्णुकांत चतुर्वेदी
नोयड़ा (उ.प्र.)
श्री कमलेश चंद पाण्डे
रि. ई.पी.एफ. आयुक्त, नोएड़ा
श्री मदन चतुर्वेदी
रि. जज, कोलकाता
श्री वी.के. चतुर्वेदी, नोएड़ा
रि.केबिनेट सचिव, भारत सरकार
श्री विकास चतुर्वेदी
कानपुर

उपाध्यक्ष
श्री कैलाश चंद्र चतुर्वेदी
कासगंज
श्री मनोज चतुर्वेदी
बैंगलुरू
श्री विनोद चतुर्वेदी
मुम्बई

संयुक्त सचिव
श्री भरत चतुर्वेदी
रिषड़ा (प.बं.)
श्री ज्ञानेन्द्र चतुर्वेदी
गाजियाबाद
श्री आशुतोष चतुर्वेदी
कानपुर
श्री अंशुमान चतुर्वेदी
जयपुर

Smt. Usha Chaturvedi has won the election for the post of President of Shri Mathur Chaturvedi Mahasabha 2024 by the margin of ...707......... (Seven hundred seven only) from his rival Shri Sumant Chaturvedi.

Dr. Satish Chaturvedi Sanrakshak, Member Election Committee	
Dr. Pradeep Chaturvedi President Member Election Committee	**Munindra Nath Chaturvedi** Secretary Member Election Committee
Mahesh Chaturvedi Treasurer Member Election Committee	27-01-24 **Gopal Krishna Chaturvedi** Convener Member Election Committee

कार्यालय : 405–406, चिरंजीव टॉवर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली – 110019

R.N.I. NO. MAR/2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2024–26
''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' फरवरी 2024

पत्र व्यवहार का पता– ''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' ई–8/जी–2/255,
गुलमोहर कॉलोनी, अरेरा कॉलोनी, भोपाल–39,
ईमेल –sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com

नवनिर्वाचित सभापति श्रीमती उषा चतुर्वेदी